माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
FAIZAN E MADINA

नया इस्लामी साल
1446 हिजरी
मुबारक हो !

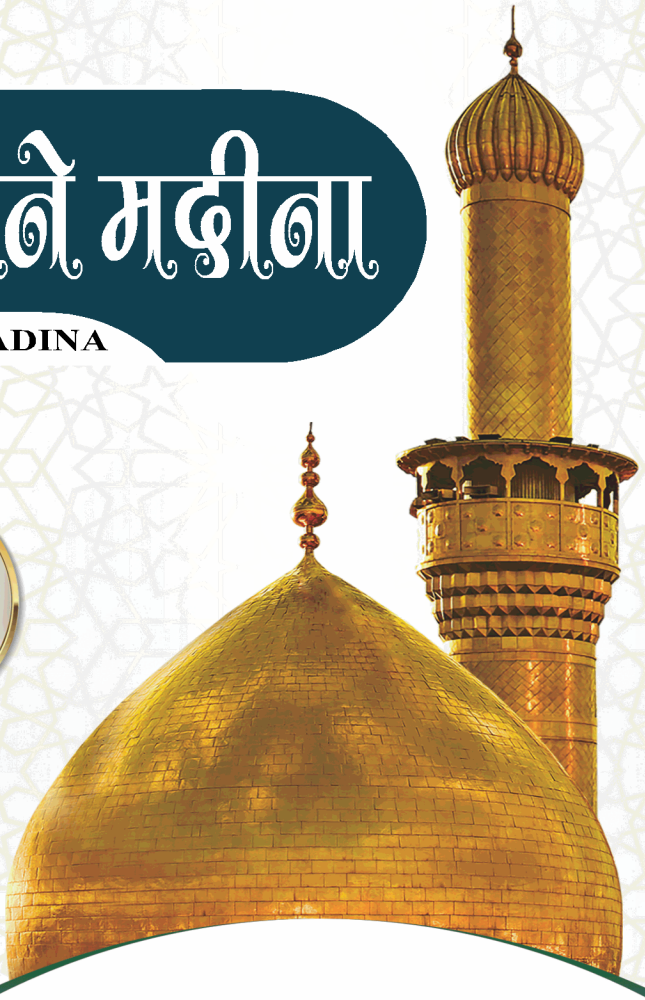

मुह़र्रमुल ह़राम

- मख़्लूक़ाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र की दावत 6
- माहे मुह़र्रम की ख़ैरात व ह़सनात 24
- अपनी ग़लती मान लीजिए 27
- फ़ारूक़े आज़म उम्मत के निगेहबान 36
- ह़ज़रते इमामे हुसैन का ख़ुत्बए मैदाने करबला 43
- बेटियों को सलीक़ा मन्दी सिखाएं 53

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ
जो शरीअ़त और त़रीक़त को अलग अलग कहे हमें उस से अलग रहना है।

एक जुम्आ से दूसरे जुम्ए तक हिफ़ाज़त

जो शख़्स जुम्आ के बाद सूरए फ़ातिहा, सूरए इख़्लास और सूरए फ़लक़ व नास सात सात बार पढ़ ले तो अगले जुम्ए तक उस की हिफ़ाज़त की जाएगी।

हज़रते सय्यिदुना वकीअ़ رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि हम ने इस का तजरिबा किया और इसी तरह़ पाया।

(شعب الایمان، 2/518، حدیث: 2577- فضائل القرآن لابن الضریس، 1/123، رقم: 290)

घर से जिन्न भगाने का रूहानी इलाज

अगर किसी घर में जिन्न रहता हो और परेशान करता हो तो सूरए फ़ातिहा और आयतुल कुर्सी और सूरए जिन्न की इब्तिदाई पांच आयतें पढ़ कर और पानी पर दम कर के मकान के अत़राफ़ व जवानिब में छिड़क दें, जिन्न मकान में से चला जाएगा और اِن شآءَ اللہ फिर नहीं आएगा।

(जन्नती ज़ेवर, स. 587)

सूजन का रूहानी इलाज

अगर बदन पर कहीं वरम यानी सूजन हो गई हो तो لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ 67 बार लिख (या लिखवा) कर अपने पास रखिए या तावीज़ बना कर पहन लीजिए, اِن شآءَ اللہ वरम दूर हो जाएगा। (बीमार आ़बिद, स. 37)

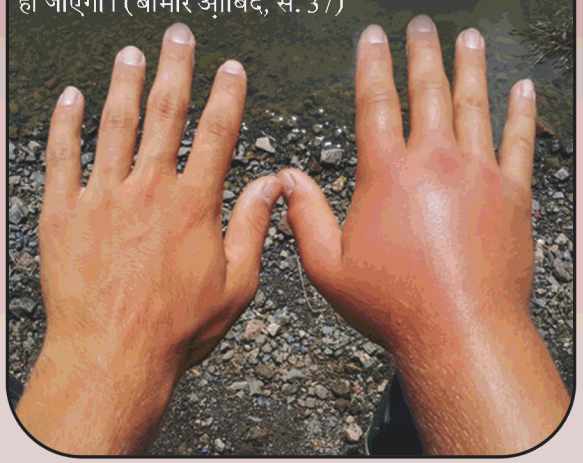

जिन्नात की शरारतों से हिफ़ाज़त

अगर किसी के साथ जिन्नात की शरारतें हों, जिन्नात आप को तंग करते हों, चीज़ें उठा कर ले जाते हों, ग़ाइब कर देते हों, कपड़े फट जाते हों, सामान के नुक़्सानात का सामना हो, जिस्म भारी हो रहा हो, सीने पर दबाव या कंधों पर वज़्न महसूस होता हो, नीन्द उड़ चुकी हो, डरावने ख़्वाब दिखाई देते हों या ख़्वाब में सांप बिच्छू, छिपकलियां नज़र आएं या बुरे ख़्वाब या घर में ख़ून के छींटे नज़र आते हों तो आप सूरतुल बक़रह की तिलावत कीजिए और अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ़ कीजिए। जिस घर में इस की तिलावत की जाए वहां से शरीर जिन्नात भाग जाते और इस त़रह़ की अ़लामात भी ख़त्म हो जाती हैं।

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER
HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI
BUTVALA'S CHAWL,
NR. CENTRAL WARE HOUSE,
DANILIMDA, AHMEDABAD-380028.
(GUJARAT)

PLACE OF PRINTING
MODERN ART PRINTERS
OPP : PATEL TEA STALL,
DABGARWAD NAKA,
DARIYAPUR, AHMEDABAD-380001.

bookmahnama@gmail.com

कुरआनो हदीस — हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को याद करो (दूसरी और आख़िरी क़िस्त) 3
मख़्लूक़ाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र की दावत 6 — रूह मुअ़ल्लक़ रहती है 9
फ़ैज़ाने सीरत — देहात वालों के सुवालात और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात 11
रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ैदियों के साथ अन्दाज़ 13 — हज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام (क़िस्त : 03) 15
फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत — बे वुज़ू अज़ान कहना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 18
दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत — 9,10 मुहर्रमुल हराम को पानी की सबील लगाना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 20
मज़ामीन — काम की बातें 22
माहे मुहर्रम की ख़ैरात व हसनात 24 — अपनी ग़लती मान लीजिए 27
हिफ़्ज़े मरातिब का ख़याल कीजिए (दूसरी और आख़िरी क़िस्त) 29 — जहन्नम से दूर करवाने वाली नेकियां (दूसरी और आख़िरी क़िस्त) 32
ताजिरों के लिए — अहकामे तिजारत 34
बुज़ुर्गाने दीन की सीरत — फ़ारूक़े आज़म उम्मत के निगेहबान 36
हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا 38 — अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए ! 39
सेहत व तन्दुरुस्ती — रसूलुल्लाह की ग़िज़ाएं (सत्तू) 40
मुतफ़र्रिक़ — हज़रते इमामे हुसैन का ख़ुत्बए मैदाने करबला 42
क़ारिईन के सफ़हात — नए लिखारी 44
बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" — मुसाफ़हे की सुन्नत / हुरूफ़ मिलाइए ! 47
खजूर के दरख़्त साल भर में फलदार 48 — वालिदैन के काम 49
दोस्ती का दिन 50 — बच्चों के इस्लामी नाम 51
इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
बेटियों को सलीक़ा मन्दी सिखाएं 52 — इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 53

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को याद करो

तब्लीग़े ह़क़ में आज़माइशों का मुक़ाबला

दावते तौह़ीद और रद्दे शिर्क का अ़मली मुज़ाहरा करते हुए जब आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन के माबूदाने बातिला की बे बसी दिखाई तो क़ौम ने सुधरने की बजाए आप عَلَيْهِ السَّلَام को आग में जला देने का फ़ैसला किया, जिस के मुक़ाबले में आप عَلَيْهِ السَّلَام साबित क़दम रहे और ख़ुदा वन्दे करीम ने आप की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई । अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

﴿ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ(۶۸) قُلْنَا یٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ(۶۹) ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बोले : उन को जला दो और अपने ख़ुदाओं की मदद करो अगर तुम कुछ करने वाले हो । हम ने फ़रमाया : ऐ आग ! इब्राहीम पर ठन्डी और सलामती वाली हो जा । (پ17، الانبیآء:68، 69)

फिर राहे ख़ुदा में हिजरत भी की और अपने वत़न, अ़लाक़े और लोगों को ख़ुदा की ख़ातिर छोड़ दिया । कुरआने मजीद में है कि आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया :

﴿ وَ قَالَ اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ(۹۹) ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और इब्राहीम ने कहा : बेशक मैं अपने रब की त़रफ़ जाने वाला हूं, अब वोह मुझे राह दिखाएगा । (پ23، الصّٰفّٰت:99)

मह़ब्बते इलाही

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सीरते त़य्यिबा में मह़ब्बते इलाही का उ़न्सर बहुत ग़ालिब नज़र आता है कि मह़ब्बत के सुबूत की सब से बड़ी दलील मह़बूब की ख़ातिर हर शै को क़ुरबान कर देना है और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इस का अ़मली सुबूत दिया । **आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी जान क़ुरबानी के लिए पेश कर दी,** जैसा कि फ़रमाया गया :

﴿ قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَ انْصُرُوْۤا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِیْنَ(۶۸) قُلْنَا یٰنَارُ كُوْنِیْ بَرْدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ(۶۹) ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बोले : उन को जला दो और अपने ख़ुदाओं की मदद करो अगर तुम कुछ करने वाले हो । हम ने फ़रमाया : ऐ आग ! इब्राहीम पर ठन्डी और सलामती वाली हो जा । (پ17، الانبیآء:68، 69) **आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने इकलौते प्यारे बेटे को ख़ुदा की मह़ब्बत में क़ुरबानी के लिए पेश कर दिया,** चुनान्चे फ़रमाया :

﴿ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْیَ قَالَ یٰبُنَیَّ اِنِّیْۤ اَرٰى فِی الْمَنَامِ اَنِّیْۤ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ یٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِیْنَ(۱۰۲) ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : फिर जब वोह उस के साथ कोशिश

करने के क़ाबिल उ़म्र को पहुंच गया तो इब्राहीम ने कहा : ऐ मेरे बेटे ! मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं तुझे ज़ब्ह कर रहा हूं। अब तू देख कि तेरी क्या राए है ? बेटे ने कहा : ऐ मेरे बाप ! आप वोही करें जिस का आप को हुक्म दिया जा रहा है। اِنْ شَآءَاللہ अ़नक़रीब आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे। (پ23، الصّٰفّٰت:102) **फिर ख़ुदा की महब्बत में, ख़ुदा के हुक्म पर अपनी औलाद को बयाबान में छोड़ दिया,** चुनान्चे क़ुरआने मजीद में है :

﴿رَبَّنَاۤ اِنِّیْۤ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ بِوَادٍ غَیْرِ ذِیْ زَرْعٍ عِنْدَ بَیْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِیُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْـِٕدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِیْۤ اِلَیْهِمْ وَ ارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ یَشْكُرُوْنَ(۳۷)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ हमारे रब ! मैं ने अपनी कुछ औलाद को तेरे इ़ज़्ज़त वाले घर के पास एक ऐसी वादी में ठहराया है जिस में खेती नहीं होती। ऐ हमारे रब ! ताकि वोह नमाज़ क़ाइम रखें तो तू लोगों के दिल उन की त़रफ़ माइल कर दे और उन्हें फलों से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा ताकि वोह शुक्र गुज़ार हो जाएं। (پ13، ابراھیم:37)

बल्कि आप عَلَیْہِ السَّلَام ने अपनी पूरी ज़िन्दगी ही ख़ुदा की महब्बत में वक़्फ़ कर दी और ह़क़ीक़त में इस आयत के मिस्दाक़ बन गए।

﴿قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُكِیْ وَ مَحْیَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ(۱۶۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तुम फ़रमाओ, बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (پ8، الانعام:162) और फ़रमाया :

﴿وَ الَّذِیْۤ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓـَٔتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِ(۸۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोह जिस से मुझे उम्मीद है कि क़ियामत के दिन मेरी ख़त़ाएं बख़्श देगा। (پ19، الشعرآء:82) इस आयत से मालूम हुवा कि रब की बारगाह में उसी से उम्मीद रखना और उस की रिज़ा का त़ालिब रहना भी रब की महब्बत की निशानी है।

आज़माइशों में कामयाबी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से आने वाले हर इम्तिह़ान में कामयाब रहे ह़त्ता कि रब्बे करीम ने ख़ुद उन की कामयाबी का एलान फ़रमाया, चुनान्चे एक जगह फ़रमाया :

﴿وَاِذِ ابْتَلٰۤى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और याद करो जब इब्राहीम को उस के रब ने चन्द बातों के ज़रीए आज़माया तो उस ने उन्हें पूरा कर दिया। (پ1، البقرۃ:124) और एक जगह फ़रमाया : ﴿وَ اِبْرٰهِیْمَ الَّذِیْ وَفّٰۤى(۳۷)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और इब्राहीम के जिस ने (अह़काम को) पूरी त़रह़ अदा किया। (پ27، النجم:37) और एक जगह उन की तारीख़ी कामयाबी को यूं बयान फ़रमाया :

﴿فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَ تَلَّهٗ لِلْجَبِیْنِ(۱۰۳) وَ نَادَیْنٰهُ اَنْ یّٰۤاِبْرٰهِیْمُ(۱۰۴) قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْیَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ(۱۰۵) اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِیْنُ(۱۰۶) وَ فَدَیْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِیْمٍ(۱۰۷) وَ تَرَكْنَا عَلَیْهِ فِی الْاٰخِرِیْنَ(۱۰۸) سَلٰمٌ عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ(۱۰۹) كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ(۱۱۰) اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِیْنَ(۱۱۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : तो जब उन दोनों ने (हमारे हुक्म पर) गर्दन झुका दी और बाप ने बेटे को पेशानी के बल लिटाया (उस वक़्त का ह़ाल न पूछ)। और हम ने उसे निदा फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम ! बेशक तू ने ख़्वाब सच कर दिखाया हम नेकी करने वालों को ऐसा ही सिला देते हैं। बेशक येह ज़रूर खुली आज़माइश थी। और हम ने इस्माईल के फ़िदये में एक बड़ा ज़बीह़ा दे दिया। और हम ने बाद वालों में उस की तारीफ़ बाक़ी रखी। इब्राहीम पर सलाम हो। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही सिला देते हैं। बेशक वोह हमारे आला दर्जे के कामिल ईमान वाले बन्दों में से हैं। (پ23، الصّٰفّٰت:103تا111)

शुक्र

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की आ़दते शुक्र की गवाही अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद क़ुरआने मजीद में दी है, चुनान्चे फ़रमाया : ﴿شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : उस के एह़सानात पर शुक्र करने वाले। (پ14، النحل:121)

सब्रो ह़िल्म व शफ़्क़त अ़लल ख़ल्क़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के सब्र का इज़्हार तो आप के हर इम्तिह़ान से होता है और क़ौमे लूत़ से अ़ज़ाब मुअख़्ख़र करने पर इसरार की वजह से आप عَلَیْہِ السَّلَام के ह़िल्म

और मख़्लूक़ पर शफ़्क़त की गवाही भी क़ुरआने मजीद ने दी है, चुनान्चे फ़रमाया : ﴿اِنَّ اِبْرٰهِیْمَ لَحَلِیْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِیْبٌ (۷۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक इब्राहीम बड़े तह़म्मुल वाला, बहुत आहें भरने वाला, रुजूअ़ करने वाला है। (پ12، ھود:75)

रुजूअ़ इलल्लाह

हर मुआ़मले में ख़ुदा की त़रफ़ रुजूअ़ करना और बार बार अल्लाह करीम की त़रफ़ रुजूअ़ करना और उस के सामने आ़जिज़ी का इ़ज़्हार करते रहना और उस से दुआ़ करते रहना ख़ुदा के पसन्दीदा बन्दों के औसाफ़ में से है और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुरआने मजीद में मज़्कूर कसीर दुआ़एं इन तमाम उमूर की दलील हैं। आप ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ﴿وَ الَّذِیْۤ اَطْمَعُ اَنْ یَّغْفِرَ لِیْ خَطِیْٓـَٔتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِ (۸۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोह जिस से मुझे उम्मीद है कि क़ियामत के दिन मेरी ख़त़ाएं बख़्श देगा। (پ19، الشعرآء:82)

एक मक़ाम पर ख़ुदा की मेहरबानियों और उस के हुज़ूर तवज्जोह का यूं ज़िक्र फ़रमाया :

﴿الَّذِیْ خَلَقَنِیْ فَهُوَ یَهْدِیْنِ (۷۸) وَ الَّذِیْ هُوَ یُطْعِمُنِیْ وَ یَسْقِیْنِ (۷۹) وَ اِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ یَشْفِیْنِ (۸۰) وَ الَّذِیْ یُمِیْتُنِیْ ثُمَّ یُحْیِیْنِ (۸۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : जिस ने मुझे पैदा किया तो वोह मुझे हिदायत देता है। और वोह मुझे खिलाता और पिलाता है। और जब मैं बीमार होऊं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है। और वोह मुझे वफ़ात देगा फिर मुझे ज़िन्दा करेगा।

(پ19، الشعرآء:78تا81)

एक जगह सारी दुन्या से मुंह फेर कर रब की त़रफ़ रुजूअ़ का यूं ज़िक्र किया :

﴿اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّ مَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ (۷۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : मैं ने हर बात़िल से जुदा हो कर अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए और मैं मुशरिकों में से नहीं हूं। (پ7، الانعام:79) एक जगह फ़रमाया : ﴿اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ (۹۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक मैं अपने रब की त़रफ़ जाने वाला हूं, अब वोह मुझे राह दिखाएगा। (پ23، الصّٰفّٰت:99)

कामिलुल ईमान, बुलन्द हिम्मत, साबिरो शाकिर, ह़लीम व मुनीब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की ज़िन्दगी के चन्द गोशों पर कलाम किया गया। इन सब औसाफ़ को हमें अ़मलन अपनाने की ज़रूरत है, कि आप की ह़याते त़य्यिबा में हमारे लिए बेहतरीन रहनुमाई और नूरे हिदायत मौजूद है, अल्लाह तआ़ला ने आप की सीरती ख़ूबी को बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया : ﴿قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗ ۚ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक इब्राहीम और उस के साथियों में तुम्हारे लिए बेहतरीन पैरवी थी। (پ28، الممتحنة:4) आज हमें आप عَلَیْہِ السَّلَام की इत़ाअ़त करते हुए अपने वुजूद में ख़ुदा से मह़ब्बत, मख़्लूक़ पर शफ़्क़त, ख़ुदा की त़रफ़ कसरत से रुजूअ़, आज़्माइशों और तक्लीफ़ों पर सब्र, रिज़ाए इलाही की त़लब, हर ह़ाल में ह़क़ गोई और ईमाने कामिल से अपने दिल को मुनव्वर करने की ह़ाजत है। अल्लाह तआ़ला हमें ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का फ़ैज़ान नसीब फ़रमाए। आमीन

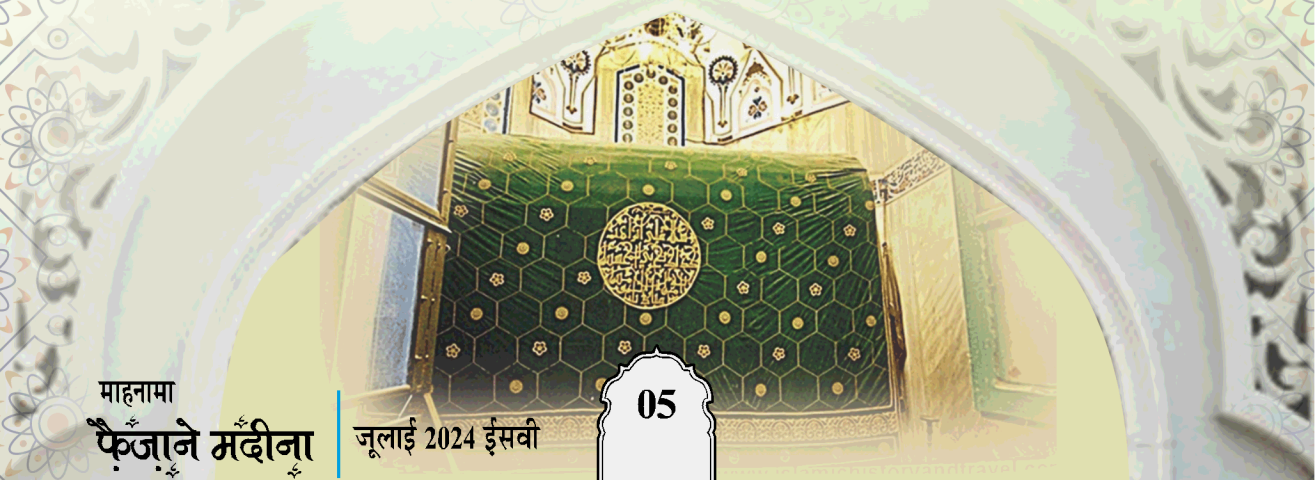

मख़्लूक़ाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र की दावत

किताबे हिदायत क़ुरआने मजीद, बुरहाने रशीद की दावते फ़िक्र व तदब्बुर के दाइरे में मख़्लूक़ाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र करना भी शामिल है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपनी तख़्लीक़ात में ग़ौरो फ़िक्र की मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ में दावत दी है और इस ग़ौरो फ़िक्र के मक़ासिद में अल्लाह तआ़ला के वुजूद, वह़दानिय्यत, शिर्क व हमसरी से पाकी और इख़्तियारात व क़ुदरते कामिला वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ यक़ीन व ईमान पुख़्ता रखना शामिल है।

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मख़्लूक़ में ग़ौरो फ़िक्र करने से ला मुह़ाला ख़ालिक़ और उस की अ़ज़मत व जलालत और क़ुदरत की मारिफ़त नसीब हो जाती है। फिर जैसे जैसे अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के पैदा कर्दा अ़जाइबात की मारिफ़त ज़ियादा होती रहेगी तो रब्बे करीम की अ़ज़मत व जलालत में तुम्हारी मारिफ़त भी कामिल होती रहेगी। मसलन तुम किसी आ़लिम के इल्म की मारिफ़त ह़ासिल हो जाने के बाद उसे अ़ज़ीम समझते हो और मुसलसल उस के अश्आ़र व तस्नीफ़ात में इन्तिहाई बारीक निकात पर मुत्त़लअ़ होते हो तो तुम्हें उस की मज़ीद मारिफ़त होती रहती है और तुम्हारे दिल में इस का एह़तिराम और इ़ज़्ज़त व ताज़ीम बढ़ता रहता है ह़त्ता कि उस के कलाम का हर कलिमा और उस के अश्आ़र का हर अ़जीब शेर तुम्हारे दिल में उस का मक़ाम ज़ियादा करते हुए तुम्हें उस की इ़ज़्ज़त व ताज़ीम की दावत देता है। इसी त़रह़ तुम अल्लाह करीम की मख़्लूक़ात में ग़ौर करो। काइनात में मौजूद अल्लाह की मख़्लूक़ात और उस में ग़ौरो फ़िक्र करने की कोई इन्तिहा नहीं। हर बन्दे के लिए इस में से उतना ही है जितना उस का नसीब है।[1]

जिस त़रह़ किसी की अ़ज़मत, क़ुदरत, ह़िक्मत और इल्म की मारिफ़त ह़ासिल करने का एक अहम ज़रीआ़ उस की बनाई हुई चीज़ होती है कि उस में ग़ौरो फ़िक्र करने से येह सब चीज़ें आश्कार हो जाती हैं इसी त़रह़ अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत, क़ुदरत, ह़िक्मत, वह़दानिय्यत और उस के इल्म की पहचान ह़ासिल करने का बहुत बड़ा ज़रीआ़ उस की पैदा की हुई येह काइनात है, उस में मौजूद तमाम चीज़ें अपने ख़ालिक़ की वह़दानिय्यत पर दलालत करने वाली और उस के जलाल व किब्रियाई की मुज़ह़िर हैं और उन में तफ़क्कुर और तदब्बुर करने से ख़ालिक़े काइनात की मारिफ़त ह़ासिल होती है येही वजह है कि क़ुरआने मजीद में ब कसरत मक़ामात पर इस काइनात में मौजूद मुख़्तलिफ़ चीज़ों जैसे इन्सानों की तख़्लीक़, ज़मीनो आस्मान की बनावट, ज़मीन की पैदावार, हवा और बारिश, समुन्दर में कश्तियों की रवानी, ज़बानों और रंगों के इख़्तिलाफ़ वग़ैरा बे शुमार अश्या में ग़ौरो फ़िक्र करने की दावत और तरग़ीब दी गई ताकि इन्सान इन में ग़ौरो

फ़िक्र के ज़रीए अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी को पहचाने, सिर्फ़ उसी की इबादत करे और उस के तमाम अहकाम पर अमल करे।[2]

इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : आस्मान अपने सितारों, सूरज, चान्द, उन की हरकत और तुलूअ़ व ग़ुरूब में उन की गर्दिश के साथ देखा जाता है। ज़मीन का मुशाहदा उस के पहाड़ों, मादनिय्यात, नहरों, दरियाओं, हैवानात, नबातात के साथ होता है और आस्मान और ज़मीन के दरमियान जो फ़ज़ा है उस का मुशाहदा बादल, बारिश, बर्फ़, गरज चमक, टूटने वाले सितारों, और तेज़ हवाओं के साथ किया जाता है। येह वोह अजनास हैं जो आस्मानों, जमीनों और उन के दरमियान देखी जाती हैं, फिर उन में से हर जिन्स की कई अन्वाअ़ हैं, हर नौअ़ की कई अक़्साम हैं, हर क़िस्म की कई शाखें हैं और सिफ़ात, हैअत और ज़ाहिरी व बातिनी मआनी के इख़्तिलाफ़ की वजह से उस की तक़्सीम का सिलसिला कहीं रुकता नहीं। ज़मीनो आस्मान के जमादात, नबातात, हैवानात, फ़ल्कियात में से एक ज़र्रा भी अल्लाह तआला के हरकत दिए बिग़ैर हरकत नहीं कर सकता और उन की हरकत में एक हिक्मत हो या दो, दस हों या हज़ार, येह सब अल्लाह तआला की वहदानिय्यत की गवाही देती हैं और उस के जलाल व किब्रियाई पर दलालत करती हैं और येही अल्लाह तआला की वहदानिय्यत व दलालत करने वाली निशानियां और अलामात हैं।[3]

काइनात पर ग़ौरो फ़िक्र के फ़वाइदो समरात

काइनात पर ग़ौरो फ़िक्र करने के बहुत से फ़वाइदो समरात हैं : बन्दे पर ख़ालिक़े काइनात की अ़ज़मतो शान मज़ीद वाज़ेह हो जाती है।

बन्दे का वहदानिय्यते इलाही पर यक़ीन मज़ीद मज़बूत हो जाता है। बन्दा अ़ज़मते इलाही के सामने आजिज़ी इख़्तियार करता है।

बन्दा जब ज़मीनो आस्मान, आफ़्ताबो माहताब, अश्जार व अहजार अल ग़रज़ किसी भी मख़्लूक़ की तख़्लीक़ में ग़ौरो फ़िक्र करता है तो दिल में ख़ालिक़ की ताज़ीम पैदा होती है।

ख़ालिक़े काइनात की अ़ज़मत व क़ुदरत की मारिफ़त हासिल होती है।

यूंही अल्लाह करीम की क़ुदरत व तख़्लीक़ की गहराइयां जानने पर दिल में उसी की ख़शिय्यत और हैबत बढ़ती है।

ख़ालिक़ो मालिक की महब्बत व ख़शिय्यत दिल में बढ़ने से मख़्लूक़ के साथ शफ़क़त व हुस्ने ख़ुल्क़ का जज़्बा मिलता है।

बन्दे का जब यक़ीन कामिल हो जाता है कि सब इख़्तियारात का मालिक वोही है तो फिर उस के इलावा किसी का डर और ख़ौफ़ नहीं रखता और हक़ को हक़ कहने और बातिल की तरदीद करने में रुकावट नहीं रहती।

मख़्लूक़ाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र करने से दिल ज़िन्दा होता है, क्यूंकि बन्दा जो ग़ौरो फ़िक्र करता है तो फिर एक ही मक़ाम पर रुका नहीं रहता बल्कि मख़्लूक़ात की मुख़्तलिफ़ अनवाअ़ में ग़ौर करता है, एक क़ुरआनी आयत से दूसरी की तरफ़ बढ़ता है, यूं क़ुरआनी आयात से नसीहत हासिल करता है, मआनी में ग़ौर करता है और जैसे जैसे येह ग़ौरो फ़िक्र बढ़ता है बन्दे के दिल पर मुरादे क़ुरआनी मुन्कशिफ़ होती जाती है, क्यूंकि क़ुरआनी अल्फ़ाज़ मआनी और तफ़क्कुर के पर्दे में हैं, जब ग़ौरो फ़िक्र के बाद येह पर्दा हटता है तो दिल की ग़फ़्लत भी ज़ाइल हो जाती है, इसी हयाते क़ल्बी को क़ुरआने करीम ने यूं बयान फ़रमाया है :

﴿وَ یَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ(۱۹۱)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में ग़ौर करते हैं ऐ रब हमारे तू ने येह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।[4]

मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र से बन्दे को अहकामे इलाहिय्या पर अमल का जज़्बा मिलता है। बन्दे की सोच और फ़िक्र जैसे जैसे बढ़ती है उस की कुव्वते फ़हम भी बढ़ती है, और जब फ़हम में इज़ाफ़ा होता है इल्म बढ़ता है और जब इल्म आता है तो बन्दा अमल करता है।

बन्दे का अक़ीदा मज़बूत होता है और किसी क़िस्म के शुब्हात का शिकार नहीं रहता।

अल्लाह करीम की महब्बत दिल में बढ़ती है और अल्लाह व रसूल की फ़रमां बरदारी का जज़्बा बढ़ता है।

इस्लामी तालीमात के ख़िलाफ़ दिल में पैदा होने वाले वसाविस का इस ग़ौरो फ़िक्र के ज़रीए ख़ातिमा हो जाता है।

येह ग़ौरो फ़िक्र करना शिर्क से और मुशरिकाना हरकात व एतिक़ादात से बचाने में ज़बरदस्त मुआविन साबित होता है।

फ़ी ज़माना मुसलमान अल्लाह तआला की बनाई हुई इस काइनात में ग़ौरो फ़िक्र करने और इस के ज़रीए अपने रब तआला के कमाल व जमाल और जलाल की मारिफ़त हासिल करने और उस के अह़काम की बजा आवरी करने से इन्तिहाई ग़फ़्लत का शिकार हैं और उन के इल्म की ह़द सिर्फ़ येह रह गई है जब भूक लगी तो खाना खा लिया, जब प्यास लगी तो पानी पी लिया, जब काम काज से थक गए तो सो कर आराम कर लिया, जब शहवत ने बेताब किया तो ह़लाल या ह़राम ज़रीए से उस की बेताबी को दूर कर लिया और जब किसी पर ग़ुस्सा आया तो उस से झगड़ा कर के ग़ुस्से को ठन्डा कर लिया अल ग़रज़ हर कोई अपने तन की आसानी में मस्त नज़र आ रहा है।[5]

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : अन्धा वोह ही है जो अल्लाह तआला की तमाम सनअ़तों को देखे लेकिन उन्हें पैदा करने वाले ख़ालिक़ की अ़ज़मत से मदहोश न हो और उस के जलाल व जमाल पर आ़शिक़ न हो। ऐसा बे अ़क़्ल इन्सान हैवानों की त़रह़ है जो फ़ित़रत के अ़जाइबात और अपने जिस्म में ग़ौरो फ़िक्र न करे, अल्लाह तआला की अ़त़ा कर्दा अ़क़्ल जो तमाम नेमतों से बढ़ कर है उसे ज़ाएअ़ कर दे और उस से ज़ियादा इल्म न रखे कि जब भूक लगे तो खाना खा लिया, किसी पर ग़ुस्सा आए तो झगड़ा कर लिया।[6]

(1)احیاء العلوم، 5/190 (2)صراط الجنان، 2 / 123 (3)احیاء العلوم، 5/175 (4)پ4، ال عمران، الآیۃ:191 (5)صراط الجنان، 2 / 123، 124 (6)کیمیائے سعادت، 2/910۔

रूह़ मुअ़ल्लक़ रहती है

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : نَفْسُ الْمُؤْمِنِ مُعَلَّقَةٌ بِدَيْنِهِ حَتّٰى يُقْضٰى عَنْهُ तर्जमा : मोमिन की रूह़ क़र्ज़ की वजह से मुअ़ल्लक़ (यानी लटकी) रहती है यहां तक कि उस की त़रफ़ से क़र्ज़ अदा कर दिया जाए।[1]

शर्हे ह़दीस (मोमिन की रूह़) या तो फ़िलह़ाल जन्नत में दाख़िल होने या नेकों के साथ मिलने या दरजात ह़ासिल करने से रोकी जाती है। अदाए क़र्ज़ की मुन्तज़िर रहती है या क़ियामत में क़र्ज़ की अदा तक जन्नत में जाने से रोकी जाएगी जब तक कि क़र्ज़ की मुआ़फ़ी या कोई और सूरत न हो जाए, कितनी ही सालेह़ नेक हो जन्नत में दाख़िल न हो सकेगी।

कौन सा क़र्ज़ मुराद है ?

यहां क़र्ज़ से वोह क़र्ज़ मुराद है जो इन्सान बिग़ैर ज़रूरत के ले ले और अदा करने में बिला वजह टाल मटोल करे और मरते वक़्त अदा के लिए माल न छोड़े।

अगर इन तीन शर्तों में से एक शर्त़ भी न हो तो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि उसे मह़बूस न करेगा (यानी जन्नत में जाने से न रोकेगा), जैसा कि दूसरी अह़ादीस में है। चुनान्चे इब्ने माजा में है कि क़ियामत में क़र्ज़ ख़्वाह को मक़रूज़ से क़िसास दिलवाया जाएगा सिवाए तीन मक़रूज़ों के : एक वोह जो जंग वग़ैरा दीनी ज़रूरिय्यात के लिए क़र्ज़ ले। दूसरे वोह जिस के हां बे कफ़न मय्यित पड़ी हो उस के कफ़न दफ़न के लिए क़र्ज़ ले। तीसरे वोह जो अपने दीन पर ख़त़रा मह़सूस करे और निकाह़ के ज़रूरी व जाइज़ ख़र्च के लिए क़र्ज़ ले, उन के क़र्ज़ रब तआ़ला क़र्ज़ ख़्वाहों से मुआ़फ़ करा देगा।[2]

इस दुन्या में इन्सान को अपने कई मुआ़मलात में दूसरों की ज़रूरत पड़ती है क्यूंकि इन्सान अपने मसाइल वसाइल के ज़रीए ही ह़ल कर सकता है। क़र्ज़ का लेन देन भी इस में शामिल है। लेकिन अफ़्सोस कि जब क़र्ज़ लौटाने की बारी आती है तो कई लोग बहुत ना मुनासिब रवय्ये इख़्तियार करते हैं। क़र्ज़ ले कर वापस करने वाले बुन्यादी त़ौर पर तीन त़रह़ के लोग होते हैं :

1 एक वोह जो बड़ी ख़ुश उस्लूबी से वादे के मुत़ाबिक़ क़र्ज़ लौटा देते हैं।

2 दूसरे वोह जो बहाने बाज़ियां कर के इतना टालते हैं कि बेचारा तंग पड़ जाता है फिर ऐसा भी होता है कि वोह अपनी रक़म की वापसी से मायूस हो कर मुत़ालबा ही छोड़ देता है।

3 तीसरे वोह जिन पर सख़्ती की जाए या वुसूल करने वाला तगड़ा शख़्स हो तो ही क़र्ज़ वापस करते हैं।

बहर ह़ाल क़र्ज़ ले कर वापस न करने से झगड़े बढ़ते हैं, भरोसा उठ जाता है। नीज़ जान बूझ कर क़र्ज़ वापस न करने वालों के लिए आख़िरत में आज़माइश हो सकती है, जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस आदमी ने वापस न करने के इरादे से क़र्ज़ लिया तो उस ने धोका किया यहां तक कि उस का माल ले

कर मर गया और उस का क़र्ज़ अदा न किया तो वोह अल्लाह से चोर बन कर मिलेगा।[3]

एक और हदीसे पाक में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर कोई आदमी अल्लाह पाक की राह में क़त्ल किया जाए फिर ज़िन्दा हो फिर अल्लाह पाक की राह में क़त्ल किया जाए फिर ज़िन्दा हो और उस के ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो वोह जन्नत में दाख़िल न होगा यहां तक कि उस का क़र्ज़ अदा कर दिया जाए।"[4]

अगर क़र्ज़ लेने में निय्यत अच्छी हो !

अल्लाह की रहमत के क्या कहने ! अगर बन्दए मोमिन की क़र्ज़ लेते वक़्त निय्यत अच्छी हो और वोह अपनी निय्यत व इरादे पर क़ाइम रहे लेकिन क़र्ज़ अदा न कर पाए तो अल्लाह करीम उस के हक़ में ख़ैर का मुआमला फ़रमाएगा जैसा कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : अल्लाह पाक क़ियामत के दिन क़र्ज़ लेने वाले को बुलाएगा यहां तक कि बन्दा उस के सामने खड़ा होगा तो उस से कहा जाएगा : ऐ इब्ने आदम ! तू ने येह क़र्ज़ क्यूं लिया ? और लोगों के हुक़ूक़ क्यूं ज़ाएअ किए ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ रब्बे करीम ! तू जानता है कि मैं ने क़र्ज़ लिया मगर न उसे खाया, न पिया, न पहना, और न ही ज़ाएअ किया, अलबत्ता वोह या तो जल गया या चोरी हो गया या जितने में ख़रीदा था उस से कम में बेच दिया तो अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाएगा : मेरे बन्दे ने सच कहा, मैं इस बात का ज़ियादा हक़ रखता हूं कि तेरी तरफ़ से क़र्ज़ अदा करूं। अल्लाह पाक किसी चीज़ को बुलाएगा और उसे उस के तराज़ू में रखेगा लिहाज़ा उस की नेकियां बुराइयों से ज़ियादा हो जाएंगी और वोह अल्लाह पाक के फ़ज़्लो रहमत से जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।[5]

करने का काम

मोहतरम क़ारिईन ! क़र्ज़ बहुत बड़ा बोझ है जो लोग अदाए क़र्ज़ में टाल मटोल करते हैं उन को डर जाना चाहिए और क़र्ज़ ख़्वाह (यानी जिस से क़र्ज़ लिया है उस) को अपने पास धक्के खिलाने के बजाए ख़ुद उस के पास जा कर शुक्रिया के साथ उस का क़र्ज़ अदा कर देना चाहिए। आज तक जिस से जितना क़र्ज़ लिया है, थोड़ा या ज़ियादा ! क़र्ज़ वुसूल करने वाला बेबस हो कर मुतालबा करना छोड़ चुका हो तो भी हिसाब लगा कर क़र्ज़ अदा कर के अपना खाता क्लीयर कर लीजिए, कहीं ऐसा न हो कि झूट मूट आज कल करते हुए मौत आ जाए और क़ब्र में जान फंस जाए।

मय्यित के क़र्ज़ का एलान

कोई मुसलमान मक़रूज़ फ़ौत हो जाए तो अ़ज़ीज़ों को चाहिए कि फ़ौरन उस का क़र्ज़ा अदा कर दें ताकि मर्हूम के लिए क़ब्र में आसानी हो।

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक एलान तरतीब दिया है, हस्बे मौक़अ़ नमाज़े जनाज़ा के वक़्त या ईसाले सवाब की महफ़िल में किया जा सकता है :

मर्हूम के अ़ज़ीज़ व अहबाब तवज्जोह फ़रमाएं !

मर्हूम ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या हक़ तलफ़ी की हो या आप के मक़रूज़ हों तो उन को रिज़ाए इलाही के लिए मुआफ़ कर दीजिए, اِنْ شَآءَ الله मर्हूम का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा।[6]

अल्लाह करे कि हमें कभी क़र्ज़ लेने की नौबत न आए और किसी सूरत में आ भी जाए तो उसे वापस करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)ترمذی، 2/341، حدیث:1080 (2)مراٰۃ المناجیح، 4/299 ملتقطاً (3)معجم اوسط، 1/501، حدیث:1851 (4)مسند احمد 8/348، حدیث:22556
(5)مسند احمد، 1/420، حدیث:1708 (6)نماز جنازہ کا طریقہ، ص19۔

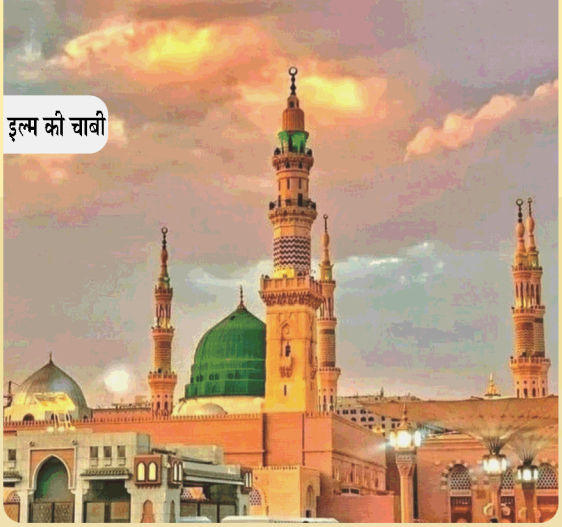

(आठवीं और आख़िरी क़िस्त़)

देहात वालों के सुवालात और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात

मक्कए पाक और मदीना शरीफ़ के आस पास छोटी छोटी आबादियां, मुख़्तलिफ़ क़बीले, गांव और देहात आबाद थे, उन में से कुछ दूर और कुछ बहुत दूर की मसाफ़त पर वाक़ेअ़ थे । उन में रहने वाले सादा लौह़ मुसलमान हमारे प्यारे नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर होते, अपनी मुश्किलात, मसाइल और उल्झनें सुल्झाने के लिए आप से सुवालात करते, उन में से 25 सुवालात और उन के जवाबात सात क़िस्त़ों में बायन किए जा चुके, यहां मज़ीद चार सुवालात और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जवाबात ज़िक्र किए गए हैं :

क्या आप अपने बच्चों को चूमते हैं ? उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : قَدِمَ نَاسٌ مِّنَ الْاَعْرَابِ عَلٰى رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم यानी देहात के रहने वाले कुछ लोग रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और सुवाल किया : اَتُقَبِّلُوْنَ صِبْيَانَكُمْ क्या आप अपने बच्चों को चुमते हैं ? हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : نَعَمْ! जी हां ! वोह देहाती बोले : لٰكِنَّا وَاللهِ مَا نُقَبِّلُ लेकिन अल्लाह की क़सम ! हम तो अपने बच्चों को नहीं चूमते । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : وَاَمْلِكُ اِنْ كَانَ اللهُ نَزَعَ مِنْكُمُ الرَّحْمَةَ यानी अगर अल्लाह पाक ने तुम में से रह़मत निकाल दी है तो मैं क्या कर सकता हूं ।[1]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : तुम लोगों का अपने बच्चों को न चूमना इस लिए है कि रब तआ़ला ने तुम्हारे दिलों से रह़मो करम निकाल दिया है जिन के दिलों से अल्लाह रह़म निकाल दे उस के दिल में हम रह़मत व करम किस त़रह़ डालें हम तो अल्लाह की रह़मतों का दरवाज़ा हैं ।[2]

इस ख़्वाब की ताबीर क्या है ? एक बार रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक देहाती ह़ाज़िर हुवा ताकि अपना ख़्वाब बता कर उस की ताबीर मालूम कर सके चुनान्चे ह़ज़रते जाबिर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं : جَاءَ اَعْرَابِيٌّ اِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक देहाती आया और अपना ख़्वाब यूं बताया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! رَاَيْتُ فِى الْمَنَامِ كَاَنَّ رَاْسِى ضُرِبَ فَتَدَحْرَجَ فَاشْتَدَدْتُ عَلٰى اَثَرِهٖ मैं ने ख़्वाब में देखा है कि गोया मेरा सर काट दिया गया है और वोह लुढ़क्ता जा रहा है और मैं उस के पीछे पीछे चल रहा हूं। आराबी का ख़्वाब सुन कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुस्कुरा दिए और फ़रमाया : لَا تُحَدِّثِ النَّاسَ بِتَلَعُّبِ الشَّيْطَانِ بِكَ فِى مَنَامِكَ जब तुम में से किसी से शैत़ान ख़्वाब में खेले तो लोगों को उस की ख़बर न दो ।[3]

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : वोह साह़िब ख़्वाब से घबरा गए थे । मज़ीद फ़रमाते हैं : शायद हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वह़ी से मालूम फ़रमा लिया कि येह ख़्वाब अदग़ासे अह़लाम से है (यानी ऐसे ख़्वाब जिन की कोई ताबीर न हो) शैत़ान ने उसे मग़मूम करने के लिए येह ख़्वाब दिखाया है अगर येह ख़्वाब दुरुस्त हो तो उस की ताबीर होती है, तब्दीली ह़ाले मग़मूम देखे तो उसे ख़ुशी होगी, ख़ुशह़ाल देखे तो वोह बद ह़ाल हो जाएगा, ग़ुलाम देखे तो

आज़ाद हो जाएगा, मक़रूज़ देखे तो क़र्ज़ से आज़ाद हो जाएगा लिहाज़ा येह ह़दीस भी सह़ीह़ है और मुअ़ब्बिरीन की येह मज़कूरा ताबीरें भी दुरुस्त हैं।[4]

खाल काटने की इजाज़त क्यूं दी है ? ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक मरतबा मैं नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़जाम को बुलाया हुवा था, वोह अपने साथ सींग ले कर आया। उस ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सींग लगाया और नशतर से चीरा लगाया, इतने में बनू फ़ज़ारा का एक देहाती जिस का तअ़ल्लुक़ बनू ख़ुज़ैमा से था वोह भी आ पहूंचा। नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को जब उस ने सींगी लगवाते हुए देखा तो चूंकि उसे सींगी के बारे में इ़ल्म नहीं था इस लिए वोह कहने लगा : مَاهٰذَا يَا رَسُوْلَ اللّٰه या रसूलल्लाह ! येह क्या है ? आप ने इसे अपनी खाल काटने की इजाज़त क्यूं दे दी ? नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : هٰذَا الْحَجْمُ इसे ह़िजामा कहते हैं, उस ने पूछा : وَمَا الْحَجْمُ؟ ह़िजामा क्या चीज़ है ? नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : هُوَ مِنْ خَيْرِ مَا تَدَاوَى بِهِ النَّاسُ येह लोगों के त़रीक़ए इ़लाज में सब से बेहतर है।[5]

"ह़िजामा" अ़रबी का लफ़्ज़ है, इस का माना है पछने लगाना। जब कि ह़िजामा करने वाले को इंग्लिश में (Cupper) और ह़िजामे के अ़मल को (Cupping) कहते हैं।

ह़िजामा करवाना हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबित है, अह़ादीसे त़य्यिबा में ह़िजामे की तरग़ीब भी दी गई और इसे शिफ़ायाबी का सबब भी क़रार दिया गया है अलबत्ता हर इ़लाज के लिए इस के माहिर से मुशावरत करना ज़रूरी है क्यूंकि मुमकिन है कि जिस बीमारी के लिए ह़िजामा करवा रहे हों साथ में कोई दूसरी बीमारी उसी के लिए नुक़्सान देह हो।

नज़्र पूरी करने वाले कौन हैं ? वोह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जिन्हें किसी वजह से ग़ज़्वए बद्र में जंग का मौक़अ़ न मिल सका तो उन्हों ने येह अ़ह्द कर लिया कि अब अगर उन्हें नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर जान क़ुरबान करने की सआ़दत मिली तो वोह साबित क़दम रहेंगे और लड़ते रहेंगे यहां तक कि शहीद हो जाएं।

ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने एक आराबी यानी देहात के रहने वाले से कहा कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में सुवाल करो जिन के बारे में क़ुरआने करीम में आया है कि उन्हों ने अपनी नज़्र (मन्नत) पूरी कर दी।

जब उस आराबी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपनी नज़्र पूरी करने वाले सह़ाबए किराम के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई जवाब न दिया। उस ने दो तीन बार येही सुवाल किया मगर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई जवाब न दिया। ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि उसी दौरान मैं मस्जिद के दरवाज़े से दाख़िल हुवा। मैं ने उस वक़्त सब्ज़ रंग का लिबास पहना हुवा था, जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : أَيْنَ السَّائِلُ عَمَّنْ قَضٰى نَحْبَهُ वोह कहां है जिस ने नज़्र पूरी करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया था ? आराबी ने फ़ौरन अ़र्ज़ की : أَنَا، يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं यहीं हूं। तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह की त़रफ़ देख कर) फ़रमाया : هٰذَا مِمَّنْ قَضٰى نَحْبَهُ येह उन्ही लोगों में से है जिन्हों ने अपनी नज़्र (मन्नत) को पूरा किया।[6]

याद रहे ! इन अ़ह्द करने वालों में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी, त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, सईद बिन ज़ैद, अमीरे ह़म्ज़ा और मुस्अ़ब बिन उ़मैर رضوان اللہ علیہم اجمعین वग़ैरा भी शामिल हैं।

---

(1) مسلم، ص975، حدیث: 6027 (2) مراٰۃ المناجیح، 6/ 545 (3) مسلم، ص959، حدیث:5926 (4) مراٰۃ المناجیح، 6/392 (5) مسند احمد، 33/290، حدیث:20096 (6) ترمذی، 5/414، حدیث:3763 مختصراً۔

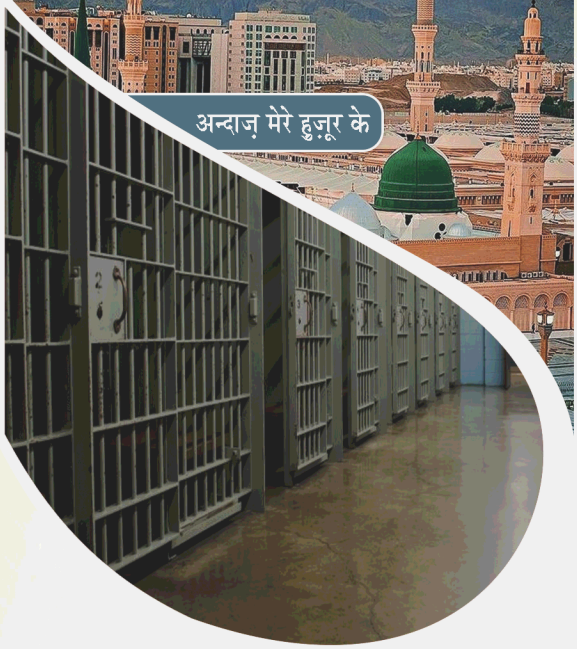

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم का क़ैदियों के साथ अन्दाज़

अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ लाने से पहले मख़्लूक़े ख़ुदा पर ज़ुल्मो बरबरिय्यत के पहाड़ तोड़े जाते थे उस वक़्त न तो जंगी अख़्लाक़िय्यात का कोई तसव्वुर था और न ही क़ैदियों के कोई हुक़ूक़ थे इस लिए क़ैदी दिल हिला देने वाली अज़िय्यतों और तक्लीफ़ों का सामना करते थे । रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने अन्दाज़ से दुन्या को येह बताया कि क़ैदी भी इन्सान हैं और इन के भी हुक़ूक़ हैं, आइए ! क़ैदियों के साथ अन्दाज़े मुस्तफ़ा की चन्द झल्कियां मुलाहज़ा करते हैं :

1 इस्लाम के दुश्मनों ने रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़्क़त व करम नवाज़ियां कई मरतबा देखी थीं वोह लोग तमाम तर अ़दावत व दुश्मनी रखने के बा वुजूद आप को करीम समझते थे चुनान्चे एक मौक़अ़ पर जब येह लोग क़ैदी बन कर आए तो रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से पूछा : तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा ? उन लोगों ने अ़र्ज़ की : خَیْرًا، أَخٌ کَرِیمٌ وَابْنُ أَخٍ کَرِیم यानी आप भलाई करेंगे क्यूंकि आप करम नवाज़ हैं और करम नवाज़ भाई के बेटे हैं । चुनान्चे रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन लोगों को आज़ाद कर दिया ।[1]

2 नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक फ़ौजी दस्ता क़बीलए नज्द की त़रफ़ रवाना फ़रमाया, ह़ज़रते समामा बिन उसाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ यमामा के सरदार थे और अभी तक ईमान नहीं लाए थे, येह दस्ता आप को गिरफ़्तार कर के मदीनए मुनव्वरा लाया और एक सुतून से बान्ध दिया । रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वहां से गुज़र हुवा तो आप ने इन से अपने बारे में राय ली तो आप ने अच्छी राय का इज़्हार करते हुए कहा : اِنْ تَقْتُلْ تَقْتُلْ ذَا دَمٍ، وَاِنْ تُنْعِمْ تُنْعِمْ عَلٰی شَاکِر यानी अगर आप जान से मार दें तो आप इस सज़ा के ह़क़दार को क़त्ल करेंगे, अगर (क़ैद से रिहा कर के) इन्आ़म करें तो आप एक शुक्रिया अदा करने वाले पर इन्आ़म करेंगे, अगर आप दौलत चाहते हैं तो वोह बता दें जितना आप चाहेंगे उतना आप को दिया जाएगा । रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को छोड़ दिया फिर अगले दिन तशरीफ़ ला कर येही पूछा, आप ने येही जवाब दिया, तीसरे दिन पूछने पर जब वोही जवाब दिया तो रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को क़ैद से रिहा कर दिया । दुन्या की क़ैद से तो आप आज़ाद हो गए मगर अन्दाज़े मुस्तफ़ा कुछ ऐसा भाया कि पहले ग़ुस्ल किया और फिर ईमान ला कर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़ुलामी में आ गए ।[2]

3 अल्लाह करीम इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ یُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِیْنًا وَّ یَتِیْمًا وَّ اَسِیْرًا(۸)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : और वोह अल्लाह की मह़ब्बत में मिस्कीन और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं ।[3]

इस आयत का एक माना येह है कि अल्लाह पाक के नेक बन्दे ऐसी ह़ालत में भी मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं जब कि ख़ुद उन्हें खाने की ह़ाजत और ख़्वाहिश होती है । दूसरा माना येह है कि

अल्लाह पाक के नेक बन्दे मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को अल्लाह पाक की महब्बत में और उस की रिज़ा हासिल करने के लिए खाना खिलाते हैं।[4]

बिलाशुबा रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को अपने फ़रामीन व किरदार के ज़रीए क़ुरआने पाक पर अमल करना सिखाया है उसी तरबियत में येह आयत भी शामिल है कि दर्सगाहे मुस्तफ़ा में बैठ कर इन हिदायत के सितारों ने यतीमों, मिस्कीनों और क़ैदियों के साथ हुस्ने सुलूक करने की तालीमो तरबियत हासिल की और मैदाने अमल में इस का अमली इज़्हार भी किया चुनान्चे जब जंगे बद्र में हज़रते मुस्अब बिन उमैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के भाई भी क़ैदी बने थे इस के बा वुजूद वोह ख़ुद अपने साथ किए जाने वाले हुस्ने सुलूक को यूं बयान करते हैं : मैं बद्र के दिन क़ैदियों में शामिल था, अल्लाह के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِسْتَوْصُوا بِالْاُسَارٰی خَیْرًا यानी क़ैदियों के साथ अच्छा सुलूक करो।" मैं अन्सार की हिरासत में एक गिरोह के साथ क़ैद था, अल्लाह उन को उम्दा बदला दे वोह जब भी सुब्हो शाम खाना खाते तो ख़ुद खजूर से काम चला लेते और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वसिय्यत की वजह से मुझे रोटी खिलाते। जिस के हाथ भी रोटी आती वोह मुझे ला कर दे देता। मुझे अकेले खाते हुए शर्म आती तो मैं वोह रोटी उसे वापस कर देता मगर वोह उसे हाथ भी न लगाता और मुझे ज़बरदस्ती दे देता।[5]

खजूर के मुक़ाबले में रोटी क़ीमती भी थी और कम भी थी, इस के बा वुजूद आप ने मुलाहज़ा किया कि बारगाहे रिसालत से की जाने वाली हुस्ने सुलूक की ताकीद में कितना असर था कि क़ीमती चीज़ क़ैदियों को दी जाती थी ताकि हुस्ने सुलूक किया जा सके।

4 क़ैदियों की आज़ादी के लिए मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ थे मसलन :

कभी फ़िदया ले कर उन्हें आज़ाद किया गया जैसे जो फ़िदये में माल नहीं दे सकते थे उन के लिए माल का मुतबादिल मुक़र्रर किया गया जैसे बद्र के वोह क़ैदी जो फ़िदये में माल नहीं दे सकते थे उन के लिए लिखना सिखाने को फ़िदया क़रार दे दिया गया।[6]

इसी तरह कई मवाक़ेअ ऐसे आए कि जिस में रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़िदया अदा फ़रमाया चुनान्चे ग़ज़्वए बनी मुस्तलक़ में मुसलमानों को फ़त्ह नसीब हुई और कई अफ़राद क़ैद हुए जिन में क़बीले के सरदार हारिस बिन ज़िरार की बेटी हज़रते जुवैरिया बिन्ते हारिस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी थीं, उन्हों ने क़ैद से आज़ाद हो कर अपने क़बीले जाने के बजाए रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निकाह में आने को तरजीह दी।

जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस निकाह की ख़बर दीगर मुसलमानों को हुई तो उन्हों ने हज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के क़बीले के सभी क़ैदियों को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सुसराली रिश्ते का एहतिराम करते हुए आज़ाद कर दिया, आप को जान कर हैरत होगी कि इन में सौ ख़ानदानों के अफ़राद को रिहाई नसीब हुई। इसी लिए हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا इसे बहुत ज़ियादा ख़ैरो बरकत वाला निकाह क़रार देते हुए फ़रमाती हैं : فَمَا رَاَیْنَا امْرَاَةً كَانَتْ اَعْظَمَ بَرَكَةً عَلٰی قَوْمِهَا مِنْهَا यानी क़ौम पर ख़ैरो बरकत लाने वाली कोई औरत हम ने हज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से बढ़ कर नहीं देखी।[7]

ऐसा भी हुवा कि फ़िदया लिए बिग़ैर क़ैदियों को आज़ाद कर दिया गया जैसा कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इरशाद पर क़बीलए हवाज़िन के क़ैदियों को बिला मुआवज़ा रिहाई नसीब हुई।[8] इसी तरह जंगे बद्र के मौक़अ पर कुछ क़ैदी वोह थे जिन को बिला मुआवज़ा आज़ादी मिली।[9]

आज भी हम क़ैदियों के साथ हुस्ने सुलूक के येह अन्दाज़ अपना लें तो जराइम रुक सकते हैं, अम्नो अमान में इज़ाफ़ा हो सकता है और अच्छे लोगों की तादाद तेज़ी के साथ बढ़ सकती है।

---

(1) سنن کبریٰ للبیہقی، 9/200، تحت الحدیث:18276 (2) بخاری، 3/131، حدیث: 4372، ابو داؤد، 3/77، حدیث: 2679 (3) پ29، الدھر: 8 (4) مدارک، الدھر، تحت الآیۃ: 8، ص1306 (5) معجم صغیر، 1/146-سیرت ابن ہشام، ص267 (6) طبقات لابن سعد، 2/16 (7) ابو داؤد، 4/30، حدیث: 3931- سیرت حلبیہ، 2/379 (8) بخاری، 3/111، حدیث:4318، 4319 (9) سیرت ابن ہشام، ص273۔

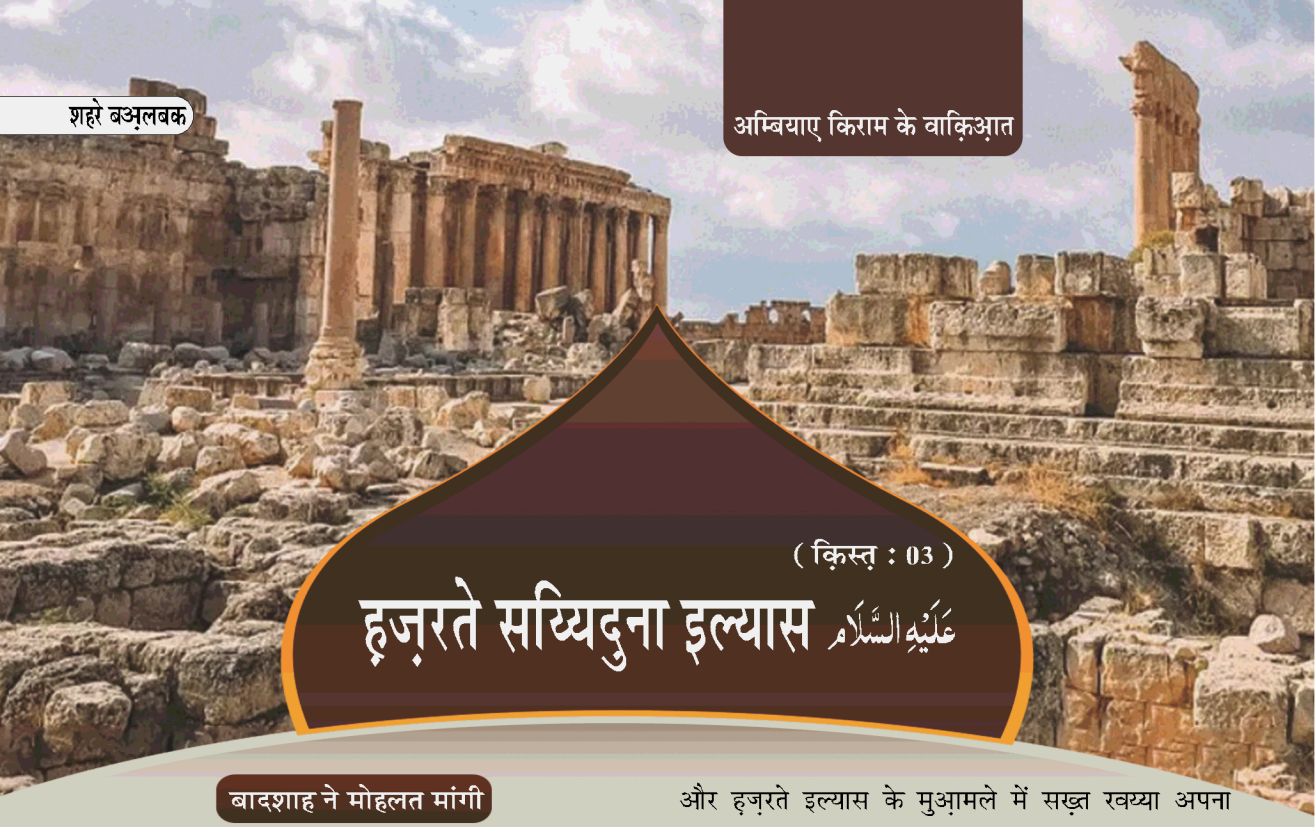

(क़िस्त : 03)

ह़ज़रते सय्यिदुना इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام

बादशाह ने मोहलत मांगी

बादशाहे आ़मील आप से कहने लगा : आप दलील तो ले आए हैं लेकिन आप हमें आज के दिन की मोहलत दे दें ताकि हम आप की दावते दीन को क़बूल करने में ग़ौरो फ़िक्र कर सकें, आप (येह कह कर) वापस चले आए कि अगले दिन फिर आऊंगा और दावते दीन दूंगा, आप के जाने के बाद बादशाह ने क़ौम के दूसरे बादशाहों और उ़लमा ए यहूद को जमअ़ किया और कहा : तुम लोग उस मर्द के बारे में क्या राय रखते हो ? उ़लमा ए यहूद कहने लगे : हम ने उस मर्द की सिफ़ात तौरैत में पाई हैं कि उन्हें नबी बना कर भेजा जाएगा और आग, पहाड़ और शेर उन के ताबेदार होंगे, और जो उन की आवाज़ सुनेगा वोह आ़जिज़ हो कर फ़रमां बरदार हो जाएगा ।[1]

बादशाह ने एतिबार न किया

बाज़ उ़लमा ए यहूद कहने लगे : ऐ बादशाह ! उन लोगों ने अपनी बातों में झूट बोला है, येह मर्द तो जादूगर है (مَعَاذَاللہ) तू उस के मुआ़मले में ख़ौफ़ ज़दा मत हो । बादशाह (के दिमाग़ में येह बात बैठ गई लिहाज़ा उस) ने सच बोलने वाले उ़लमाए यहूद को सख़्त सज़ा दी और ह़ज़रते इल्यास के मुआ़मले में सख़्त रवय्या अपना लिया ।[2]

बादशाहे आजाब की बद नसीबी

बादशाहे आजाब जो ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान ला चुका था उस ने भी आप عَلَيْهِ السَّلَام की मुख़ालिफ़त कर दी बादशाहे आजाब की बीवी ने कहा : ऐ बादशाह ! तू ईमान लाने के बाद सच्चे दीन से फिर चुका है लेकिन मैं ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام के दीन से नहीं फिरूंगी, फिर उस ने बादशाहे आजाब से अ़लाहिदगी इख़्तियार कर ली ।[3]

नूरानी सुतून

ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام ने महल के क़रीब एक साएबान बना लिया बादशाह आ़मील की मलिका भी नेक औ़रत थी अपने शौहर से छुप कर चुप चाप ह़ज़रते इल्यास के पास पहुंची और रात के वक़्त आप की निगरानी करने लगी, आप अल्लाह की इबादत में मसरूफ़ थे, अचानक मलिका ने एक नूरानी सुतून देखा जो साएबान से आस्मान तक ऊंचा था, येह देख कर मलिका आप عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान ले आई और आप के फ़रमां बरदारों में शामिल हो गई, बादशाह को मालूम हुवा तो उस ने मलिका को आग में डालने का हुक्म दिया, सिपाहियों ने मलिका को आग में

डाल दिया, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह पाक से दुआ की तो आग ने मलिका को कुछ नुक़्सान न पहुंचाया, आख़िरेकार बादशाह ने मलिका को आज़ाद कर दिया और मलिका अपने काफ़िर शौहर से अ़लाहिदा हो गई।[4]

बादशाहे आ़मील की ख़ुश नसीबी

फिर बादशाह का बेटा मर गया, बादशाह ख़ूब रोया धोया और अपने बातिल माबूद के पास जा कर फ़रियाद की लेकिन इस का कोई फ़ाइदा न हुवा (और बेटा ज़िन्दा न हुवा) येह देख उसे अपने बातिल माबूद पर ग़ुस्सा आ गया, फिर ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और कहने लगा : मेरा बेटा मर चुका है और मेरा ख़ुदा उसे ज़िन्दा नहीं कर सकता, क्या आप इस बात की त़ाक़त रखते हैं कि उसे ज़िन्दा कर दें ? आप ने फ़रमाया : येह मेरे रब पर आसान है, फिर आप ने अल्लाह से दुआ की तो लड़का येह कहते हुए ज़िन्दा हो गया कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام उस के बन्दे और रसूल हैं, येह देख कर बादशाह आप पर ईमान ले आया और बादशाहत को छोड़ छाड़ कर आप के पीछे चल पड़ा फिर उस ने सूफ़ (ऊन) का लिबास पहन लिया और अल्लाह पाक की इ़बादत में मसरूफ़ हो गया और मरते दम तक ईमान पर साबित क़दम रहा इस के बेटे और मलिका का भी इन्तिक़ाल हो गया। ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام क़ौम को दीने बरह़क़ की त़रफ़ बुलाते रहे लेकिन क़ौम ने दावते दीन क़बूल न की और अपनी गुमराही और कुफ़्र पर ही अड़ी रही।[5]

बनी इसराईल की क़ह़त़ साली

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام को वही फ़रमाई कि क़ौमे बनी इसराईल को दीन की दावत दें और अ़ज़ाबे इलाही से डराएं कि अगर ईमान न लाए तो अल्लाह बारिश को रोक देगा और उन्हें क़ह़त़ में मुब्तला कर देगा, आप ने क़ौम को दावते दीन दी मगर क़ौम ने कहा : हम न तो आप पर और न आप के रब पर ईमान लाएंगे जो करना चाहते हो कर लो। आख़िरेकार अल्लाह तआ़ला ने उन से बारिश रोक दी, चश्मों का पानी सूख गया और दरख़्त पर फल आना बन्द हो गए, जो कुछ पास था क़ौम ने वोह सब खा कर ख़त्म कर दिया फिर मवेशियों का गोश्त खाने लगे, फिर कुछ न मिला तो कुत्ते, बिल्ली और चूहे खाने लगे जब येह भी ख़त्म हो गए तो मरे हुए लोगों का गोश्त खाने लगे।[6]

परिन्दा गोश्त और खाना लाया

फिर अल्लाह ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वही फ़रमाई कि उन की त़रफ़ जाएं और दीने ह़क़ की दावत दें, ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام उन की बस्तियों की त़रफ़ बढ़े, सब से पहली बस्ती में पहुंचे तो एक बूढ़ी औ़रत के पास से गुज़र हुवा, आप ने उस से पूछा : क्या तुम्हारे पास खाना है ? उस ने झूटे ख़ुदा की क़सम खाते हुए कहा : मेरे ख़ुदा बअ़ल की क़सम ! एक अ़र्सा गुज़र गया है कि मैं ने रोटी नहीं गूंधी। आप ने फ़रमाया : तू अल्लाह पर ईमान क्यूं नहीं ले आती ? उस बूढ़ी औ़रत ने कहा : मेरा बेटा यसअ़ (ह़ज़रते) इल्यास के दीन पर है और मैं नहीं समझती कि उसे उस दीन पर ईमान लाने से कोई फ़ाइदा मिला हो, अब वोह भूक से मरने के क़रीब है, येह सुन कर आप ने बुलन्द आवाज़ से कहा : ऐ यसअ़ ! क्या तुम रोटी खाना पसन्द करोगे ? (घर के अन्दर से) यसअ़ ने एक चीख़ मारी : मेरे लिए रोटी कहां से आएगी ? येह कह कर यसअ़ का इन्तिक़ाल हो गया, बूढ़ी औ़रत रोने और अपने मुंह पर थप्पड़ मारने लगी,[7] आप ने उस बूढ़ी औ़रत से फ़रमाया : अगर अल्लाह पाक तुम्हारे बेटे को ज़िन्दा कर दे और तुम्हारा मन पसन्द खाना तुम को दे दे तो क्या तुम अल्लाह पर ईमान ले आओगी ? बूढ़ी औ़रत ने कहा : जी हां ! मैं अल्लाह पर ईमान ले आऊंगी, आप खड़े हो गए और दो रक्अ़त नमाज़ अदा की फिर अल्लाह करीम से दुआ की तो बूढ़ी औ़रत का बेटा ज़िन्दा हो गया और कलिमा पढ़ने लगा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और ह़ज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام उस के बन्दे और रसूल हैं, येह देख कर वोह बूढ़ी औ़रत भी अल्लाह पर ईमान ले आई उसी दौरान एक परिन्दा एक बड़ा बरतन ले कर उतरा उस में गोश्त और खाना था जिसे वोह दोनों खा कर सैर हो गए, फिर वोह मोमिना बूढ़ी औ़रत बाहर निकली और

अपनी क़ौम को पूरी बात बता कर डराया लेकिन क़ौम ने उस मोमिना का गला घोंट कर उसे शहीद कर दिया।[8]

बूढ़ी मोमिना ज़िन्दा हो गई

बेटे ह़ज़रते यसअ़ को वालिदा की शहादत का बहुत सदमा हुवा येह देख कर आप ने फ़रमाया : अल्लाह करीम अ़नक़रीब तुम्हारी वालिदा को ज़िन्दा कर देगा और तुम दोनों मां बेटे को इस क़ौम के लिए एक बड़ी निशानी बना देगा। फिर आप अपनी क़ौम के पास गए तो देखा कि सब लोग उस मोमिना की लाश के क़रीब जमअ़ हो चुके थे और उसे खाना चाहते थे, आप ने अपनी आवाज़ बुलन्द कर के उन्हें पुकारा तो सब लोग इधर उधर बिखर गए और कहने लगे : तुम यक़ीनन (ह़ज़रते) इल्यास हो, आप ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की तो अल्लाह करीम ने उस बूढ़ी मोमिना को ज़िन्दा कर दिया।[9]

क़ौम की क़ह़त़ साली ख़त्म हुई

अब क़ौम आप की त़रफ़ मुतवज्जेह हुई और कहने लगी : अ़र्सए सात साल से हम जिस परेशानी में हैं आप उसे क्यूं नहीं देख रहे ? आप عَلَیْہِ السَّلَام ने सरज़निश करते हुए फ़रमाया : तुम ने बात़िल माबूद बअ़्ल को क्यूं नहीं पुकारा कि वोह तुम्हारी परेशानी दूर कर देता, क़ौम ने कहा : हम ने उसे पुकारा था लेकिन उस ने हमारी कोई मदद नहीं की, आप ने फ़रमाया : अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मदद करे तो क्या तुम अल्लाह पर ईमान ले आओगे ? उन्हों ने कहा हां ! हम ईमान ले आएंगे। क़ौम की बात सुन कर आप ने अल्लाह पाक से दुआ़ की तो अल्लाह करीम ने उन पर बारिश बरसा दी उन की नहरें बह निकलीं, ज़मीन सर सब्ज़ो शादाब हो गई, फिर क़ौम के वोह लोग जो भूक की वजह से मर गए थे अल्लाह करीम ने उन सब को ज़िन्दा कर दिया।

क़ौम की ना फ़रमानी

लेकिन येह लोग इतने इन्आ़मात मिलने के बा वुजूद अल्लाह पर ईमान न लाए बल्कि और ज़ियादा कुफ़्र और ना फ़रमानी करने लगे आप ने उन्हें कुफ़्र से रोका उन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डराया और उन्हें अल्लाह की अ़त़ा कर्दा नेमतों और फ़ज़्ल को याद दिलाया मगर येह लोग अपने कुफ़्र से बाज़ न आए और कहने लगे : क़ह़त़ साली के दिन ख़त्म हो गए हैं और बहुत मुश्किल है कि कभी लौट कर आएं, अगर कभी दोबारा क़ह़त़ साली हुई भी तो हमें कोई परेशानी नहीं होगी क्यूंकि हम अपने घरों में इतना सारा सामान जम्अ़ कर चुके हैं जो हमें एक त़वील अ़र्से तक काफ़ी हो जाएगा, उन की बात सुन कर आप ने क़ौम के ख़िलाफ़ दुआ़ की और उन से किनारा कशी इख़्तियार कर ली।[10] ह़ज़रते यसअ़ ने ह़ज़रते इल्यास की पैरवी की और उन के साथ साथ रहने लगे फिर एक वक़्त आया कि ह़ज़रते इल्यास बूढ़े हो गए उस वक़्त ह़ज़रते यसअ़ जवान थे।[11]

सात साल का अ़र्सा पहाड़ पर

एक रिवायत के मुत़ाबिक़ जब बादशाहे आजाब ने ह़ज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام को अज़िय्यत देने और क़त्ल करने का इरादा कर लिया तो आप ने हिजरत कर ली। और एक दुश्वार और बड़े पहाड़ पर चढ़ गए जिस में एक ग़ार था बादशाह के ख़ौफ़ से आप ने वहां सात साल का अ़र्सा गुज़ारा, ज़मीन के पौदे और दरख़्तों के फल खा कर गुज़ारा करते रहे, बादशाह ने आप को बहुत ढुंडवाया मगर अल्लाह तआ़ला ने आप को बादशाह की दस्तबुर्द से मह़फ़ूज़ रखा।

बादशाह का बेटा बीमार हो गया

सात साल पूरे हो गए तो अल्लाह पाक के हुक्म से बादशाह का बेटा बीमार हो गया बादशाह अपने बेटे से बहुत ज़ियादा मह़ब्बत करता था बीमारी ने शिद्दत पकड़ ली बादशाह ने अपने बात़िल माबूद बअ़्ल से बेटे की शिफ़ायाबी मांगी लेकिन बेटे को सेह़त न मिली और बीमारी बढ़ती चली गई, बादशाह ने बहुत हाथ पांव मारे कि किसी त़रह़ बेटा सेह़तयाब हो जाए मगर बेटे को सेह़त न मिल सकी।[12] (जारी है)

---

(1)نہایۃ الارب فی فنون الادب،14/11 (2)نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/12 (3)قصص الانبیاء للکسائی،ص246 (4)نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/12 (5)نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/12 (6)نہایۃ الارب فی فنون الادب،14/12 (7)نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/12 (8)نہایۃ الارب فی فنون الادب، 14/13- قصص الانبیاء للکسائی، ص:249 (9)نہایۃ الارب فی فنون الادب،14/13 (10)نہایۃ الارب فی فنون الادب،14/13 (11)نہایۃ الارب فی فنون الادب،14/22 (12)نہایۃ الارب فی فنون الادب،14/16۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

1 बे वुज़ू अज़ान कहना

सुवाल : क्या अज़ान के लिए बा वुज़ू होना ज़रूरी है ?

जवाब : बहारे शरीअ़त में है : बे वुज़ू की अज़ान सह़ीह़ है मगर बे वुज़ू अज़ान कहना मकरूह है । (बहारे शरीअ़त, 1 / 466) यानी मकरूहे तन्ज़ीही और ना पसन्दीदा है लिहाज़ा जब भी अज़ान देनी हो तो बा वुज़ू होना बेहतर है । बच्चे के कान में भी बा वुज़ू अज़ान दें ।

2 नेकी की दावत देने वाले को येह कहना कैसा कि "अल्लाह मालिक है ?"

सुवाल : बाज़ औक़ात जब हम किसी को नमाज़ या नेकी की दावत देते हैं तो वोह जवाब देता है कि "अल्लाह मालिक है" क्या इस त़रह़ जवाब देना दुरुस्त है ?

जवाब : बाज़ औक़ात लोग टालने के लिए भी इस त़रह़ कह देते हैं । अलबत्ता येह ह़क़ीक़त है कि अल्लाह मालिक है । अब कहने वाले ने किस निय्यत से कहा है ? येह खुदा बेहतर जानता है । "नमाज़ पढ़ो न पढ़ो अल्लाह पाक बख़्श देगा, अल्लाह पाक मालिक है" इस का कोई भी मत़लब हो सकता है लेकिन जब तक बात वाज़ेह़ न हो उस वक़्त तक कहने वाले पर हुक्म नहीं लगाया जा सकता । बहर ह़ाल जो लोग टालने के लिए ऐसा कह देते हैं वोह ऐसा न करें बल्कि नमाज़ पढ़ें कि येह किसी को मुआ़फ़ नहीं ।

3 शौहर के भांजों से पर्दा करने का मस्अला

सुवाल : क्या शौहर के भांजों से भी पर्दा करना लाज़िम है ?

जवाब : अगर शौहर के भांजे बालिग़ हों तो उन से भी पर्दा करना ज़रूरी है, अलबत्ता ! छोटे बच्चे किसी के भी हों उन से पर्दे का हुक्म नहीं, लेकिन आज कल जवान को भी बच्चा कह दिया जाता है येह दुरुस्त नहीं ।

4 जुगनू को क़ैद करना कैसा ?

सुवाल : बाज़ बच्चे खेलने के लिए जुगनू को क़ैद कर लेते हैं क्या येह ज़ुल्म है ?

जवाब : जिस त़रह़ बच्चे खेलने के लिए क़ैद करते हैं उन की ग़िज़ा का ध्यान नहीं होता, जिस की वजह से जुगनू मर जाते हैं इस त़रह़ जुगनू को क़ैद करना ज़ुल्म

है, मैं ने बचपन में येह देखा था कि बच्चे टिड्डी के गले में धागा बांध कर उड़ाते थे इस से वोह तड़पती थी और बच्चों को मज़ा आता था और कुछ बड़े लड़के उस की टांग में डोरी डाल कर बेचते भी थे जिस की वजह से उस की टांग टूट जाती थी। आज भी बाज़ बच्चे तितली को पकड़ने की कोशिश करते हैं, हालांकि येह बहुत नाज़ुक होती है इसे भी नहीं पकड़ना चाहिए, यूं ही आम के मौसिम में सब्ज़ रंग की बड़ी मख्खियां आती हैं जो आम मख्खी से मुख़्तलिफ़ होती हैं, बाज़ बच्चे उस में बारीक सा तिन्का घोंप देते हैं जिस की वजह से वोह थोड़ा उड़ कर गिर जाती है, इसी त़रह़ कुछ बच्चे पर वाले बे ज़रर कीड़ों और बे क़ुसूर च्यूंटियों को मारते हैं और बिल्ली के बच्चों की दुम पकड़ कर उछालते हैं येह सब ज़ुल्म की सूरतें हैं, बच्चों को येह बात समझानी चाहिए कि जानवरों पर ज़ुल्म नहीं करना चाहिए, बल्कि रह़म करना चाहिए।

5 घर का नाम "दारुस्सलाम" रखना कैसा ?

सुवाल : क्या घर का नाम "दारुस्सलाम" रख सकते हैं ?

जवाब : घर का नाम "दारुस्सलाम" रखने में ह़रज मालूम नहीं होता। "दारुस्सलाम" का मत़लब है : सलामती का घर। अफ़्रीक़ा का एक मुल्क "तन्ज़ानिया" है, उस में एक मश्हूर शहर है जिसे "दारे सलाम (Dar es Salaam)" कहा जाता है।

6 ऑफ़िस में अपने लिए चाय बनाना कैसा ?

सुवाल : क्या ऑफ़िस में चाय का काम करने वाले अपने लिए चाय बना सकते हैं ?

जवाब : अगर मलिक ने अपनी और मेहमानों की चाय बनाने के लिए रखा है तो मालिक की इजाज़त के बिग़ैर नहीं बना सकते और अगर मालिक ने इजाज़त दी हुई है तो बना सकते हैं।

7 दौराने नमाज़ मुंह में कड़वा पानी आ जाए तो ?

सुवाल : अगर नमाज़ के दौरान नमाज़ी के मुंह में कड़वा पानी आ जाए तो क्या करना चाहिए ?

जवाब : बाज़ औक़ात तेज़ाबिय्यत की वजह से खट्टी डकार और कड़वा पानी मुंह में आ जाता है, दौराने नमाज़ मुंह में कड़वा पानी आ जाए तो उसे ह़ल्क़ में वापस उतारा जा सकता है, इस में कोई ह़रज नहीं है।

8 क्या ड्राईविंग करते हुए तिलावत या नात शरीफ़ सुन सकते हैं ?

सुवाल : क्या ड्राईविंग करते हुए रिकार्डेड तिलावत या नात शरीफ़ सुन सकते हैं और इस का सवाब मिलेगा ?

जवाब : जी हां सुन सकते हैं और اِنْ شَآءَ اللّٰه الکریم इस का सवाब भी मिलेगा (अलबत्ता ट्रेफ़िक क़वानीन का ख़याल रखा जाए)।

9 मस्जिद की सफ़ाई के दौरान च्यूंटियां आ जाएं तो क्या करना चाहिए ?

सुवाल : सफ़ाई के दौरान च्यूंटियां आ जाएं तो ?

जवाब : मस्जिद या घर वग़ैरा की सफ़ाई करते वक़्त अगर च्यूंटियां आ जाएं तो सफ़ाई करने में मोह़तात़ त़रीक़ा अपनाना चाहिए जिस से च्यूंटियों को तक्लीफ़ न पहुंचे। अगर च्यूंटियां मस्जिद की चटाई वग़ैरा पर हैं तो उस को हिला लें जिस से च्यूंटियां जाना शुरूअ़ कर दें, उस वक़्त तक किसी और जगह की सफ़ाई कर ली जाए। बाज़ लोग सफ़ाई में बे एह़तियाती करते हैं जिस की वजह से कई च्यूंटियां ज़ख़्मी हो जातीं बल्कि मर भी जाती हैं। च्यूंटियों का एक अपना निज़ाम होता है, येह सब एक क़त़ार में चलती हैं, अगर कोई इन की क़त़ार तोड़ दे तो येह फिर से बना लेती हैं, इन में एक रानी होती है अगर उस रानी को कोई मार दे तब येह अपनी क़त़ार तोड़ देती हैं।

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

1 ऑन लाइन शोपिंग करते वक़्त कार्ड पैमेन्ट करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस बारे में कि मुख़्तलिफ़ कम्पनीज़ से ऑन लाइन सामान मंगवाने के लिए सामान ऑर्डर करते वक़्त ही कार्ड पमेन्ट की जाती है यानी सामान की पैमेन्ट पहले हो जाती है और सामान बाद में दूसरे तीसरे या चौथे दिन कस्टमर तक पहुंचता है क्या सामान कस्टमर तक पहुंचने से पहले ही कार्ड पैमेन्ट करना जाइज़ है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में कार्ड के ज़रीए़ पैमेन्ट की अदाएगी पहले कर देना जाइज़ है, इस में कोई ह़रज नहीं, क्यूंकि जब मबीअ़ व समन की मिक़्दार वग़ैरा की तअ़यीन हो जाए (यानी जो चीज़ बेची जा रही है उस की मुकम्मल वज़ाह़त कर दी गई है कि वोह किस त़रह़ की होगी और जिस क़ीमत पर ख़रीदी गई वोह भी मुक़र्रर है) और दीगर बैअ़ की तमाम शराइ़त पाई जाएं तो इस के बाद मह़ज़ मबीअ़ पर क़ब्ज़ा न करने की वजह से बैअ़ फ़ासिद नहीं क़रार दी जाएगी, क्यूंकि बैअ़ के सह़ीह़ होने के लिए मबीअ़ पर क़ब्ज़ा कर लेना शर्त़ नहीं बल्कि बैअ़ तो फ़क़त़ ईजाबो क़बूल या इस के क़ाइम मक़ाम तआ़ती वग़ैरा के ज़रीए़ मुन्अ़क़िद हो जाती है, अलबत्ता इस त़रह़ की मन्क़ूली (Moveable) चीज़ पर क़ब्ज़ा किए बिग़ैर आगे बेचना जाइज़ नहीं है क्यूंकि आगे बेचने के लिए उस चीज़ पर क़ब्ज़ा ज़रूरी है।

याद रहे कि येह बैए़ सलम नहीं, बैए़ मुत़्लक़ है, क्यूंकि बैए़ मुत़्लक़ में मबीअ़ का मौजूद होना ज़रूरी है, और यहां ऐसा ही होता है कि मबीअ़ फ़िलह़ाल मौजूद होती है हां येह है कि अदाएगी पहले कर दी गई है और मबीअ़ पर फ़िलह़ाल क़ब्ज़ा नहीं और येह बैए़ मुत़्लक़ के मनाफ़ी नहीं है। इसी त़रह़ बैए़ मुत़्लक़ में पूरे समन पर फ़िलह़ाल क़ब्ज़ा कर लेना ज़रूरी नहीं है, जब कि बैए़ सलम की सूरते ह़ाल इस से बहुत मुख़्तलिफ़ है क्यूंकि बैए़ सलम की कुछ मख़्सूस शराइ़त हैं जिन के बिग़ैर वोह मुन्अ़क़िद ही नहीं होती, जिस की काफ़ी तफ़्सील बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 11 बैए़ सलम के बयान में है, इन में से एक शर्त़ मुकम्मल समन फ़िलह़ाल मुस्लम इलैह को दे देना और मुस्लम इलैह का इस पर क़ब्ज़ा कर लेना है इस के बिग़ैर बैए़ सलम फ़ासिद हो जाती है, इसी त़रह़ बैए़ सलम में फ़िलह़ाल मबीअ़ मौजूद नहीं होती।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 9, 10 मुह़र्रमुल ह़राम को पानी की सबील लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि हमारे गांव में एक शख़्स ने कहा कि 9, 10 मुह़र्रमुल ह़राम को पानी की सबील लगाना जाइज़ नहीं, आप से अ़र्ज़ है कि हमें इस बारे में रहनुमाई फ़रमाएं कि क्या 9, 10 मुह़र्रमुल ह़राम को पानी की सबील लगाना जाइज़ है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

नौ या दस मुह़र्रमुल ह़राम को ख़ालिस अल्लाह पाक की रिज़ा और शहीदाने करबला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की अरवाह़े त़य्यिबा को सवाब पहुंचाने की निय्यत से मुसलमानों के लिए पानी की सबील लगाना बिला शुबा जाइज़, मुस्तह़ब और सवाब का काम है, ह़दीसे पाक में पानी को अफ़्ज़ल सदक़ा कहा गया है, नीज़ पानी पिलाने

से गुनाह मुआफ़ होते हैं।

पानी अफ़्ज़ल सदक़ा है, जैसा कि सुनने अबू दावूद में है :

عن سعد بن عبادة انه قال: یا رسول الله، ان ام سعد ماتت، فای الصدقة افضل؟ قال: الماء، قال: فحفر بئرا، وقال: هذه لام سعد

तर्जमा : हज़रते सअ़द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि इन्हों ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ! उम्मे सअ़द (मेरी मां) इन्तिक़ाल कर गईं तो कौन सा सदक़ा उन के लिए बेहतर है ? फ़रमाया "पानी", तो उन्हों ने कुंवां खुदवाया और कहा येह कुंवां सअ़द की मां के लिए है।

(سنن ابوداؤد، 2/130)

मज़्कूरा बाला हदीस के मुतअ़ल्लिक़ मिरआतुल मनाजीह में है : "बाज़ लोग सबीलें लगाते हैं, आम मुसलमान ख़त्मे फ़ातिहा वग़ैरा में दूसरी चीज़ों के साथ पानी भी रख देते हैं, इन सब का माख़ज़ येह हदीस है, क्यूंकि इस से मालूम हुवा कि पानी की ख़ैरात बेहतर है।"

(मिरातुल मनाजीह, 3 / 138)

पानी पिलाने से गुनाह मुआफ़ होते हैं, जैसा कि हदीसे पाक में है :

حدثنا انس بن مالك قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: اذا كثرت ذنوبك فاسق الماء على الماء تتناثر كما يتناثر الورق من الشجر فی الریح العاصف

तर्जमा : हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तेरे गुनाह ज़ियादा हो जाएं, तो पानी पर पानी पिलाओ, गुनाह झड़ जाएंगे जैसे आंधी में दरख़्त के पत्ते गिरते हैं। (تاریخ بغداد، 6/403)

सबील लगाने में ईसाले सवाब की निय्यत हो, जैसा कि फ़तावा रज़विय्या में है : "निय्यत ईसाले सवाब की हो और रिया वग़ैरा को दख़्ल न हो, तो इस (यानी पानी पिलाने) के जवाज़ में कोई शुबा नहीं, शरबत करें और अ़र्ज़ करें कि इलाही ! येह शरबत तरवीहे रूह हज़रते इमाम (यानी हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रूह को राहत पहुंचाने) के लिए किया है, इस का सवाब उन्हें पहुंचा और साथ फ़ातिहा वग़ैरा पढ़ें, तो और अफ़्ज़ल, फिर मुसलमानों को पिलाएं।" (फ़तावा रज़विय्या, 9 / 601)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 बालों की पी आर पी करवाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस बारे में कि क्या बालों के लिए पी आर पी करवा सकते हैं, इस में होता येह है कि जिस्म से ख़ून ले कर उस में से प्लाज़्मा अलग किया जाता है फिर वोह सिरिन्ज के ज़रीए बालों की जड़ों में पहुंचाया जाता है, जिस से गंजापन दूर होता है और बाल उग आते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَ الصَّوَابِ

PRP : इन्सानी ख़ून के ज़रीए इलाज की शरअ़न इजाज़त नहीं क्यूंकि इन्सान का ख़ून जिस्म से जुदा होने के बाद नजासते ग़लीज़ा व हराम होता है और नजिस व हराम चीज़ को इलाज व मुआलजे के लिए इस्तिमाल करना जाइज़ नहीं, अल्लाह तआ़ला ने हराम व नजिस चीज़ में शिफ़ा नहीं रखी, इसी तरह जुज़्ए इन्सान से इन्तिफ़ाअ़ हासिल करने की शरीअ़त ने इस लिए भी इजाज़त नहीं दी कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान को मुकर्रम व मोहतरम बनाया है और इस के जुज़ के ज़रीए इलाज करना इस की तकरीम के ख़िलाफ़ है, अगर्चे वोह जुज़ ख़ुद उसी मरीज़ के जिस्म का ही क्यूं न हो, क्यूंकि इस का इस्तिमाल इस की तकरीम के ख़िलाफ़ है और सूरते मसऊला में तो येह जुज़ नापाक भी है।

अलबत्ता ऐसी हालत हो कि इस के इलावा दूसरा कोई इलाज न हो और ऐसे डॉक्टर्ज़ जो फ़ासिक़ मोलिन न हों और वोह ज़न्ने ग़ालिब के तौर पर बताएं कि इस के इलावा बालों का कोई दूसरा इलाज नहीं तो जमाले मक़्सूद के हुसूल के लिए इस इलाज की इजाज़त होती लेकिन यहां ऐसी कोई सूरत नहीं बालों की सरजरी के लिए कई जाइज़ इलाज मौजूद हैं। लिहाज़ा यहां इस इलाज की हरगिज़ इजाज़त नहीं है।

PRP यानी (Platelet Rich Plasma) में ख़ून का एक हिस्सा ही इस्तिमाल होता है और इस से ख़ून की माहिय्यत में कोई तब्दीली नहीं होती, प्लाज़्मा ख़ून के रक़ीक़ हिस्से को कहते हैं, ख़ून के बुन्यादी तौर पर तीन हिस्से होते हैं रेड सेल, वाइट सेल और प्लाज़्मा। रेड सेल और वाइट सेल येह ख़ून के गाढ़े हिस्से होते हैं जब कि प्लाज़्मा रक़ीक़ होता है। ख़ून को मशीन में डाल कर स्पन किया जाता है तो वाइट सेल और रेड सेल नीचे बैठ जाते हैं और प्लाज़्मा ऊपर रह जाता है जिसे अलग कर लिया जाता है और बतौरे दवा इस्तिमाल किया जाता है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

काम की बातें

1 इन्सान कभी अपनी कम इल्मी, कभी लालच और कभी भोलपन की वजह से धोके में मुब्तला हो जाता है, मगर अस्ल नादाना वोह है जो एक बार धोका खाने के बाद भी इस से सबक़ न सीखे, क्यूंकि (हदीसे पाक में है) मोमिन एक सूराख़ से दो बार नहीं डसा जाता। (مسلم، ص1222، حدیث:7498)

2 प्रोपर्टी वग़ैरा की ख़रीदारी के वक़्त उस की Verification और Certification कीजिए कि वोह पेपर Fake (जाली) न हों और इस बारे में कुछ अच्छे लोगों से मश्वरा भी कर लीजिए क्यूंकि मश्वरा करेंगे तो اِن شآءَاللہ इस का फ़ाइदा होगा।

3 किसी बिज़नेस में Investment करने से पहले इस बारे में शरई राहनुमाई ज़रूर हासिल कीजिए कि बाज़ औक़ात नफ़्अ़ की सूरत में जो पैसा आता है वोह सूद होता है, लिहाज़ा इस से बचने के लिए शरई उसूलों को पेशे नज़र रखना होगा वरना सूद की नुहूसत से अस्ल रक़म भी बरबाद हो जाएगी।

4 किसी से लेन देन का मुआ़मला करना हो तो Black and white (हर एक बात) पहले से लिखी होनी चाहिए, ताकि मरने के बाद हमारे लिए आज़माइश न हो क्यूंकि अगर क़ब्र में किसी का क़र्ज़ ले कर गए तो क्या होगा।

5 जब किसी क़रीबी शख़्स से भी मुआ़हदा करना हो तो उस वक़्त अजनबी बन कर मुआ़हदा कीजिए और पहले ही येह तै कर लीजिए कि क्या करना है और क्या नहीं करना, क्यूंकि आज अगर अपनाइय्यत वाला माहौल रखेंगे तो कल जल्द ही अजनबी हो जाएंगे और आज अजनबिय्यत रखेंगे तो कल आप की अपनाइय्यत बाक़ी रहेगी।

6 वालिद साहिब की बातों को Ignore (नज़र अन्दाज़) मत कीजिए क्यूंकि उन की उ़म्र और आप की उ़म्र में काफ़ी फ़र्क़ है, उन्हों ने मुआ़शरे की कई चोटें खाई हुई हैं, दुन्या देखी हुई है, मुम्किन है हर चीज़ के बारे में उन का अपना तजरिबा न हो लेकिन हो सकता है वोह अपने साथ वाले चार आदमियों का तजरिबा आप के साथ शेयर कर रहे हों, लिहाज़ा हमेशा बड़े बुज़ुर्गों की बातों को अहमिय्यत देनी चाहिए।

7 कोई किसी को कमा कर नहीं देता, इस का मत़लब येह है कि अगर कारोबार को बढ़ाना है तो इस में चेक एन्ड बैलेन्स रखना होगा और मुलाज़िमीन से पूछ गछ भी करनी होगी कि मेरा कितना पैसा है और कहां कहां रखा हुवा है ताकि आप नुक़्सान से बच सकें। चेक एन्ड बैलेन्स सिर्फ़ कारोबार में ही नहीं बल्कि खाने पीने, उठने

बैठने, अपनी फ़ैमिली ह़त्ता कि अपनी ज़ात में भी रखना ज़रूरी है।

8 सब से बड़े पछतावे की बात येह है कि जब बन्दा क़ब्र में जाए तो उस के पास नेक आमाल न हों।

9 आप पैसा जहां भी (Invest) कर लें हर जगह येह शक है कि वापस मिलेगा या नहीं, एक ऐसी जगह है जहां कोई शक नहीं, वोह है राहे ख़ुदा में ख़र्च करना, हम अल्लाह पाक की राह में ख़र्च करेंगे अपनी औक़ात के मुत़ाबिक़ मगर अल्लाह पाक हमें इस का बदला देगा अपनी शान के मुत़ाबिक़।

10 फ़र्ज़ कीजिए कि आप बैरूने मुल्क में हों और वहां से (पैसे वग़ैरा) कुछ भेजते रहें और जब यहां अपने मुल्क आएं तो पता चले कि यहां तो कुछ भी नहीं आया, इसी त़रह़ ग़ौर कीजिए कि अभी आप दुन्या में हैं, जब दुन्या छोड़ कर चले जाएंगे, वहां पहुंच कर पता चले कि दुन्या में जो नेक आमाल मैं करता रहा उस में से तो यहां कुछ भी नहीं पहुंच सका, सारे आमाल तो मेरी रियाकारी और बद निय्यती की नज़्र हो गए, तो उस वक़्त की ह़सरत, पछतावा और शर्मिन्दगी किस क़दर होगी !!

11 घर की बाज़ बड़ी बूढ़ियों की येह आ़दत होती है कि घरेलू कामों में अपनी बेटी या बहू पर बेजा तन्क़ीद करती हैं, इन के हौसले तोड़ती हैं और इन्हें येह त़ाना देती हैं कि हम तो इतने काम कर लिया करती थीं, तुम हमारे जैसे काम क्या कर सकोगी। अगर येह बच्चियां इन बातों से तंग आ कर घर के काम काज छोड़ दें तो आप क्या करेंगी ? लिहाज़ा इन की हौसला अफ़्ज़ाई कीजिए और अपनी माज़ी की ऐसी बात जिस में कोई सबक़ हो तो कभी कभार एक अच्छे अन्दाज़ से कह दीजिए, बार बार तन्क़ीद करने से आपस के तअ़ल्लुक़ात और घर का माह़ौल ख़राब होता है।

12 अगर कोई इस दौर में भी वालिदैन या बड़े बूढ़ों के साथ रहता है तो बड़े बूढ़ों से मेरी दरख़्वास्त है कि इस को ग़नीमत जानिए और इन के कामों पर रोक टोक न कीजिए, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस मौक़अ़ पर येह मिसाल देते हैं कि अगर वोह नाक से भी खाएं तो येह न कहें कि मुंह से खाओ, क्यूंकि अब इतनी बरदाश्त नहीं है लिहाज़ा बड़ों को चाहिए कि शफ़्क़त व मह़ब्बत से बात करें।

13 औलाद अगर वालिद साह़िब को वक़्त नहीं देती तो वालिद साह़िब को औलाद की उ़म्र के मुत़ाबिक़ कुछ दिलचस्प और पुर मग़्ज़ गुफ़्तगू करने का मिज़ाज बनाना चाहिए अगर वोह रोक टोक और हर वक़्त नसीह़तें करने का मिज़ाज रखेंगे तो औलाद आप के पास नहीं बैठेगी।

14 कम ज़र्फ़ है वोह औलाद जो अपने वालिदैन से येह कहती है कि आप ने हमारे लिए किया ही क्या है ? वालिदैन ने औलाद की ख़्वाहिशों को पूरा किया है, बच्चे अपने उन दोस्तों को देखते हैं जिन के वालिदैन ने उन्हें गाड़ियां बंगले बना कर दिए लेकिन उन बच्चों को नहीं देखते जो मज़दूरियां करते हैं, रोडों पर घूम रहे होते हैं। लिहाज़ा वालिदैन से येह कहना कम इ़ल्मी और कम ज़र्फ़ी है और इस में वालिदैन की सख़्त दिल आज़ारी है।

15 झूट एक ऐसी बुरी आ़दत है कि जिस के बारे में पता चल जाए कि येह झूट बोलता है तो फिर इस पर किसी का एतिमाद क़ाइम नहीं रहता।

16 झूट बोलने से घर का माह़ौल ख़राब होता है लिहाज़ा हमेशा सच बोलें क्यूंकि "सांच को आंच नहीं" सच बोलने में बाज़ औक़ात बन्दा तंग गली में दाख़िल होता है मगर आगे रास्ता कुशादा होता है और झूट बोलने में ब ज़ाहिर कुशादा रास्ते में दाख़िल होता है मगर आगे तंग होते होते रास्ता बन्द हो जाता है।

17 एक बार आप किसी के एतिमाद का शीशा तोड़ दें तो वोह जुड़ नहीं सकता, जुड़ भी जाए तो दराड़ फिर भी बाक़ी रहती है, येह आप की पहचान बन जाएगी, आप तौबा कर के चाहे विलायत की मन्ज़िलें त़ै कर लें लेकिन लोगों में फिर वोह पोज़ीशन बहुत मुश्किल से बनती है।

18 अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिए दूसरों की इ़ज़्ज़त को दाव पर लगाना बहुत बुरी आ़दत है कि आप दूसरों की बे इ़ज़्ज़ती में अपनी इ़ज़्ज़त तलाश कर रहे हैं।

19 औलाद को येह सोचना चाहिए कि वालिद साह़िब मेरे बचपन में टाइम निकाल कर हम से वोह बातें करते थे जिस से हमारे चेहरे पर मुस्कुराहट आती थी तो आज हमें भी उन से ऐसी ही बातें करनी चाहिएं जिन से उन के चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाए।

माहे मुहर्रम की ख़ैरात व ह़सनात

ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मुफ़्ती सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक ह़ाज़िक़ मुफ़्ती, दूरअन्देश आ़लिम और साह़िबे ह़िक्मत हस्ती थे, आप के मक़ालात आप के उन औसाफ़े जलीला के बय्यन सुबूत हैं, आप ने नए इस्लामी साल की आमद पर अहले इस्लाम को बड़े ही पुर ह़िक्मत अन्दाज़ में नसाएह़ फ़रमाएं हैं, साल 1446 हिजरी का आग़ाज़ हुवा चाहता है, इस मुनासबत से माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के क़ारेईन को आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इन्ही नसीह़तों में से चन्द इक़्तिबासात पेश किए जाते हैं :

माहे मुह़र्रम साल का पहला महीना है। इस्लामी साल इसी महीने से शुरूअ़ होता है। मुसलमानों की ज़िन्दगी के लिए साल भर के बाद फिर एक नया अ़ह़द आता है। गुज़रे हुए साल में जो इफ़रात़ व तफ़रीत़ या फ़रोगुज़ाश्तें हुई हों और ज़ख़ीरए आख़िरत बहम पहुंचाने में जो कोताही हो गई हो। नए साल से मुसलमान को इस की तलाफ़ी की फ़िक्र होना चाहिए। ज़िन्दगी के औक़ात ग़नीमत समझ कर अपने इम्कान व मक़दूर तक नेकियों का सरमाया जमअ़ करना चाहिए। ज़िन्दगी के गुज़रे हुए कारनामे को सामने रख कर फ़ैसला करना चाहिए कि हम से क्या क्या ग़लतियां सरज़द हुईं ताकि आइन्दा के लिए इन से एह़तियात़ रहे। और अगर मुम्किन हो सके और कोई सूरत तलाफ़िए माफ़ात की नज़र आए तो अ़मल में लाना चाहिए। और आने वाले साल का इस्तिक़बाल नेकियों से किया जाए। मुसलमान को येही तालीम दी गई है और इस्लाम का येही दर्स है कि मुसलमान हर एक वक़्त को अल्लाह की त़ाअ़त व इ़बादत में मश्ग़ूल करे और नए अ़ह़द में नेकियां इस के साथ हों।

दुन्या के तमाम लोग और आ़लम की सारी क़ौमें वक़्त का एह़तिराम करती हैं लेकिन त़रीक़े मुख़्तलिफ़ हैं। उमरा व सलात़ीन के यहां वक़्ती तग़य्युरात का नौबतों और तोपों की आवाज़ों से ख़ैर मक़्दम किया जाता है। रात की तारीकी के बाद जब सुब्ह़ की रौशनी नुमूदार होती है तो नौबतें बजनी शुरूअ़ हो जाती हैं। फिर जब दिन की गर्मी और रौशनी ह़द्दे कमाल को पहुंचती है और आफ़्ताब ढलने का वक़्त आता है तो फिर नौबतें बजती हैं तोपें चलती हैं। इस के बाद जब दिन की उ़म्र आख़िर होती है और आफ़्ताब की ज़र्दी सकराते मौत की त़रह़ दिन के ख़ातिमे की ख़बर देती है, रात की आमद आमद होती है, उस वक़्त फिर नक़्क़ारों पर चोबें पड़ती हैं। इसी त़रह़ मौसिमी तग़य्युरात के मौक़ओं पर जश्न मनाए जाते हैं। ग़रज़ हर क़ौम तग़य्युराते औक़ात के लिए अपने ह़स्बे लियाक़त कुछ न कुछ करती ही है लेकिन जो कुछ करते हैं येह इज़ाअ़ते वक़्त व माल के सिवा और कोई मुफ़ीद नतीजा नहीं रखता। इन्सान खेल में मश्ग़ूल हो गए, लह्वो लअ़ब में वक़्त गुज़ारे। ख़ाक उड़ा कर इन्सानिय्यत को बरबाद किया। वह़शियाना अफ़्आ़ल कर के बहीमत (ह़ैवानिय्यत) का सुबूत दिया तो कोई कारआमद बात नहीं बल्कि अफ़्सोसनाक और लाइक़े इ़ब्रत बात है।

इस्लाम ने दुन्या से वह़शत, बे तह़ज़ीबी, बद मस्ती, बहीमी (ह़ैवानिय्यत वाली) ह़रकात और ग़फ़्लत पैदा करने वाले अफ़्आ़ल व किरदार से अपने अ़क़ीदत कशों को रोका और हर वक़्ती तग़य्युर के साथ इन को यादे ख़ुदा, त़ाअ़त व इ़बादत, ख़ैरात व ह़सनात की त़रफ़ मश्ग़ूल

किया । मुसलमान के सामने आख़िरत का नक़्शा ऐसा नस्बुल ऐन कर दिया कि वोह किसी हाल में इस से ग़ाफ़िल न हो और मुसलमान की पाक ज़िन्दगी का लम्हा लम्हा यादे इलाही से मुनव्वर रहे और बन्दे की रूहानिय्यत माद्दी तारीकी से बे नूर न होने पाए ।

एक बच्चा जब पैदा होता है सह्ने आ़लम में क़दम रखता है, आंख खोलने और बात सुनने से पहले त़हारत के बाद सब से अव्वल उस के कानों में कलिमाते ह़क़ पहुंचाए जाते हैं । तौह़ीदो रिसालत की शहादतें और इ़बादत की दावत उस नए मेहमान को आते ही दी जाती है और इस त़रीक़े अ़मल से मुसलमानों को सिखाया जाता है कि मुसलमान का फ़रज़न्द अपनी ह़यात के इब्तिदाई अन्फ़ास से अल्लाह व रसूल جل وعلا، صلی اللہ علیہ وسلم की मह़ब्बत और उन की याद के साथ दुन्या में लिया गया है और आग़ोशे दाया व पिस्ताने मादर से आश्ना होने से क़ब्ल भी इस को इस के दीन और इस के परवर्दगार की याद दिलाई गई है । जो काम इतना अहम है जो मक़्सद इतना ज़रूरी है वोह ज़िन्दगानी के और दूसरे औक़ात में किस त़रह़ फ़रामोश किया जा सकेगा । इस लिए ज़रूरी है कि उस बच्चे की तरबियत यादे इलाही के साथ हो और क़दम क़दम पर उस को दीन के दर्स दिए जाएं । कभी अ़क़ीक़ा होता है वहां उस नौ मौलूद की आमद की ख़ुशी में शुक्रे इलाही बजा लाने के लिए क़ुरबानी दी जाती है और दोस्त अह़बाब और अहले ह़ाजत को अ़ला ह़स्बे हैसिय्यत व मुक़्दरत ज़ियाफ़तें दी जाती हैं । कभी बिस्मिल्लाह की तक़रीब होती है बचपन की उ़म्र में होश के वक़्त का और इ़ल्मी ज़िन्दगी के आग़ाज़ का यादे इलाही और दावते अह़बाब से इस्तिक़्बाल किया जाता है । हर मक़ाम पर तवज्जोह इलल्लाह की रिआ़यत मल्ह़ूज़ है । कहीं भी लग़विय्यात और लह्वो लअ़ब की त़रफ़ दीन व शरीअ़त ने मश्ग़ूल नहीं रखा । इसी त़रह़ ज़िन्दगी के आने वाले तमाम औक़ात को नेकियों के लिए मुह़र्रिक और यादगार बनाया जाता है ह़त्ता कि दिन भर काम कर के शब को बिस्तर पर आए और आराम करने की निय्यत करे तो वक़्ते ख़्वाब जो राह़त और ग़फ़्लत का वक़्त होगा उस का इस्तिक़्बाल भी रूह़ को ज़िन्दा करने वाली नेमतों से किया जाए, तालीम येह दी जाती है कि सोने से पहले इस्तिग़फ़ार पढ़े, आयतुल कुर्सी पढ़े, शहादतैन पढ़े, दुरूद शरीफ़ पढ़ते पढ़ते सो जाए । सोते से आंख खुले तो ज़बान पर कलिमा जारी हो जो ज़िन्दगी इस की आ़दी हो गई और जो शख़्स तमाम उ़म्र इस का ख़ूगर रहा होगा, उम्मीद है कि वोह ख़्वाबे मौत का इस्तिक़्बाल भी इसी त़रह़ ज़िक्रे ह़क़ के साथ करे और इस ख़्वाबे गिरां के बाद जब दूसरी ज़िन्दगी के लिए उठाया जाए तो اِنْ شَآءَاللہ تعالٰی कलिमा पढ़ता हुवा ही उठे ।

ग़रज़ हर आने वाला वक़्त और ज़माने का हर एक अहमिय्यत रखने वाला इन्क़िलाब, मुसलमान के लिए त़ाअ़त व यादे इलाही का मुह़र्रिक बनाया गया है । चांद को ग्रहन लगे या सूरज को, मुसलमान को इ़बादते इलाही में मसरूफ़ होने और अपने परवर्दगार की बन्दगी बजा लाने नमाज़ पढ़ने का हुक्म है ।

इसी त़रह़ औक़ात के तजद्दुद में साले नौ अहमिय्यत रखने वाली चीज़ है । इस का इस्तिक़्बाल भी मुसलमान त़ाआ़त व इ़बादात, ख़ैरात व ह़सनात, व ज़िक्रे ह़क़ व मक़्बूलाने बारगाहे ह़क़ से करेगा ।

इस लिए मुसलमानों का मामूल है कि इन अय्याम में रोज़े रखते हैं ब कसरत ख़ैरातें देते हैं । राहे ख़ुदा में माल सर्फ़ करते हैं, अहले बैते रिसालत व नुबुव्वत ने इन अय्याम में दीने ह़क़ व इ़श्क़े इलाही में जानें क़ुरबान कीं, ख़ून बहाए, घर लुटाए, अपने नौ निहाल निसार किए । येह उन के ह़ौसले की बुलन्दी और उन के पाए की बरतरी है ।

मुसलमान इन अय्याम में शुहदाए करबला का, उन के ईसार व इख़्लास का, उन की ऊलुल अ़ज़्मी व साबित क़दमी का, उन की ह़क़ कोशी व नाह़क़ कशी का ज़िक्र करते हैं । शहादत की मजलिसें मुन्अ़क़िद होती हैं । अहले बैत की ह़िमायते मिल्लत का अ़जीबो ग़रीब मन्ज़र दिखाया जाता है । येह मजालिस दर ह़क़ीक़त ज़िक्रे इलाही की मजालिस हैं जो आला मौइ़ज़त व तज़कीर पर मुश्तमिल हैं । इन मजालिस में शामिल होने से क़ुलूब में रिक़्क़त और आमाले सालिह़ा की रग़बत पैदा होती है । ह़क़ की ह़िमायत के जज़्बात दिलों में जागुज़ीं होते हैं । ऐसी

मजालिस का मुन्अ़क़िद करना बाइ़से अज्रो सवाब है क्यूंकि तज़्कीर की मजालिस मजालिसे ज़िक्र हैं।

इन अय्यामे मुतबर्रका में मुसलमान बिल उ़मूम ह़सनात व ख़ैरात की त़रफ़ बहुत माइल रहते हैं। पानी, शरबत की सबीलें लगाई जाती हैं। मसाकीन को खाने खिलाए जाते हैं। क़िस्म क़िस्म के अत़्इमा तक़्सीम किए जाते हैं जिस को लंगर कहते हैं। खिचड़ा पकता है और ह़ज़राते इमामैन और उन के हमराहियों की फ़ातिह़ा दे कर ईसाले सवाब किया जाता है। इन अय्याम के मामूलात में से रोज़ा ब कसरत मुसलमान दसवीं को और बाज़ नवीं और दसवीं दोनों को रोज़ा रखते हैं।

(याद रहे !) औक़ाते मुतबर्रिका में जैसे नेकी ज़ियादा अज्रो सवाब का मूजिब होती है। ऐसे ही बदी भी ज़ियादा ख़ुसरान और मलामत का मूजिब होती है। जहां नेक दिल लोग ख़ैरात व मुबर्रात में मश्ग़ूल रहते हैं, अहले हवा अपने ह़िर्स व हवस और लग़्विय्यात में मुबारक औक़ात को ज़ाएअ़ कर देते हैं। मुह़र्रम के अय्याम में ताज़िया दारी के साथ साथ लह्व लअ़ब और तस्वीर साज़ी में भी बाज़ लोग मश्ग़ूल होते हैं। दलदलें और ह़ूरें और घोड़े और आदमी की तस्वीरें बनाते हैं। बाज़ बाज़ मक़ामात पर इन्सान, शेर और रीछ के रूप भरते हैं और मुबारक औक़ात को लह्वो लअ़ब और फ़िस्क़ो फ़ुजूर में ज़ाएअ़ कर देते हैं। इतना ही नहीं कि इस वक़्त में कस्बे ख़ैर और ह़ुस्ने अ़मल से मह़रूम रहे, बल्कि कबाइर में ग़र्क़ हो कर उन्हों ने अपने नामए आमाल को बदियों से भर दिया। मुसलमानों को चाहिए कि वोह इन उमूर से रोकने की पूरी कोशिश करें और इस क़िस्म के तमाशा करने और सांग खेलने वालों को अख़्लाक़ी त़ौर पर ऐसा इ़ब्रतनाक सबक़ दें कि आइन्दा वोह ऐसे आमाल व अफ़्आ़ल के लिए जुरअत व हिम्मत न करें। येह लोग अपनी जहालत से वोह अफ़्आ़ल करते हैं जो दीनो मिल्लत के नंग व आ़र हैं और इस से दुन्या के लोग मुसलमानों की निस्बत बुरी राय क़ाइम करते और ख़राब नतीजा निकालते हैं और दर ह़क़ीक़त येह शर्मनाक अफ़्आ़ल जहालत की दस्तावेज़ हैं जो लोग इन लग़्विय्यात में मुब्तला हैं न उन्हें अपने फ़राइज़ मालूम हैं। न दीनो मिल्लत के अह़काम से कुछ ख़बर रखते हैं। अल्लाह पाक इन को हिदायत करे और इन अफ़्आ़ल व किरदार से बचाए। आमीन।

(मक़ालाते सदरुल अफ़ाज़िल, इक़्तिबासात मज़्मून "माहे मुह़र्रम के ख़ैरात व ह़सनात", स. 236 ता 249)

अपनी ग़लती मान लीजिए

ग़लती किस से नहीं होती, اَلْاِنْسَانُ مُرَكَّبٌ مِّنَ السَّهْوِ وَالنِّسْيَانِ यानी इन्सान ख़ता और निस्यान का मुरक्कब है ।[1] इस हवाले से हमें कई क़िस्म के लोगों से वासिता पड़ता है :

1. वोह जिन्हें अपनी ग़लती का एहसास हो जाता है और वोह इस की मुआफ़ी भी मांग लेते हैं ।
2. वोह जिन्हें अपनी ग़लती का एहसास हो जाता है लेकिन वोह अपने किए की मुआफ़ी नहीं मांगते ।
3. वोह जिन्हें अपनी ग़लती का एहसास नहीं होता और न वोह इस की मुआफ़ी मांगते हैं । इन में से पहली क़िस्म के लोग दुन्या व आख़िरत में कामयाबियां समेटते हैं ।

जब ग़लती की निशानदेही हो उसी वक़्त अपनी ग़लती को तस्लीम कर के माज़ेरत कर लें तो बात चन्द सेकन्डज़ में ख़त्म हो सकती है, मगर दूसरी क़िस्म में शामिल कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि जिन से कोई ग़लती हो जाए तो उसे तस्लीम नहीं करते बल्कि समझाने पर इस बात पर दलाइल देना शुरूअ कर देते हैं कि हमारी तो कोई ग़लती ही नहीं थी लेकिन आख़िरेकार उन के दलाइल कमज़ोर साबित होते हैं और उन्हें अपनी ग़लती माननी ही पड़ती है और सोरी कहना पड़ता है ।

इस्लामी अहकाम सिखाने के हवाले से ज़बरदस्त पर्सनालिटी मुफ़्तिए इस्लाम है । लेकिन इन के लिए भी फ़ुक़हाए किराम ने ग़लती तस्लीम करने के बारे में क्या ताकीद कर रखी है, तवज्जोह से पढ़िए चुनान्चे, सदरुश्शरीआ बदरुत्तरीक़ा हज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने 500 बेहतरीन उ़लमाए दीन की मुरत्तब कर्दा किताब फ़तावा आ़लमगीरी से नक़्ल किया : मुफ़्ती के लिए येह ज़रूरी है कि बुर्दबार ख़ुश ख़ुल्क़ हंसमुख हो नर्मी के साथ बात करे ग़लती हो जाए तो वापस ले अपनी ग़लती से रुजूअ़ करने में कभी दरेग़ न करे येह न समझे कि मुझे लोग क्या कहेंगे कि ग़लत फ़तवा दे कर रुजूअ़ न करना हया से हो या तकब्बुर से बहर हाल हराम है ।[2]

ग़लती हो जाने पर रुजूअ़ के वाक़िआ़त

दीनी बुज़ुर्ग ख़ता और सह्व हो जाने के बाद न सिर्फ़ उस को तस्लीम करते थे बल्कि उस का इज़ाला और वज़ाहत भी कर दिया करते थे इसे अपनी शान के ख़िलाफ़ नहीं समझते थे, बतौ़रे मिसाल चन्द हैरान कुन वाक़िआ़त पढ़िए, चुनान्चे

1 तुम ने सहीह़ कहा हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन महदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम एक जनाज़े में शरीक थे जिस में बसरा के क़ाज़ी हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन अ़म्बरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه भी तशरीफ़ लाए हुए थे, लोगों में आप का बहुत मक़ामो मर्तबा था, वहां आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कोई मस्अला बयान किया जिस में आप से सह्व हो गया (यानी ग़लती हो गई) । मैं उस वक़्त कमसिन था मगर मैं ने अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! मस्अला यूं नहीं है, आप ह़दीसे

मुबारका पर ग़ौर कर लें। येह सुन कर लोग मुझ पर चढ़ाई करने लगे मगर क़ाज़ी साहिब ने फ़रमाया : इसे कुछ मत कहो ! (फिर मुझ से पूछा :) येह मस्अला फिर कैसे है ? मैं ने मस्अला अ़र्ज़ कर दिया। ह़ालांकि मैं बहुत छोटा था फिर भी आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने सुन कर इरशाद फ़रमाया : बेटा ! तुम ने सह़ीह़ कहा, मैं तुम्हारे क़ौल की त़रफ़ रुजूअ़ करता हूं।[3]

2 बा क़ाइदा एलान करवाया बयान किया जाता है कि ह़ज़रते ह़सन बिन ज़ियादा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी शख़्स ने सुवाल किया, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस को जवाब दिया लेकिन इस में तसामुह़ हो गया (यानी ग़लती हो गई) उस शख़्स को जानते नहीं थे लिहाज़ा उस ग़लती की तलाफ़ी (इज़ाले) के लिए आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक शख़्स को बत़ौरे अजीर (यानी उजरत पर) लिया जो येह एलान करता था कि : जिस ने फ़ुलां दिन, फ़ुलां मस्अला पूछा था उस के दुरुस्त जवाब के लिए ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़ियाद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ रुजूअ़ करे। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन ज़ियाद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने कई रोज़ तक फ़तवा नहीं दिया यहां तक कि वोह (मत़लूबा) शख़्स आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा और आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस को दुरुस्त मस्अला बताया।[4]

3 दुरुस्त मस्अला बताने के लिए नंगे पांव भागे ह़ज़रते शैख़ जलील अबुल ह़सन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक औ़रत आई और एक शरई मस्अले के बारे में फ़तवा लिया और रुख़्सत हो गई कुछ ही देर गुज़री थी कि शैख़ जलील رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक दम परेशान हो कर उठे और नंगे पांव उस औ़रत के पीछे गए, उस से फ़तवा वापस लिया और लौट आए। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्दों ने जब इस बारे में दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : मेरे दिल में येह बात खटकी कि मुझे जवाब देने में कुछ वहम हुवा है इस लिए मैं फ़तवा वापस लेने के लिए ख़ुद गया कि वोह औ़रत कहीं दूर न निकल जाए। शागिर्दों ने अ़र्ज़ की : ह़ुज़ूर ! आप हमें फ़रमा देते ! फ़रमाया : अव्वल तो येह तुम्हारा काम नहीं था फिर अगर मैं तुम्हें कह भी देता तो तुम अपने जूते पहन कर आराम आराम से जाते और तुम्हें येह भी पता न चलता कि वोह औ़रत किस त़रफ़ गई है।[5]

4 पेशगी एलान कर देते हैं अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ जब भी (सुवाल जवाब का सिल्सिला) मदनी मुज़ाकरा फ़रमाते हैं तो इस के शुरूअ़ में येह भी फ़रमाते हैं : "आप सुवालात कीजिए, हर सुवाल का जवाब और वोह भी बिस्सवाब (यानी बिल्कुल दुरुस्त) दे पाऊं येह ज़रूरी नहीं, अगर भूल करता पाएं तो फ़ौरन मेरी इस्लाह़ फ़रमाएं, मुझे आएं बाएं शाएं करता, अपने मौक़िफ़ पर बिला वजह अड़ता नहीं बल्कि शुक्रिय्या के साथ रुजूअ़ करता पाएंगे।" अगर मदनी मुज़ाकरे के दौरान कभी कोई ग़लती हो भी जाए तो आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ तवज्जोह दिलाने पर न सिर्फ़ उस से रुजूअ़ फ़रमाते हैं बल्कि ज़रूरतन उस की तशहीर भी करते हैं ताकि दुरुस्त मस्अला हर एक तक पहुंच सके।

इसी त़रह किसी को मस्अला बताने में मामूली सी भी कमी बेशी हो जाती तो आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़ौरन मस्अला पूछने वाले को दुरुस्त मस्अला बताते हैं जैसा कि एक बार आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के पास कोई मस्अला मालूम करने आया, आप ने उस को मस्अला बता दिया और वोह मस्अला मालूम कर के चला गया, उस मस्अले का कोई ह़िस्सा रह गया था जो आप उस इस्लामी भाई को नहीं बता सके तो आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़ौरन उस इस्लामी भाई के पीछे गए और उस को मस्अले का वोह ह़िस्सा भी बता दिया।

अल्लाह पाक हमें अपनी ग़लती मान लेने की राह में रुकावट बनने वाली तमाम चीज़ों मसलन शर्म और तकब्बुर और सुस्ती को दूर करने और अपनी ग़लती मान लेने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)روح البیان، 3/548(2)دیکھئے: فتاویٰ عالمگیری، 3/309-بہارِ شریعت، 2/912(3)حلیۃ الاولیاء،9/6، رقم:12855(4)آدبُ المُفتِی والمُستَفتِی لابنِ الصَّلاح، ص46 ملخصاً(5)المدخل لابن الحاج، جز1، 1/305-

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

ह़िफ़्ज़े मरातिब का ख़याल कीजिए

ह़िफ़्ज़े मरातिब का अ़मली मुज़ाहरा रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ ज़बानी ह़िफ़्ज़े मरातिब का ख़याल रखने का फ़रमाया बल्कि अ़मली त़ौर पर भी कई बार इस का इज़हार फ़रमाया, अपने क़ौल व अ़मल दोनों से सिखाया कि लोगों के ह़स्बे ह़ाल उन्हें इ़ज़्ज़त दी जाए, उन के दीनी या दुन्यावी ओ़हदा व मन्सब की रिआ़यत की जाए और दीगर लोगों से बढ़ कर इकराम व एह़तिराम किया जाए। जैसा कि ह़ज़रते सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आने पर आख़िरी नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार से फ़रमाया : قُوْمُوْا اِلٰی سَیِّدِکُم यानी अपने सरदार के लिए खड़े हो जाओ।[1] यहां हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीले वालों से उन के सरदार की ताज़ीम करवाई और उन्हें बावर करवाया कि जो बड़ा है उसे उस के मक़ामो मर्तबे में रखो। इस के इ़लावा भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बाज़ अफ़राद की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिए और लोगों में उन के मक़ाम का ख़याल रखते हुए ख़ुद खड़े हो कर उन का इस्तिक़्बाल किया, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते इ़करमा बिन अबू जहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आमद पर उन की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के लिए क़ियाम फ़रमाया।[2]

और शहज़ादिए कौनैन, ख़ातूने जन्नत सय्यिदए काइनात ह़ज़रते फ़ात़िमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिए तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारहा क़ियाम फ़रमाया। दर्जे ज़ैल अह़ादीसे मुबारका भी ह़िफ़्ज़े मरातिब का ख़याल रखने के अ़मली मुज़ाहरे को बयान करती हैं।

किसी मौक़अ़ पर एक बड़ी उ़म्र के सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए, वोह हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब आना चाहते थे, लोगों ने उन के लिए जगह कुशादा करने में देर की, तो नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो हमारे छोटों पर शफ़्क़त न करे और हमारे बड़ों की ताज़ीम न करे वोह हम में से नहीं।"[3]

मरवी है कि एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घर में तशरीफ़ फ़रमा थे कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए, ह़त्ता कि घर मुबारक भर गया और उस में गुन्जाइश बाक़ी न रही। इतने में ह़ज़रते जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो अन्दर जगह न होने की वजह से दरवाज़े पर ही बैठ गए, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया तो अपनी चादर लपेट कर उन की त़रफ़ उछाल दी और इरशाद फ़रमाया : "इस पर बैठ जाओ।" उन्हों ने चादर को अपने चेहरे पर रखा और उसे चूमते हुए रोने लगे फिर चादर लपेट कर बारगाहे अक़्दस में पेश कर दी और अ़र्ज़ की : मेरी क्या मजाल कि मैं आप की चादर पर बैठूं, जिस त़रह़ आप ने मुझे इ़ज़्ज़त दी अल्लाह पाक आप की मज़ीद इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाए। येह सुन कर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दाएं, बाएं देखा और इरशाद फ़रमाया : اِذَا اَتَاکُمْ کَرِیْمُ قَوْمٍ فَاَکْرِمُوْہ यानी जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स आए तो उसे इ़ज़्ज़त दो।[4]

उ़म्दा पोशाक और 100 दीनार अ़ता फ़रमाए

एक शख़्स मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "अमीरुल मोमिनीन ! मुझे आप से एक काम है जो आप के सामने पेश करने से पहले मैं ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ कर दिया है । अगर आप ने मेरा वोह काम कर दिया तो मैं अल्लाह पाक की ह़म्द बजा लाऊंगा और आप का शुक्रिय्या अदा करूंगा और अगर आप ने वोह काम पूरा न फ़रमाया तो भी मैं अल्लाह पाक की ह़म्द बजा लाऊंगा और आप का क़ुसूर न समझूंगा ।" मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "तुम्हारी जो ज़रूरत है वोह ज़मीन पर लिख दो, मैं तुम्हारे चेहरे पर हाथ फैलाने की बे वुक़अ़ती नहीं देखना चाहता ।" उस शख़्स ने लिखा : "मैं ह़ाजत मन्द हूं ।" अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह देख कर फ़रमाया : "मेरे पास एक उ़म्दा पोशाक लाई जाए ।" पोशाक लाई गई । उस शख़्स ने वोह ले कर पहन ली । फिर वोह येह अश्आ़र कहने लगा :

كَسَوْتَنِيْ حُلَّةً تَبْلٰى مَحَاسِنُهَا
فَسَوْفَ اَكْسُوْكَ مِنْ حُسْنِ الثَّنَا حُلَلًا
اِنْ نِلْتَ حُسْنَ ثَنَائِيْ نِلْتَ مَكْرُمَةً
وَلَسْتَ تَبْغِيْ بِمَا قَدْ قُلْتُهٗ بَدَلًا
اِنَّ الثَّنَاءَ لَيُحْيِيْ ذِكْرَ صَاحِبِهٖ
كَالْغَيْثِ يُحْيِيْ نَدَاهُ السَّهْلَ وَالْجَبَلَا
لَا تَزْهَدِ الدَّهْرَ فِيْ خَيْرٍ تُوَافِقُهٗ
فَكُلُّ عَبْدٍ سَيُجْزٰى بِالَّذِيْ عَمِلَا

तर्जमा : आप ने मुझे एक पोशाक पहनाई जिस की ख़ूबियां ख़त्म होने वाली हैं, मैं आप को अच्छी तारीफ़ की पोशाकें ओढ़ाता हूं । अगर आप मेरी ख़ूब सूरत तारीफ़ को क़बूल करते हैं तो एक अ़त़िय्या क़बूल फ़रमाते हैं ह़ालांकि बदले में मेरी कही गई बातों की आप को त़लब नहीं । बिलाशुबा तारीफ़ तो तारीफ़ वाले का ज़िक्र यूं ज़िन्दा रखती है जैसे बारिश हमवार ज़मीनों और पहाड़ों को ज़िन्दगी देती है । मुवाफ़िक़ आने वाली ख़ैरो भलाई के मुआ़मले में दुन्या से मुंह न मोड़ो कि हर बन्दे को अपने किए का बदला दिया जाएगा ।

अश्आ़र सुन कर ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "सोने के सिक्के लाए जाएं" चुनान्चे, सोने के सौ सिक्के लाए गए तो आप ने वोह भी उस ज़रूरत मन्द को अ़ता फ़रमा दिए । रावी अस्बग़ बिन नबाताह कहते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : "अमीरुल मोमिनीन ! उ़म्दा पोशाक और सोने के सौ सिक्के दोनों ?" इरशाद फ़रमाया : हां ! मैं ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि اَنْزِلُوا النَّاسَ مَنَازِلَهُمْ यानी लोगों से उन के मर्तबों के मुत़ाबिक़ पेश आओ ।" और उस शख़्स का मेरे नज़दीक येही मर्तबा है ।[5]

सह़ाबए किराम के लिए ह़िफ़्ज़े मरातिब

ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم और दीगर अफ़रादे उम्मत में मरातिब व मनासिब का वाज़ेह़ फ़र्क़ है और येह फ़र्क़ शरीअ़त ने क़ाइम फ़रमाया है, येह किस शान वाले थे, ख़ुलफ़ाए राशिदीन के बाद सब से ज़ियादा इ़ल्म वाले अ़ज़ीम सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ज़बानी मुलाह़ज़ा कीजिए, वोह फ़रमाते हैं : क़ाबिले तक़्लीद और लाइक़े पैरवी रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम हैं, येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या उम्मत में सब से अफ़ज़ल, सब से ज़ियादा नेक, सब से बढ़ कर इ़ल्म वाले हैं, इन के आमाल दिखावे से पाक हैं । येह वोह लोग हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने अपने प्यारे नबी मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त व सोह़बत और ख़िदमते दीन के लिए मुन्तख़ब फ़रमाया, लिहाज़ा उन का फ़ज़्लो कमाल पहचानो, उन के फ़रामीन और त़ौर त़रीक़ों की पैरवी करो, जिस क़दर मुमकिन हो उन के अख़्लाक़ व सीरत को इख़्तियार करो कि बेशक येह लोग दुरुस्त राह पर क़ाइम थे ।[6] ग़ैर सह़ाबा से उन के मक़ामो मर्तबे के बहुत ज़ियादा ऊंचा होने को एक मौक़अ़ पर रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं बयान फ़रमाया : तुम्हारा उ़हुद पहाड़ जितना सोना ख़ैरात करना मेरे किसी सह़ाबी के मुट्ठी भर जव ख़ैरात करने बल्कि उस के आधे के बराबर भी नहीं हो सकता ।[7] ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : यानी मेरा सह़ाबी क़रीबन सवा सेर जव ख़ैरात करे और उन के इ़लावा कोई मुसलमान ख़्वाह ग़ौस व क़ुतुब हो या आ़म मुसलमान, पहाड़ भर सोना ख़ैरात करे तो उस का सोना क़ुर्बे इलाही और क़बूलिय्यत में सह़ाबी के सवा सेर को नहीं पहुंच सकता, येह ही ह़ाल रोज़ा, नमाज़ और सारी इ़बादात का है । जब मस्जिदे नबवी की नमाज़ दूसरी जगह की नमाज़ों से पचास हज़ार गुना (ज़ियादा सवाब वाली) है, तो जिन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब और दीदार पाया उन का क्या पूछना और उन की इ़बादात का क्या कहना ?[8]

मरातिबे सह़ाबा में बाहम फ़र्क़ है फिर येह कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में भी बाहम मरातिब का फ़र्क़ है, जैसे उन में सब से अफ़्ज़ल हस्ती ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की है, फिर दीगर का मक़ाम है, लिहाज़ा उन के बाहमी मरातिब का ख़याल रखना और जिस का जो मक़ाम है, उसे उसी पर रखना और समझना ज़रूरी है। लिहाज़ा येह नारा लगाना ग़लत है कि "अ़ली दा पहला नम्बर" क्यूंकि जो तरतीब ख़ुलफ़ाए राशिदीन की ख़िलाफ़त की है वोही तरतीब उन की फ़ज़ीलत की है तो पहला नम्बर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का है कि वोह ख़िलाफ़त में भी अव्वल हैं और फ़ज़ीलत में भी अव्वल हैं।

उ़लमा व सादात के लिए ह़िफ़्ज़े मरातिब यूं ही सादाते किराम और उ़लमाए दीन का मर्तबा आ़म लोगों से कई गुना ज़ियादा है। इस बारे में जब इमामे अहले सुन्नत आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सुवाल हुवा तो आप ने जो जवाब इरशाद फ़रमाया, उस का ख़ुलासा आसान लफ़्ज़ों में येह है : उ़लमाए किराम और सादाते उ़ज़्ज़ाम को अल्लाह पाक ने रुत्बा व तरजीह़ दी है तो उन्हें आ़म मुसलमानों से ज़ियादा इ़ज़्ज़त देना शरीअ़त का ह़ुक्म मानना और ह़क़दार को उस का पूरा ह़क़ देना है। अल्लाह पाक फ़रमाता है : ﴿قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तुम फ़रमाओ : क्या इ़ल्म वाले और बे इ़ल्म बराबर हैं ?[9] जब अल्लाह पाक ने आ़लिमों और जाहिलों को एक मर्तबे में नहीं रखा तो मुसलमानों पर भी लाज़िम है कि उन में फ़र्क़ रखें। उ़लमाए किराम को महाफ़िल में मर्कज़ी, नुमायां और इ़ज़्ज़त की जगह बिठाना भी इसी बात से तअ़ल्लुक़ रखता है और मुसलमानों में येह अ़मल शुरूअ़ से अब तक राइज है, येह शरीअ़त और उ़र्फ़ व आ़दत हर दो लिहाज़ से पसन्दीदा और मत़लूब है।[10]

इम्तियाज़ी मक़ामो मर्तबा त़लब न किया जाए याद रहे कि सादाते किराम और उ़लमाए दीन ब ज़ाते ख़ुद अपने लिए इम्तियाज़ी सुलूक का मुत़ालबा न करें, ऊंची और नुमायां कुर्सी पर बैठने की ख़्वाहिश न करें। इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़रमान का ख़ुलासा है कि उ़लमा व सादात को येह नाजाइज़ व ममनूअ़ है कि ख़ुद अपने लिए सब से इम्तियाज़ चाहें और अपने नफ़्स को दूसरे मुसलमानों से बड़ा जानें कि येह तकब्बुर है और तकब्बुर ज़बरदस्त बादशाह अल्लाह पाक के सिवा किसी को लाइक़ नहीं, बन्दे के ह़क़ में गुनाहे अक्बर है। इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या मुतकब्बिरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है ?[11] जब सब उ़लमा के आक़ा, सब सादात के जद्दे अमजद हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्तिहा दर्जे की तवाज़ोअ़ फ़रमाते, कहीं ठहरने, बैठने, खाने और लोगों के साथ चलने वग़ैरा किसी मुआ़मले में ह़ाज़िरीन पर तरजीह़ का मुत़ालबा न फ़रमाते तो दूसरे की क्या ह़क़ीक़त है मगर मुसलमानों को येही ह़ुक्म है कि सब से ज़ियादा उ़लमाए किराम व सादाते उ़ज़्ज़ाम को इ़ज़्ज़त व तरजीह़ दें, येह ऐसा है कि किसी शख़्स का लोगों से अपने सामने खड़े रहने का मुत़ालबा करना जाइज़ नहीं जब कि लोगों का ख़ुद से किसी क़ाबिले ताज़ीम मज़हबी शख़्सिय्यत के लिए खड़ा होना पसन्दीदा है।[12]

येह भी वाज़ेह़ रहे कि जब मुसलमान किसी आ़लिम व सय्यिद साह़िब वग़ैरा के साथ इ़ज़्ज़तो एह़तिराम से पेश आएं और उन्हें दूसरों पर तरजीह़ व फ़ौक़िय्यत दें तो अब उन ह़ज़रात का इस इ़ज़्ज़त व तरजीह़ को क़बूल करना मन्अ़ नहीं। चुनान्चे, मौलाए काइनात ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप किसी के हां तशरीफ़ ले गए, साह़िबे ख़ाना ने आप के लिए एक बिछौना बिछाया तो आप उस पर बैठ गए और इरशाद फ़रमाया : لَایَاْبَی الْکَرَامَۃَ اِلَّا الْاَحْمَارُ यानी इ़ज़्ज़त व तौक़ीर का इन्कार कोई गधा ही करेगा।[13]

ख़ुलासा येह कि जो अकाबिर हैं, बड़े हैं, अल्लाह पाक ने उन्हें बड़ाई दी है, मक़ामो मर्तबे से नवाज़ा है तो हमें भी उन्हें दूसरों के मुक़ाबले में ज़ियादा इ़ज़्ज़तो एह़तिराम देना चाहिए। दीन व शरीअ़त भी येही बताते सिखाते हैं, ज़माने का रवाज, बा शुऊ़र लोगों की आ़दात और अ़क़्ले इन्सानी सब का भी येही तक़ाज़ा है।

---

(1) بخاری، 4/174، حدیث:6262 (2) مراٰۃ المناجیح،6/370 (3) ترمذی، 3/369، حدیث:1926 (4) ابن ماجہ، 4/208، حدیث:3712-احیاء العلوم، 2/719 (5) کنز العمال، ج6، 3/268، حدیث:17142 (6) مشکاۃ المصابیح، 1/57، حدیث:193 (7) بخاری، 2/522، حدیث:3673 (8) مراٰۃ المناجیح، 8/335 (9) پ23، الزمر:9 (10) فتاویٰ رضویہ، 23/718 (11) پ24، الزمر:60 (12) فتاویٰ رضویہ، 23/719 ملخصاً (13) مقاصد حسنہ، ص469، حدیث:1317۔

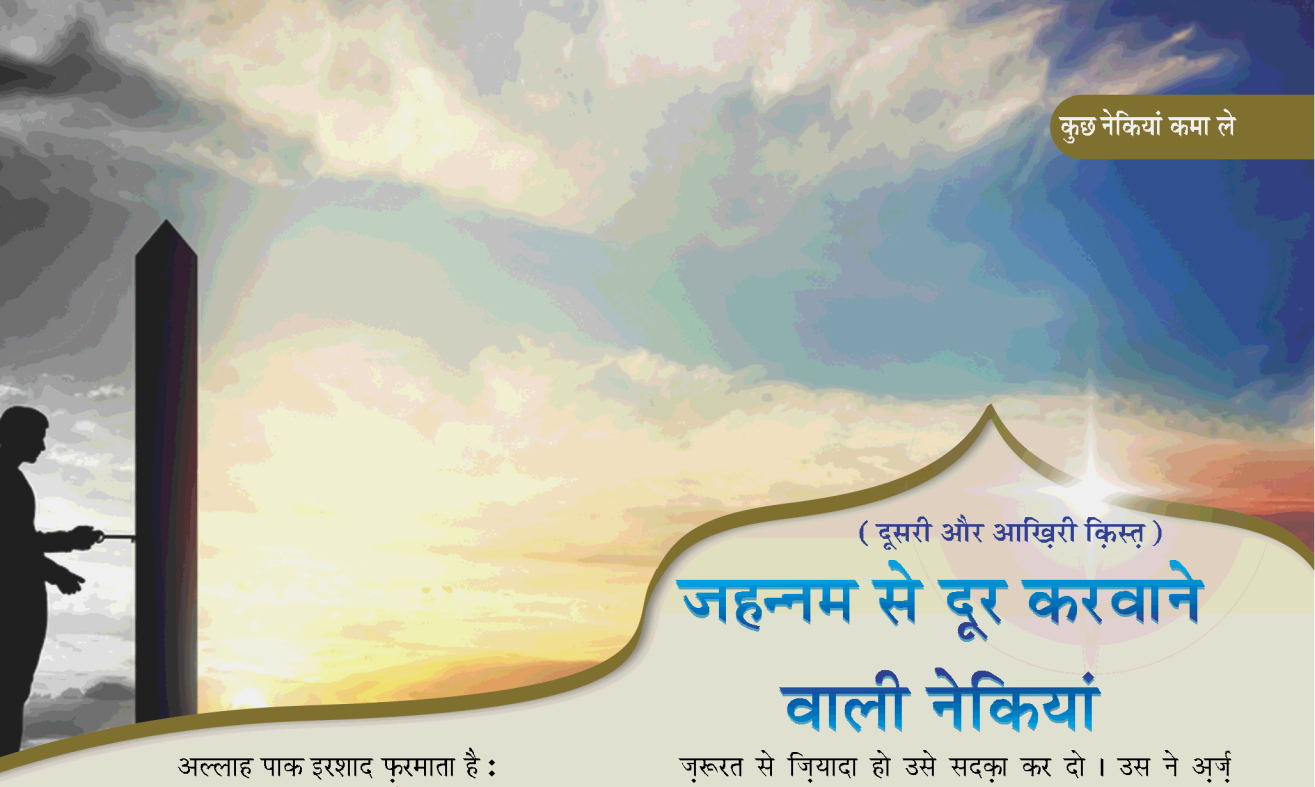

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

जहन्नम से दूर करवाने वाली नेकियां

अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो जिसे आग से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो वोह कामयाब हो गया ।[1] मुत्तक़ी लोग जहन्नम से बचा लिए जाएंगे और ज़ालिमों को जहन्नम में डाल दिया जाएगा, चुनान्चे, अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है :

﴿ثُمَّ نُنَجِّی الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَّ نَذَرُ الظّٰلِمِیْنَ فِیْهَا جِثِیًّا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम डर वालों को बचा लेंगे और ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे ।[2] जहन्नम से नजात दिलाने वाली नेकियों के मुतअ़ल्लिक़ 8 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िए :

1 दोज़ख़ से दूर करवाने वाली 5 मुख़्तलिफ़ नेकियां

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक देहाती ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मुझे ऐसे अ़मल की ख़बर दीजिए जो मुझे जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर कर दे । रसूले रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या इन दोनों (यानी जन्नत व जहन्नम) ने तुम्हें अ़मल पर उभारा है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां । इरशाद फ़रमाया : तुम इन्साफ़ वाली बात कहो और जो चीज़ ज़रूरत से ज़ियादा हो उसे सदक़ा कर दो । उस ने अ़र्ज़ की : मैं हर वक़्त इन्साफ़ की बात कहने और ज़रूरत से ज़ाइद माल को सदक़ा करने की ताक़त नहीं रखता । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों को खाना खिलाओ और सलाम को फैलाओ । उस ने अ़र्ज़ की : येह भी बहुत मुश्किल है । इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हारे पास ऊंट हैं ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां । इरशाद फ़रमाया : अपने ऊंटों में से बोझ उठाने के क़ाबिल एक ऊंट और पानी का मश्कीज़ा लो, और फिर ऐसा घराना ढूंडो जो एक दिन छोड़ कर दूसरे दिन पानी पीता हो, उसे पानी पिलाओ, तो शायद तेरे ऊंट के हलाक होने और तेरे मश्कीज़े के फटने से पहले ही तेरे लिए जन्नत वाजिब हो जाए । फिर वोह देहाती तक्बीर (यानी अल्लाहु अक्बर) कहता हुवा चला गया, तो उस के ऊंट के हलाक होने और मश्कीज़ा फटने से पहले ही उसे शहीद कर दिया गया ।[3]

2 फ़ज्र व मग़रिब के बाद सात सात मरतबा कहिए !

"जब तुम मग़रिब की नमाज़ पढ़ लो तो सात मरतबा कहो اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ अगर तुम ने येह कह लिया और उसी रात अगर तुम्हारा इन्तिक़ाल हो गया तो तुम्हारे लिए आग से आज़ादी लिख दी जाएगी । फिर फ़रमाया :

जब तुम फ़ज्र की नमाज़ अदा कर लो तो सात मरतबा इसी त़रह़ कहो। अगर उसी दिन तुम्हारा इन्तिक़ाल हो गया तो (भी) तुम्हारे लिए जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाएगी।''[4]

3 जहन्नम से आज़ादी दिलाने वाले कलिमात

जिस ने सुब्ह़ या शाम (एक मरतबा) येह कहा :

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ، وَجَمِيعَ خَلْقِكَ أَنَّكَ أَنْتَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ

अल्लाह पाक उस के एक चौथाई ह़िस्से को जहन्नम से आज़ाद कर देता है, जो दो मरतबा इन कलिमात को कहे, उस के निस्फ़ यानी आधे ह़िस्से को जहन्नम से आज़ाद कर देता है, जो तीन मरतबा कहे उस के तीन चौथाई ह़िस्से को जहन्नम से आज़ाद कर देता है और अगर किसी ने चार मरतबा येह कलिमात कहे तो अल्लाह पाक उस के पूरे जिस्म को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देता है।[5]

4 सौ मरतबा दुरूदे पाक

''जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर 10 मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह पाक उस पर सौ (100) रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सौ (100) मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान निफ़ाक़ से छुटकारा और जहन्नम की आग से आज़ादी दोनों चीज़ें लिख देता है और उसे क़ियामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।''[6]

5 ह़ुसूले सवाब के लिए 7 साल अज़ान देना

''जो शख़्स सिर्फ़ सवाब ह़ासिल करने के लिए सात साल अज़ान कहे उस के लिए दोज़ख़ से आज़ादी लिखी जाती है।''[7]

6 जमाअ़त के साथ फ़ज्र और इशा की नमाज़ें अदा करना

''जिस ने फ़ज्र व इशा की नमाज़ बा जमाअ़त पढ़ी और जमाअ़त से कोई भी रक्अ़त फ़ौत न हुई तो उस के लिए दो आज़ादियां लिख दी जाती हैं, जहन्नम से आज़ादी और निफ़ाक़ (यानी मुनाफ़क़त) से आज़ादी।''[8]

7 ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब बहने वाले आंसू का मर्तबा

''जिस मोमिन की आंख से अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से आंसू बह जाए अगर्चे वोह मख्खी के सर के बराबर हो और फिर वोह आंसू उस के रुख़्सार पर पहुंच जाए तो अल्लाह पाक उसे जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा।''[9]

8 तक्बीरे ऊला के साथ 40 दिन बा जमाअ़त नमाज़

''जो कोई अल्लाह पाक के लिए चालीस दिन **''तक्बीरे ऊला''** के साथ बा जमाअ़त नमाज़ पढ़े उस के लिए दो आज़ादियां लिखी जाएंगी, (जहन्नम की) आग से आज़ादी और निफ़ाक़ (यानी मुनाफ़क़त) से आज़ादी।''[10] याद रखिए ! तक्बीरे ऊला नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त कही जाने वाली सब से पहली तक्बीर को कहते हैं, इस को तक्बीरे तह़रीमा भी कहा जाता है। इस ह़दीसे पाक के तह़त ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه लिखते हैं : यानी इस अ़मल (यानी चालीस दिन बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने) की बरकत से येह शख़्स दुन्या में मुनाफ़िक़ीन के आमाल से मह़फ़ूज़ रहेगा, इसे इख़्लास नसीब होगा, क़ब्रो आख़िरत में अ़ज़ाब से नजात पाएगा। तक्बीरे तह़रीमा पाने के माना येह हैं कि इमाम की क़िराअत शुरूअ़ होने से पहले मुक़्तदी ''سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ'' (मुकम्मल) पढ़ ले।[11] बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 571 पर है : (इमाम के साथ) पहली रक्अ़त का रुकूअ़ मिल गया, तो तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत पा गया।[12] अल्लाह पाक हमें जहन्नम से नजात के लिए मज़्कूरा नेकियों पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1)پ4، آل عمرٰن:185(2)پ16، مریم:72(3)معجم کبیر، 19/ 187، حدیث:422(4)ابوداؤد، 4/ 415، حدیث:5079(5)ابوداؤد، 4/ 412، حدیث:5069(6)معجم اوسط، 5/ 252، حدیث:7235(7)ترمذی، 1/ 248، حدیث:206(8)شعب الایمان، 3/ 62، حدیث:2875(9)ابن ماجہ، 4/ 467، حدیث:4197(10)ترمذی، 1/ 274، حدیث:241(11)مراٰۃ المناجیح، 2/ 211(12)فتاوی عالمگیری، 1/ 69۔

अह़कामे तिजारत

1 ग्राफ़िक्स डिज़ाइनर का जानदारों की डीजीटल तसावीर बना कर देना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम ग्राफ़िक्स डिज़ाइनिंग का काम करते हैं, लोग हम से मुख़्तलिफ़ अश्या डिज़ाइन करवाते हैं, बाज़ औक़ात हमें जानदारों की तसावीर बनाने का ऑर्डर भी मिलता है और कस्टमर के मुतअ़ल्लिक़ हमें येह कन्फ़र्म नहीं होता कि वोह बाद में इस का प्रिन्ट निकलवाएगा या प्रिन्ट निकलवाए बिग़ैर महज़ डीजीटल प्लेट फ़ॉर्म पर ही इस का इस्तिमाल करेगा तो क्या हमारा ऐसे शख़्स को जानदारों की तसावीर वाली अश्या बना कर देना जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : डीजीटल तस्वीर शरअ़न तस्वीर के हुक्म में नहीं है लिहाज़ा पूछी गई सूरत में जब आप को येह कन्फ़र्म नहीं है कि कस्टमर जानदार की तस्वीर का प्रिन्ट निकालेगा तो आप का तस्वीरों पर ग्राफ़िक्स का काम करना जाइज़ है, अलबत्ता जिन तसावीर में बे ह़याई, बे पर्दगी और दीगर ग़ैर शरई उमूर हों तो उन तस्वीरों का अगर्चे प्रिन्ट न भी निकाला जाए लेकिन ग़ैर शरई उमूर पर मुश्तमिल होने की वजह से उन पर ग्राफ़िक्स का काम करना जाइज़ नहीं ।

मासिय्यत जब ऐन शै के साथ क़ाइम हो मगर गुनाह के लिए मुतअ़य्यन न हो तो महज़ शक की बिना पर उस शै का बेचना मन्अ़ नहीं जैसा कि हिदाया में है :

وان کان لا یعرف انه من اهل الفتنة لا باس بذلك، لانه یحتمل ان لا یستعمله فی الفتنة فلا یکره بالشك

यानी : जिस शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ येह मालूम न हो कि येह अहले फ़ितना में से है तो उसे ऐसी चीज़ बेचने में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि मुमकिन है वोह उसे फ़ितना परवरी के कामों में इस्तिमाल न करे लिहाज़ा महज़ शक की बिना पर ऐसे शख़्स को मज़्कूरा चीज़ बेचना मकरूह नहीं ।

(الہدایہ، 6/506)

इसी त़रह़ अफ़्यून बेचने से मुतअ़ल्लिक़ इमामे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं : "अफ़्यून नशे की ह़द तक खाना ह़राम है और इसे बैरूनी इलाज मसलन ज़माद व त़िला में इस्तिमाल करना या ख़ुर्दनी माजूनों में इतना क़लील ह़िस्सा दाख़िल करना कि रोज़ की क़दर शरबत नशे की ह़द तक न पहुंचे तो जाइज़ है और **जब वोह मासिय्यत के लिए मुतअ़य्यन नहीं तो उस के बेचने में ह़रज नहीं ।**"

(फ़तावा रज़विय्या, 23 / 574)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 ऑन लाइन आर्डर लेने के बाद फ़ोज़न आइटम तय्यार कर के बेचना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले में कि आज कल देहली में एक ऑन लाइन काम बहुत आ़म हो रहा है जिस में वाट्स एप और फ़ेसबुक वग़ैरा के ज़रीए़ मुख़्तलिफ़ अक़्साम की Frozen यानी बिग़ैर फ़्राई शुदा मुख़्तलिफ़ अक़्साम के समोसे रोल वग़ैरा की तशहीर की जाती है और

ऑन लाइन ऑर्डर आने पर उन्हें घर पर तय्यार कर के बेचा जाता है जब कि ऑर्डर आने के वक़्त बाज़ औक़ात तय्यार माल हमारे पास नहीं होता तो इस ह़वाले से शरई हुक्म क्या है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में Frozen यानी बिग़ैर फ़्राई शुदा मुख़्तलिफ़ अक़्साम के समोसे रोल वग़ैरा की सोशल मीडिया पर तशहीर करना और ऑन लाइन ऑर्डर आने पर उसे बेचना जाइज़ है अगर्चे ऑन लाइन ऑर्डर लेते वक़्त तय्यार माल मिल्किय्यत में मौजूद न हो क्यूंकि येह "बैए़ इस्तिस्नाअ़" है जो ख़िलाफ़े क़ियास जाइज़ है, इस की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है।

ऑर्डर पर चीज़ बनवाने को फ़िक़्ही इस्तिलाह़ में "बैए़ इस्तिस्नाअ़" कहते हैं येह हर उस चीज़ में जाइज़ है जिसे उ़मूमन ऑर्डर पर बनवाया जाता हो, जब कि ऑर्डर देते वक़्त उस चीज़ की क़ीमत, मिक़्दार, जिन्स, नौअ़ वग़ैरा तमाम चीज़ें इस त़रह़ वाज़ेह़ हों कि बाद में तनाज़ोअ़ न हो सके।

सय्यिदी आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه "बैए़ इस्तिस्नाअ़" से मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "किसी से कोई चीज़ इस त़रह़ बनवाना कि वोह अपने पास से उतनी क़ीमत को बना दे येह सूरत इस्तिस्नाअ़ कहलाती है कि अगर उस चीज़ के यूं बनवाने का उ़र्फ़ जारी है और उस की क़िस्म व सिफ़त व ह़ाल व पैमाना व क़ीमत वग़ैरह की ऐसी साफ़ तसरीह़ हो गई है कि कोई जहालत आइन्दा मुनाज़अ़त के क़ाबिल न रहे येह अ़क़्द शरअ़न जाइज़ होता है और इस में बैए़ सलम की शर्तें मसलन रुपिया पेशगी उस जल्से में दे देना या उस का बाज़ार में मौजूद रहना या मिस्ली होना कुछ ज़रूर नहीं होता।" (फ़तावा रज़विय्या, 17 / 597)

नोट : डिलीवरी का मक़ाम और डिलीवरी चार्जिज़ कितने होंगे ? या फ़्री डिलीवरी है ? इसे भी ऑर्डर के वक़्त ही तै कर लिया जाए।

وَاللهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 तिजारती कामों के लिए वेब साइट बना कर देना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि हम शराब वग़ैरा ह़राम चीज़ों की वेब साइट तो नहीं बनाते अलबत्ता ऐसा होता है कि कस्टमर को ट्रेडिंग के लिए कोई वेब साइट बना कर दे देते हैं जिस पर कस्टमर अपनी चीज़ें रख कर बेचेगा, हमें इस बात का इ़ल्म नहीं होता कि वोह किन चीज़ों को अपनी वेब साइट पर लगाएगा इस में हम न तो चीज़ें रखते हैं न ही कोई तस्वीर वग़ैरा लगाते हैं लेकिन कस्टमर ख़ुद ही बाद में उस पर नाजाइज़ तसावीर लगा देता है या कोई नाजाइज़ प्रोडक्ट बेचता है तो क्या हम भी गुनहगार होंगे ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप कस्टमर को फ़क़त़ तिजारती कामों के लिए वेब साइट बना कर दे रहे हैं और बनाते वक़्त भी इस का मासिय्यत के लिए इस्तिमाल होना मुतअ़य्यन नहीं है कि वोह इसे नाजाइज़ प्रोडक्ट की फ़रोख़्त के लिए इस्तिमाल करेगा लिहाज़ा आप का कस्टमर को ऐसी तिजारती वेब साइट बना कर देना, जाइज़ है, अब अगर वोह अपनी उस वेब साइट पर बे पर्दा औ़रतों की तसावीर के ज़रीए़ प्रोडक्ट की तशहीर करे या कोई नाजाइज़ चीज़ बेचे तो आप इस में गुनहगार नहीं होंगे, येह ऐसा ही है कि जैसे कोई शख़्स छुरी चाक़ू वग़ैरा अ़वाम को फ़रोख़्त करे जिन के मुतअ़ल्लिक़ येह मालूम नहीं कि वोह इसे सब्ज़ी वग़ैरा काटने में इस्तिमाल करेंगे या मुसलमानों को ईज़ा पहुंचाने के लिए इस्तिमाल करेंगे, हां अगर पहले से ही येह मालूम है कि वोह कस्टमर उस वेब साइट को नाजाइज़ कामों के लिए इस्तिमाल करेगा तो अब आप के लिए उस कस्टमर को वेब साइट बना कर देना गुनाह के काम में बराहे रास्त मुआ़वनत करना होगा जो कि जाइज़ नहीं, येह ऐसा ही होगा कि कोई शख़्स फ़ितना व फ़साद करने वाले लोगों के हाथ हथियार बेचे ह़ालांकि येह बात मालूम है कि येह लोग उन हथियारों को क़त्लो ग़ारत गिरी के लिए इस्तिमाल करेंगे।

وَاللهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

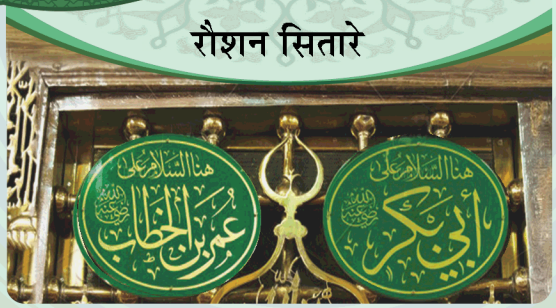

फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ उम्मत के निगेहबान

हुकूमत और सल्तनत को ब हुस्नो ख़ूबी और कामयाबी से चलाने के लिए एक ह़ाकिम को जिन बातों और कामों का ख़याल रखना ज़रूरी होता है उन में से एक काम अपनी रिआ़या के अह़वाल की ख़बरगीरी रखना है, कहते हैं कि जिस त़रह़ दूध पिलाने वाली अपने बच्चे की देखभाल करती है यूंही बादशाह को चाहिए कि वोह अपनी अ़वाम की देखभाल करे, ख़लीफ़ए सानी ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे शुमार ख़ूबियों में से एक ख़ूबी येह भी थी कि आप जहां दिन के वक़्त लोगों से मुलाक़ात कर के उन के मसाइल ह़ल फ़रमाते वहीं रात को रिआ़या के मुआ़मलात की देखभाल भी किया करते थे, आइए इसी मुनासिबत से चन्द वाक़िआ़त पढ़िए।

उम्मते मुह़म्मदिया के लिए फ़िक्र मन्द रहते एक मरतबा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने में क़ह़त़ पड़ा आप का ज़मानए क़ह़त़ से पहले भी येही मामूल रहता था कि आप लोगों को इ़शा की नमाज़ पढ़ाते फिर घर में दाख़िल हो जाते और रात देर तक नमाज़ पढ़ते रहते फिर बाहर निकलते और रास्तों की त़रफ़ आ जाते और चक्कर लगाते रहते, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक रात सह़र के वक़्त मैं ने उन्हें येह दुआ़ करते सुना : ऐ अल्लाह ! तू उम्मते मुह़म्मदिया को मेरी ख़िलाफ़त में और मेरे सामने हलाकत से दोचार न करना।[1]

मस्जिद में लोगों से पूछगछ ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़शा की नमाज़ के बाद मस्जिद की त़रफ़ बार बार आते और किसी को वहां रहने न देते थे हां ! अगर कोई शख़्स नमाज़ पढ़ रहा होता तो उसे मस्जिद में ही रहने देते एक मरतबा मस्जिद में ह़ज़रते उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ कुछ लोग मौजूद थे कि ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ तशरीफ़ ले आए, आप ने ह़ज़रते उबय बिन कअ़ब से पूछा : येह कौन हैं ? ह़ज़रते उबय बिन कअ़ब ने जवाब दिया : आप के ख़ानदान के कुछ लोग हैं। आप ने सब से पूछा : तुम लोग किस वजह से नमाज़े इ़शा के बाद (मस्जिद में) ठहरे हुए हो ? लोगों ने कहा : हम यहां बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र कर रहे हैं, जवाब सुन कर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उन के साथ बैठ गए, फिर एक एक शख़्स के पास जाते और उस से कहते कि मेरे लिए दुआ़ करो तो वोह ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिए दुआ़ कर देता, आख़िर में एक शख़्स के पास पहुंच कर दुआ़ करने का कहा तो वोह दुआ़ करने में झिजकने लगा, येह देख कर आप ने फ़रमाया : सिर्फ़ इतनी ही दुआ़ कर दो कि ऐ अल्लाह हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हम पर रह़म फ़रमा, फिर आप ने ख़ुद दुआ़ शुरूअ़ कर दी, येह देख कर सब पर रिक़्क़त त़ारी हो गई उस वक़्त ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से ज़ियादा रो रहे थे।[2]

मश्कीज़ा ख़ुद उठा लिया एक मरतबा ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त निगेहबानी फ़रमा रहे थे कि एक औ़रत को देखा जो एक मश्कीज़ा उठाए जा रही थी, आप ने उस औ़रत से मश्कीज़े के बारे में पूछा तो वोह कहने लगी : घर में बच्चे हैं और कोई ख़ादिम नहीं है दिन में बाहर निकलना अच्छा नहीं लगता इस लिए रात को निकलती हूं और घर वालों के लिए पानी ले आती हूं, आप ने उस औ़रत का मश्कीज़ा ख़ुद उठा लिया और उस के घर तक पहुंचा दिया और फ़रमाया : सुब्ह़ उ़मर के पास चली जाना वोह तुम्हें एक ख़ादिम दे देंगे, वोह औ़रत कहने लगी : ह़ज़रते उ़मर तक रसाई नहीं है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

फ़रमाया : अल्लाह पाक ने चाहा तो तुम्हारी उन तक रसाई हो जाएगी, सुब्ह हुई और वोह औ़रत ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म के पास पहुंची तो उस ने पहचान लिया कि रात उस का मश्कीज़ा उठाने वाले कोई और नहीं बल्कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म ख़ुद थे येह देख कर मुड़ी और वापस चली गई, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के पीछे किसी को भेजा और उस औ़रत को कुछ नान नफ़्क़ा और एक ख़ादिम देने का हुक्म फ़रमा दिया।[3]

बूढ़ी ख़ातून से दुआ करवाई एक मरतबा फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त निगरानी कर रहे थे कि एक घर में चराग़ जलते हुए देखा आप उस के क़रीब गए तो देखा कि एक बूढ़ी औ़रत ऊन को धुंक रही थी ताकि उसे काते और धागा बनाए और येह अश्आ़र पढ़ती जा रही थी :

عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَاةُ الْأَبْرَارْ
صَلَّى عَلَيْكَ الْمُصْطَفَوْنَ الْأَخْيَارْ
قَدْ كُنْتَ قَوَّامًا بِكَيِّ الْأَسْحَارْ
يَا لَيْتَ شِعْرِى وَالْمَنَايَا أَطْوَارْ
هَلْ تَجْمَعُنِى وَحَبِيبِى الدَّارْ

मुह़म्मदे (अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर नेक लोगों की त़रफ़ से दुरूद हो, मुत्तक़ियों और परहेज़ागारों की जानिब से (या रसूलल्लाह) आप पर दुरूद हो, आप (रातों को) बहुत ज़ियादा नमाज़ें पढ़ने वाले थे ब वक़्ते सह़र ख़ूब रोने वाले थे, मौत की मुख़्तलिफ़ ह़ालतें हैं ऐ काश ! मुझे (किसी त़रह़) मालूम हो जाता कि क्या अल्लाह मुझे और मेरे प्यारे ह़बीब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक घर (जन्नत) में एक साथ रखेगा। ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ ने येह अश्आ़र सुने तो वहीं बैठ गए और रोना शुरूअ़ कर दिया फिर रोते रोते घर का दरवाज़ा खट खटाया, अन्दर से पूछा गया : कौन है ? आप ने जवाब दिया : उ़मर बिन ख़त्ताब ! अन्दर से फिर आवाज़ आई : अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ को मुझ से क्या काम ? और रात की इस घड़ी में अमीरुल मोअमिनीन मेरे पास क्यूं आए हैं ? आप ने फ़रमाया : अल्लाह आप पर रह़म करे ! दरवाज़ा खोलिए, कोई परेशानी की बात नहीं, उस बूढ़ी औ़रत ने दरवाज़ा खोल दिया, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्दर दाख़िल हो गए, फिर इरशाद फ़रमाया : जो अश्आ़र आप ने अभी पढ़े थे वोह मेरे सामने दोहराइए, बूढ़ी औ़रत ने अश्आ़र पढ़ना शुरूअ़ कर दिए जब आख़िरी मिस्रअ़ هَلْ تَجْمَعُنِى وَحَبِيبِى الدَّارْ पढ़ा तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ ने फ़रमाया : मैं चाहता हूं कि आप इस आख़िरी शेर में मुझे दाख़िल कर लें (यानी जन्नत में प्यारे नबी की रफ़ाक़त पाने में मुझे भी शरीक कर लें) बूढ़ी ख़ातून ने फ़ौरन अगला मिस्रअ़ कहा : وَ عُمَرَ فَاغْفِرْ لَهٗ يَا غَفَّارْ (यानी मौत की मुख़्तलिफ़ ह़ालतें हैं ऐ काश ! किसी त़रह़ मुझे मालूम हो जाता कि क्या अल्लाह मुझे, उ़मर को और मेरे प्यारे ह़बीब नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक घर (जन्नत) में एक साथ रखेगा, ऐ बख़्शने वाली पाकीज़ा ज़ात ! उ़मर को बख़्श दे) येह दुआ़इया कलिमात सुन कर ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ राज़ी ब ख़ुशी लौट गए।[4]

आयत सुनकर बीमार हो गए एक मरतबा फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त निगेहबानी के लिए बाहर तशरीफ़ लाए, आप का गुज़र एक अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से हुवा वोह सूरए त़ूर की तिलावत कर रहे थे जिसे सुनकर आप अपनी सुवारी से नीचे उतर आए और एक दीवार से टेक लगा कर कुछ देर ठहरे रहे फिर अपने घर लौट आए और एक महीने तक बीमार रहे लोग आप की इ़यादत के लिए तशरीफ़ लाए लेकिन बीमारी का सबब न जान पाए।[5]

शह़ादत मुसलमानों के इस अ़ज़ीम ख़लीफ़ा को 26 ज़ुल ह़िज्जा बुध के दिन शदीद ज़ख़्मी कर दिया गया जबकि यकुम मुह़र्रम शरीफ़ 24 हिजरी इतवार को रौज़ए रसूल में आप की तदफ़ीन हुई, आप की ख़िलाफ़त 10 साल 6 महीने रही।[6]

---

(1)انساب الاشراف، 10/384(2)وفاء الوفا باخبار دار المصطفیٰ، 2/198
(3)سراج الملوک للطرطوشی، ص527(4)زہد لابن المبارک، ص360، رقم:1024-
نسیم الریاض، 4/428(5)محض الصواب، ص397 ملخصًا (6)طبقات ابن سعد، 3/278-مراٰۃ المناجیح، 7/204-

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला رضی اللہ عنہما

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की बारगाह में जिन ख़ुश नसीब बच्चों ने ह़ाज़िरी दी उन में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला رضی اللہ تعالٰی عنہما भी शामिल हैं, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ की विलादत 4 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा में हुई, रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رضی اللہ تعالٰی عنہ 7 साल के थे, आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हुज़ूरे अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم से अह़ादीस भी रिवायात की हैं, आप का शुमार कम सिन सह़ाबा में होता है।[1]

वालिदे माजिद का जलीलुल क़द्र रुत्बा आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ग़सीलुल मलाइका ह़ज़रते ह़न्ज़ला رضی اللہ تعالٰی عنہ के लख़्ते जिगर हैं जो शव्वाल 3 हिजरी ग़ज़्वए उह़ुद में शहीद हुए और फ़िरिश्तों ने इन्हें ग़ुस्ल दिया था। हुवा यूं कि ह़ज़रते ह़न्ज़ला जंगे उहुद की रात अपनी बीवी के पास थे, आप को ग़ुस्ल की ह़ाजत थी लेकिन जब जंग के लिए बुलाया गया तो आप उसी ह़ालत में जंग में शरीक हो कर शहीद हो गए, आप के जज़्बए जंग और रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के फ़रमान पर फ़ौरन लब्बैक कहने पर आप को येह फ़ज़ीलत मिली कि शहादत के बाद फ़िरिश्तों ने आप को ग़ुस्ल दिया, यूं आप को "**ग़सीलुल मलाइका**" का लक़ब मिला और आप के बाद आप की औलाद को भी बनू ग़सीलुल मलाइका कहा जाने लगा।[2]

रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को ऊंटनी पर त़वाफ़ करते देखा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला رضی اللہ تعالٰی عنہما ने कम सिनी के जिन लम्ह़ात में रसूले करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ज़ियारत की या सोह़बत पाई उन लम्ह़ात को आप के दिलो दिमाग़ ने मह़फ़ूज़ कर लिया था चुनान्चे एक यादगार वाक़िआ़ बयान करते हुए आप رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को ऊंटनी पर त़वाफ़ करते देखा है, उस वक़्त न तो किसी को मारा गया, न धक्का दिया गया और न ही "**हट जाओ, हट जाओ**" की आवाज़ें थीं।[3]

बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला का मक़ाम ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما कहते हैं कि एक मरतबा बारगाहे फ़ारूक़ी में कुछ लिबास लाए गए, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने उन को लोगों में बांटना शुरूअ़ किया, तक़्सीम के दौरान एक बहुत ही नफ़ीस और उ़म्दा पोशाक सामने आई तो ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने वोह पोशाक अपनी रान के नीचे रख ली (और किसी को नहीं दी)। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما कहते हैं कि तक़्सीम में जब मेरा नाम लिया गया तो मैं ने कहा : आप मुझे वोही पोशाक दे दीजिए, इस पर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम ! मैं येह पोशाक उस शख़्स को दूंगा जो तुम से बेहतर है और उस का बाप तुम्हारे बाप से बेहतर है, फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला رضی اللہ تعالٰی عنہما को बुलवाया और वोह उ़म्दा पोशाक उन्हें पहना दी।[4]

शहादत आप رضی اللہ تعالٰی عنہ ने 59 साल की उ़म्र में वाक़िअ़ए ह़र्रह 27 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम 63 हिजरी बुध के दिन मदीनए मुनव्वरा में शहादत पाई।[5]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِیْن بِجَاہِ خاتَمِ النّبیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)الاصابہ فی تمییز الصحابہ، 4/58 (2)دیکھئے: شرح الزرقانی علی المواہب، 2/408، 409- تاریخ ابن عساکر، 27/422- طبقات ابن سعد، 5/49 (3)کنز العمال، جزء5، 3/66، رقم: 12493 (4)مصنف ابن ابی شیبہ، 17/244، رقم: 32990 (5)دیکھئے: تاریخ ابن عساکر، 27/432- الاصابہ فی تمییز الصحابہ، 4/58۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए !

मुह़र्रमुल ह़राम इस्लामी साल का पहला महीना है । इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से मज़ीद 11 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

फ़ौत याफ़्तगान त़ाऊ़ने अ़मवास : ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में एक क़ौल के मुत़ाबिक़ मुह़र्रम और सफ़र 17 या 18 हिजरी में बैतुल मुक़द्दस के क़रीबी अ़लाक़े अ़मवास से त़ाऊ़न की वबा फैली, इस में अकाबिर सह़ाबए किराम समेत तक़रीबन 25 हज़ार अफ़राद फ़ौत हुए, जिन में 20 नौजवान आले सख़र और 20 नौजवान आले मुग़ीरा थे, त़ाऊ़ने अ़मवास का शुमार ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के अहम वाक़िआ़त में होता है ।[1]

1 ह़ज़रते अबू ख़ालिद यज़ीद अल ख़ैर बिन अबू सुफ़्यान क़रशी उमवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जामेअ़ इल्मो अ़मल, सिपह सालारे लश्करे इस्लाम, गवर्नरे शाम व फ़िलिस्त़ीन, ह़ज़रते अबू सुफ़्यान के सब से अफ़ज़ल बेटे और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया के भाई थे, आप फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर ईमान लाए और बनू फ़रास से सदक़ात (ज़कात) की वुसूली पर मुक़र्रर हुए, ह़ज 12 हिजरी के बाद शामी लश्कर के अमीर बनाए गए, आप कई अह़ादीस के रावी हैं एक रिवायत के मुत़ाबिक़ आप ने त़ाऊ़ने अ़मवास (मुह़र्रम या सफ़र) 18 हिजरी में विसाल फ़रमाया ।[2]

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

2 सुल्त़ानुल औलिया ह़ज़रते सख़ी सुल्त़ान अ़ब्दुल ह़कीम क़ादिरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पैदाइश 11 रबीउ़ल अव्वल 1075 हिजरी और विसाल 29 मुह़र्रम 1145 हिजरी को हुवा । मज़ार मुबारक शहर अ़ब्दुल ह़कीम ज़िल्अ़ ख़ानेवाल पंजाब में है । आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिमे दीन, मुदर्रिस, सिलसिलए क़ादिरिय्या के शैख़े त़रीक़त और कसीरुल फ़ैज़ हैं ।[3]

3 साह़िबे कमाल बुज़ुर्ग ह़ज़रते पीर फ़रीदुद्दीन शत्त़ारी ख़ानदाने शाह मुह़म्मद ग़ौस ग्वाल्यारी के चश्मो चराग़ और सूफ़िए बा सफ़ा थे, 17 मुह़र्रम 1285 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार मुबारक भोपाल, मध्य प्रदेश हिन्द में है ।[4]

4 आ़लिमे बा अ़मल ह़ज़रते ख़्वाजा सय्यिद नेक आ़लिम शाह बुख़ारी नक़वी चिश्ती की पैदाइश सादात घराने में 1276 हिजरी को हुई, मद्रसा कड़ी शरीफ़ नज़्द संघोई ज़िल्अ़ जेहलम से इल्मे दीन ह़ासिल किया, बैअ़त का शरफ़ मह़बूबे सुब्ह़ानी ख़्वाजा सय्यिद ग़ुलाम ह़ैदर अ़ली शाह जलाल पुरी से पाया फिर ख़िलाफ़त से नवाज़े गए, आप आ़लिमे दीन, ख़ुश इल्ह़ान ख़त़ीब, शैख़े

तरीक़त, आबिदो ज़ाहिद और पाबन्दे शरीअत थे। विसाल 9 मुहर्रम 1347 हिजरी को हुवा, मज़ार मुबारक कोटली सय्यिदां (क़दीम नाम कोटली शिहानी) ज़िल्अ जेहलम में है।[5]

5 ताजुल आरिफ़ीन हज़रते ख़्वाजा गुल मुहम्मद क़ुरैशी कर्ख़ी अहमद पुरी चिश्ती की पैदाइश ऊच शरीफ़ ज़िल्अ बहावलपुर में हुई। आप ने ख़्वाजा क़ाज़ी मुहम्मद आक़िल कोट मठन से बैअत की और ख़िलाफ़त से नवाज़े गए। ज़िक्रुल अस्फ़िया तकमिलए सियरुल औलिया की तालीफ़ की वजह से शोहरत पाई। आप का विसाल 9 मुहर्रम 1243 हिजरी को हुवा। मज़ार मुबारक अहमदपुर शर्क़िया ज़िल्अ बहावलपुर में है।[6]

उलमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

6 सय्यिदुल हुफ़्फ़ाज़ हज़रते इमाम अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबी शैबा बेहतरीन मुहद्दिस, मुफ़स्सिर, मुअर्रिख़ हैं जबकि इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, इमाम अबू दावूद, इमाम नसाई और इमाम इब्ने माजा के उस्ताज़ और मुसन्नफ़े इब्ने अबी शैबा के मुसन्निफ़ हैं। आप का विसाल माहे मुहर्रम 235 हिजरी में हुवा।[7]

7 इमाम अबुल हसन उस्मान बिन मुहम्मद बिन अबी शैबा अबसी सिक़ह और मशहूर हाफ़िज़े हदीस हैं, आप से भी सिहाह सित्ता के मुसन्निफ़ीन में से इमाम तिरमिज़ी رحمۃ اللہ علیہم के इलावा सब ने हदीस रिवायत की है, आप का अहादीस का मज्मूआ बनाम "मुस्नदे उस्मान बिन अबी शैबा" आप की यादगार तस्नीफ़ है। आप का विसाल 3 मुहर्रम 239 हिजरी में हुवा।[8]

8 इमामुल मुहद्दिसीन हज़रते इमाम अबू बक्र मुहम्मद बिन अबान बल्ख़ी हम्दविय्या मुस्तमली इमाम वकीअ बिन जर्राह और इमाम सुफ़्यान बिन उयैना के शागिर्दे ख़ास, इमाम बुख़ारी, इमाम तिरमिज़ी, इमाम अबू दावूद, इमाम नसाई, इमाम अहमद बिन हम्बल और इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा वग़ैरा अकाबिरीन मुहद्दिसीन के उस्दाज़ थे, आप का विसाल 11 मुहर्रम 244 हिजरी बल्ख़ में हुवा और इतवार के दिन आप की तदफ़ीन हुई।[9]

9 शैख़ुल अज़हर अल्लामा हाफ़िज़ मुहम्मद बिन अली शनवानी शाफ़ेई अज़हरी की पैदाइश शनवान, सूबा मनूफ़िया मिस्र में हुई और 24 मुहर्रम 1233 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन तुर्बतुल मुजाविरीन में की गई। आप जामिअतुल अज़हर क़ाहिरा से फ़ारिग़ुत्तह़सील हो कर मुतबह्हिर आलिमे दीन, मुहद्दिस, मुफ़स्सिर, फ़क़ीह, नहवी और माक़ूली बने। मादरे इल्मी में तदरीस करते हुए शैख़ुल अज़हर के ओहदे पर फ़ाइज़ हुए। तसानीफ़ में الجواهرالسنية بمولد خير البرية، ثبت الشنوانی اور حاشية على مختصرالبخاری لابن ابی हम्ज़ा शामिल हैं।[10]

10 ख़ातिमुल मुहक़्क़िक़ीन हज़रते शैख़ उस्मान दिम्याती शाफ़ेई अज़हरी बेहतरीन आलिमे दीन, मुफ़्तिए इस्लाम, सिलसिलए ख़ुलूतिया के शैख़े तरीक़त और उलूमे दीनिय्या के कोहना मश्क़ उस्ताज़ थे, आप ने जामिअतुल अज़हर क़ाहिरा फिर मस्जिदे हराम मक्कए मुकर्रमा में तदरीस करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारी। शैख़ुल इस्लाम अल्लामा सय्यिद अहमद बिन ज़ैनी दहलान मक्की समेत कसीर नामवर उलमा ने शागिर्दी का शरफ़ पाया, आप की पैदाइश 1196 हिजरी को दिमयात मिस्र में हुई और मुहर्रम के आख़िरी दिन 1265 हिजरी को मक्कए मुकर्रमा में विसाल फ़रमाया। तदफ़ीन जन्नतुल माला में की गई।[11]

11 उस्ताज़ुल उलमा हज़रते मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमीनुल हक़ हज़रवी गोलड़वी की पैदाइश शैख़ुल हदीस अल्लामा अब्दुल हक़ पीरज़ई के हां 1360 हिजरी को हुई और विसाल 16 मुहर्रम 1423 हिजरी को हुवा, तदफ़ीन जामिआ मिफ़्ताहुल उलूम हज़्र व ज़िल्अ अटक से मुत्तसिल की गई। आप माहिरे सर्फ़ व नह्व, जामेअ माक़ूलो मन्क़ूल और बेहतरीन मुदर्रिस थे, सारी ज़िन्दगी मज़्कूरा जामिआ की तामीर व तरक़्क़ी में मसरूफ़ रहे।[12]

---

(1)اسد الغابۃ، 6/218، البدایہ والنھایہ، 5/151(2)الاصابۃ فی تمیز الصحابۃ، 6/516(3)ماہنامہ فیضانِ مدینہ اگست 2022ء، ص30(4)تذکرۃ الانساب، ص181(5)فوز المقال فی خلفاء پیر سیال، 8/572تا580(6)تذکرۃ الانساب، 265، تذکرہ اولیائے پاکستان، 2/178تا181(7)سیر اعلام النبلاء، 9/394-398، تقریب التہذیب، ص320(8)تاریخ الاسلام للذہبی، 5/883، تقریب التہذیب، 1/395(9)الھدایۃ والارشاد، 2/639، تہذیب الکمال، 8/492 تا 494 (10)حلیۃ البشر، الجزالثالث، ص1270(11)المختصر من کتاب نشر النور والزھر فی تراجم افاضل مکہ، 336تا337(12)تذکرہ علماء اہل سنت اٹک، ص412، 413، کتبہ قبر۔

सत्तू

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी ग़िज़ाओं में से एक "सत्तू" भी है । सत्तू मुख़्तलिफ़ क़िस्म की अश्या यानी जव, गेहूं, चने, चावल और बाजरा वग़ैरा से बनाया जाता है ।[1] सत्तू को ग़िज़ा के तौर पर खाया जाता है और बतौरे मशरूब पिया भी जाता है । सत्तू ज़ेहन और दिमाग़ को तरो ताज़गी बख़्शता है । सत्तू गर्मी का असर ख़त्म करने के लिए इक्सीर है । सत्तू के मशरूब का इस्तिमाल ज़ियादा तर एश्याई मुमालिक में किया जाता है । इस का ज़ाइक़ा मज़ीद ख़ुश गवार बनाने के लिए इस में चीनी और गुड़ का इस्तिमाल किया जाता है । सत्तू में विटामिन ए, सी, केल्शियम और फ़ौलाद पाया जाता है, यूं येह ग़िज़ाइय्यत से भरपूर ग़िज़ा है । येह तेज़ी से जिस्म में गोश्त की मिक़्दार को बढ़ाता है और जिस्मानी क़ुव्वत में इज़ाफ़ा करता है । मुयस्सर हो तो गर्मियों में इस का ज़रूर इस्तिमाल करना चाहिए ।

सत्तू का मिज़ाज व माहिय्यत हमारे मुल्क में जव और गेहूं का सत्तू कसरत से इस्तिमाल होता है । जो कि सत्तू का मिज़ाज दूसरे दर्जे में सर्द ख़ुश्क होता है । जब कि गेहूं के सत्तू का मिज़ाज पहले दर्जे में गर्म ख़ुश्क है ।[2]

सत्तू से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस कई अह़ादीस में इस मुबारक ग़िज़ा के इस्तिमाल का तज़्किरा मिलता है, मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

1 ह़ज़रते सुवैद बिन नोमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि वोह ख़ैबर के साल निबय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे, जब ख़ैबर से क़रीब मक़ाम सुहबा में पहुंचे तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े अ़स्र पढ़ी और खाने की चीज़ें मंगवाईं, तो सिर्फ़ सत्तू लाए गए । आप ने सत्तू भिगोने का हुक्म दिया, फिर वोह सत्तू आप ने भी खाए और हम ने भी खाए फिर नमाज़े मग़रिब के लिए खड़े हो गए तो आप ने कुल्ली फ़रमाई हम ने भी ऐसे ही किया । फिर नमाज़ पढ़ी और वुज़ू न किया ।[3]

इस ह़दीसे पाक से मालूम होता है कि सत्तू खाने के काम भी आते हैं ।

2 ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का सत्तू और छुवारों से वलीमा फ़रमाया ।[4]

3 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे और आप عَلَیْہِ السَّلَام रोज़े से थे, जब सूरज ग़ुरूब हो गया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने एक शख़्स से फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां ! उठो और हमारे लिए सत्तू घोलो ।" उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! शाम होने दीजिए ।

आप ने फ़रमाया : "उतर कर हमारे लिए सत्तू घोलो।" उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अभी तो दिन बाक़ी है। आप ने फिर फ़रमाया : "उतर कर हमारे लिए सत्तू घोलो।" फिर वोह उतरा और सत्तू घोला। रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सत्तू नोश फ़रमाने के बाद फ़रमाया : "जब देखो कि रात इधर से आ गई है तो रोज़ा इफ़्तार कर लो (येह कहते हुए) आप ने मशरिक़ की जानिब इशारा फ़रमाया।"(5)

4 हज़रते उम्मे बुजैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़बीलए बनू अम्र बिन औफ़ में हमारे पास तशरीफ़ लाया करते और मैं एक प्याले में सत्तू तय्यार कर के पीने के लिए पेश करती।(6)

5 रिवायत में है कि एक दफ़्आ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातूने जन्नत हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के दौलत ख़ाने पर तशरीफ़ फ़रमा थे, "हज़राते हसनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को भूक से बेताब देख कर आप ने फ़रमाया : कौन है जो हम तक कोई चीज़ पहुंचा दे ?" इतने में हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक तश्त में सत्तू, पनीर और घी से तय्यार कर्दा हलवे के साथ दो तली हुई रोटियां ले कर हाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप ने दुआ़ देते हुए इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक तुम्हारे दुन्यावी मुआ़मलात के लिए काफ़ी है और तुम्हारे उख़रवी मुआ़मलात का मैं ख़ुद ज़ामिन हूं।(7)

मुबारक प्याला और सत्तू हज़रते अबू बरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि जब मैं मदीने आया तो हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मेरी मुलाक़ात हुई उन्हों ने मुझ से कहा घर चलो मैं तुम्हें उस प्याले से पिलाऊंगा जिस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नोश फ़रमाया है, मैं उन के साथ गया तो आप ने मुझे सत्तू पिलाया और खजूर भी खिलाई।(8)

सत्तू के तिब्बी फ़वाइद नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन ग़िज़ाओं को तनावुल फ़रमाया वोह तिब्बी फ़वाइद से लबरेज़ थीं, आज तिब्बी माहिरीन इस के फ़वाइद व इलाज बताते हैं, उन ग़िज़ाओं में एक सत्तू भी है, आइए ! सत्तू के चन्द फ़वाइद मुलाहज़ा कीजिए :

❁ सत्तू में प्रोटीन काफ़ी मिक़्दार में पाया जाता है जो जिस्मानी वज़्न को कन्ट्रोल करने में बहुत अहम किरदार अदा करता है ❁ सत्तू के इस्तिमाल से देर तक भूक भी नहीं लगती और पेट के भरे होने का एह़सास रहता है ❁ सत्तू जिस्म की चर्बी को कम करता है ❁ निहार मुंह सत्तू का शर्बत इस्तिमाल करने से मेदे के मुख़्तलिफ़ मसाइल से नजात ह़ासिल होती है ❁ सत्तू के इस्तिमाल से गर्मी की शिद्दत का एह़सास कम होता है ❁ सत्तू में फ़ाइबर भी काफ़ी मिक़्दार में पाया जाता है जो क़ब्ज़ को ख़त्म करने में मदद देता है, इस लिए सत्तू को क़ब्ज़ का बेहतरीन इलाज भी समझा जाता है ❁ सत्तू जिगर की कमज़ोरी को दूर कर के उसे फ़ऊ़आल करता है।(9)

---

(1) خزائن الادویہ، 2/729 (2) خزائن الادویہ، 2/729 (3) بخاری، 1/93، حدیث: 209 (4) ابو داؤد، 3/480، حدیث: 4744 (5) بخاری، 1/640، حدیث: 1941 (6) مسند احمد، 10/329، حدیث: 27221 ملخصاً (7) کنز العمال، جز 13، 7/107، حدیث: 36732 ملخصاً (8) بخاری، 4/518، حدیث: 7342 ملخصاً
(9) ویب سائٹ، ہیلتھ وائز۔

हज़रते इमामे हुसैन رضی اللہ عنہ का ख़ुत्बए मैदाने करबला

यूं तो अहले बैते अत्हार और बिल ख़ुसूस शहज़ादा व नवासए मुस्त़फ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की याद हर दम अहले ईमान के दिलों में ताज़ा होती है लेकिन माहे मुह़र्रमुल ह़राम बिल ख़ुसूस आप की शानो अ़ज़मत और क़ुरबानियों को याद दिलाता है। आज से सदियों पहले इक्सठ (61) हिजरी को तारीख़े इस्लाम में ह़क़ व बात़िल के दरमियान एक अ़ज़ीम मारिका पेश आया, जिसे **वाक़िअए करबला** के नाम से याद किया जाता है।

सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ज़ात दीगर हज़ारों औसाफ़े कमालात के साथ साथ **"करम नवाज़ी"** के वस्फ़ से भी मौसूफ़ थी यहां तक कि मैदाने करबला में जब दुश्मन जान लेने को तुला हुवा था, उस वक़्त भी आप ने जो ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया उस का एक एक लफ़्ज़ आप की करम नवाज़ी की झलक दिखाता है। मैदाने करबला में हुज्जत पूरी करने के लिए ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घोड़े पर सुवार हो कर यज़ीदी लश्कर का रुख़ किया और उन से ख़ित़ाब फ़रमाया :

ऐ लोगो ! मेरी बात सुनो और जल्द बाज़ी का मुज़ाहरा न करो, ह़त्ता कि मैं तुम्हें उस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त न कर लूं कि जो मुझ पर लाज़िम हो चुका है और अपने आने का सबब बयान न कर लूं।

पस अगर तुम मेरा सबब क़बूल कर लो, मेरी बात की तस्दीक़ करो और मेरे बारे में इन्साफ़ से काम लो तो तुम इस मुआ़मले में बा मुराद हो जाओगे और तुम से मेरे मुतअ़ल्लिक़ कोई मुवाख़ज़ा (यानी सुवाल) भी न होगा।

हां ! अगर तुम मेरी बात नहीं मानते तो सुनो ! फिर येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

فَاَجْمِعُوْۤا اَمْرَكُمْ وَ شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا یَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَیْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَیَّ وَ لَا تُنْظِرُوْنِ(۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो मिल कर काम करो और अपने झूटे माबूदों समेत अपना काम पक्का कर लो फिर तुम्हारे काम में तुम पर कुछ गंजलक न रहे फिर जो हो सके मेरा कर लो और मुझे मोहलत न दो।(1)

اِنَّ وَلِیِّیَ اللّٰهُ الَّذِیْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۚ وَ هُوَ یَتَوَلَّى الصّٰلِحِیْنَ(۱۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मेरा वाली अल्लाह है जिस ने किताब उतारी और वोह नेकों को दोस्त रखता है।(2)

इन आयात की तिलावत के बाद आप ने अल्लाह पाक की ह़म्दो सना करने के बाद (उन यज़ीदियों से) फ़रमाया :

तुम लोग मेरी निस्बत के बारे में ग़ौर कर लो कि मैं कौन हूं...? क्या तुम्हारे लिए मेरा क़त्ल जाइज़ व दुरुस्त है...? क्या मैं तुम्हारे नबी का नवासा नहीं...? क्या सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे वालिद के चचा नहीं...? क्या ह़ज़रते सय्यिदुना जाफ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे चचा नहीं...? क्या तुम तक मेरे और मेरे भाई से मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इरशाद न पहुंचा था कि तुम दोनों नौ जवानाने जन्नत

के सरदार हो...? तो अगर तुम मेरी बात की तस्दीक़ करो (तो सुन लो) कि येही हक़ है, क्यूंकि मैं ने उस वक़्त से झूट नहीं बोला, जब से मुझे मालूम हुवा है कि झूट अल्लाह पाक को सख़्त नापसन्द है और अगर तुम मुझे झुटलाते हो तो ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, अबू सईद, सहल बिन सअ़्द, ज़ैद बिन अर्क़म या अनस (رضی اللہ عنہم اجمعین) से पूछ लो, क्यूंकि उन सब ने रसूलुल्लाह صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم से (मेरे मुतअ़ल्लिक़) येह फ़ज़ाइल सुन रखे हैं। क्या मेरी इस नसीह़त में तुम्हारे लिए कोई ऐसी बात नहीं जो तुम्हें मेरा ख़ून बहाने से रोक सके...?

फिर आप ने फ़रमाया : अगर तुम्हें मेरी बात में या मेरे मुतअ़ल्लिक़ नबी का नवासा होने में कोई शक हो तो ख़ुदा की क़सम ! मशरिक़ो मग़रिब में मेरे सिवा तुम में या तुम्हारे सिवा किसी और क़ौम में कोई नबी का नवासा मौजूद नहीं। ज़रा बताओ तो सही ! क्या तुम्हें मुझ से अपने किसी मक़्तूल का बदला त़लब करना है या मैं ने तुम्हारा माल ज़ाएअ़ कर दिया है कि उस के बदले माल चाहते हो या फिर अपने ज़ख़्मियों का क़िसास दरकार है (आख़िर किस चीज़ का बदला चाहते हो)...?

वोह बदबख़्त ख़ामोश रहे, आप ने फ़रमाया : ऐ शबस बिन रिब्ई, ऐ ह़ज्जार बिन अबजर, ऐ क़ैस बिन अश्अ़स, ऐ ज़ैद बिन ह़ारिस ! क्या तुम लोगों ने ही मुझे ख़ुत़ूत़ भेज कर नहीं बुलवाया था ?

वोह साफ़ मुकर गए और बोले : हम ने तो ऐसा नहीं किया था।

आप ने फ़रमाया : क्यूं नहीं, ख़ुदा की क़सम ! तुम ही लोगों ने तो ऐसा किया था। फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! अगर तुम मेरी बैअ़त करना पसन्द नहीं करते तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी मह़फ़ूज़ जगह चला जाऊं।

बद नसीब क़ैस बिन अश्अ़स बोला : आप इब्ने ज़ियाद के हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म कर लें (तो आप को छुटकारा मिल सकता है)

आप ने फ़रमाया : अल्लाह पाक की क़सम ! मैं हरगिज़ उस की बैअ़त नहीं करूंगा। अल्लाह के बन्दो ! मैं अपने और तुम्हारे रब्बे करीम की पनाह लेता हूं, इस से कि तुम मुझे संगसार करो। मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं, हर उस मुतकब्बिर से जो ह़िसाब के दिन पर यक़ीन नहीं रखता।(3)

बदबख़्त यज़ीदियों ने नवासए मुस्त़फ़ा के इस करीमाना ख़ित़ाब का जवाब सख़्त अज़िय्यतें और तक्लीफ़ें पहुंचा कर दिया, मगर आप को मुसीबतों का हुजूम ह़क़ से न हटा सका और आप के अ़ज़्म व इस्तिक़लाल में कोई कमी न आई, ह़क़ व सदाक़त का ह़ामी मुसीबतों की भयानक घटाओं से न डरा और तूफ़ाने बला के सैलाब से उस की साबित क़दमी में कोई फ़र्क़ न आया, दीन का शैदाई दुन्या की आफ़तों को ख़याल में न लाया।

अगर आप यज़ीद की बैअ़त करते तो वोह तमाम लश्कर आप के क़दमों में होता, आप का एह़तिराम किया जाता, ख़ज़ानों के मुंह खोल दिए जाते और दौलते दुन्या क़दमों पर लुटा दी जाती, मगर जिस का दिल हुब्बे दुन्या से ख़ाली हो और दुन्या की नापाइदारी का राज़ जिस पर वाज़ेह़ हो, वोह दुन्या के नुमाइशी रंगो रूप पर क्या नज़र डाले।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने राह़ते दुन्या पर ठोकर मार दी और राहे ह़क़ में पहुंचने वाली मुसीबतों का ख़ुशदिली से इस्तिक़बाल किया और इस क़दर आफ़तों और बलाओं के बा वुजूद यज़ीद जैसे फ़ासिक़े मोलिन (यानी एलानिया गुनाह करने वाले) शख़्स की बैअ़त का ख़याल भी अपने क़ल्बे मुबारक में न आने दिया, अपना सब कुछ क़ुरबान कर देना मन्ज़ूर किया, मगर मुसलमानों की तबाही व बरबादी गवारा न फ़रमाई और इस्लाम की इ़ज़्ज़त पर ह़र्फ़ नहीं आने दिया, ख़ुदा की क़सम ! मैदाने करबला में करबला वालों का इस्लाम की ख़ात़िर अपनी जानों का नज़राना पेश करना, रहती दुन्या के मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी करम नवाज़ी थी। इस के इ़लावा भी इन ह़ज़रात के किरदार के बहुत से पहलू मुसलमानों के लिए क़ाबिले तक़्लीद नमूना हैं। अल्लाह करीम हमें दीन की ख़ात़िर हर त़रह़ की क़ुरबानी देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) پ11، یونس:71 (2) پ9، الاعراف:196 (3) الکامل فی التاریخ، 3/418، 419 ملتقطاً وملخصاً۔

नए लिखारी
(New Writers)

हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुरआनी सिफ़ात

मुहम्मद मुबश्शिर अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़
(दर्जए राबिआ़ जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म)

अल्लाह पाक ने इन्सानों की तख़्लीक़ फ़रमाई और उन की हिदायत व रहनुमाई के लिए वक़्तन फ़वक़्तन अम्बिया व रुसुल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मबऊ़स फ़रमाए जिन्हों ने इन्सानिय्यत को अल्लाह पाक की बारगाह में सर निगूं किया और उन के ज़ाहिरो बातिन को हर त़रह़ की आलूदगियों से पाक फ़रमाया येह सब अल्लाह पाक के मुक़र्रब व मुअ़ज़्ज़ज़ बन्दे थे जिन का तज़्किरए ख़ैर आंखों की जिला (रौशनी) और क़ल्ब व अज़्हान की इस्लाह़ का बाइ़स है। चुनान्चे इन मुबारक हस्तियों में से एक ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام भी हैं। इन का तज़्किरए ख़ैर पढ़िए और क़ुलूब व अज़्हान को मुअ़त्त़र कीजिए।

मुबारक नाम : आप عَلَیْہِ السَّلَام का मुबारक नाम यूसुफ़ है, ह़ज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام के फ़रज़न्द और ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ السَّلَام के पोते हैं। अल्लाह पाक ने आप عَلَیْہِ السَّلَام को मुतअ़द्दद औसाफ़ो कमालात से नवाज़ा जिन का ज़िक्र क़ुरआने करीम में भी फ़रमाया, आप भी चन्द औसाफ़ पढ़िए और इल्मो अ़मल में इज़ाफ़ा कीजिए।

1 इल्मो ह़िक्मत अ़त़ा होना : आप عَلَیْہِ السَّلَام का एक वस्फ़ येह है कि अल्लाह पाक ने आप को इल्मो ह़िक्मत, दीन की फ़क़ाहत अ़त़ा फ़रमाई जैसा कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿اٰتَیْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने उसे हुक्म और इल्म अ़त़ा फ़रमाया। (پ12، یوسف:22)

2 ख़्वाबों की ताबीर का इल्म : अल्लाह पाक ने आप عَلَیْہِ السَّلَام को ख़्वाबों की ताबीर का इल्म अ़त़ा फ़रमाया, आप عَلَیْہِ السَّلَام से जब कभी भी ख़्वाब बयान किया जाता तो फ़ौरन उस की ताबीर बयान फ़रमा देते जैसा कि क़ुरआने पाक में इरशाद होता है :

﴿وَعَلَّمْتَنِیْ مِنْ تَاْوِیْلِ الْاَحَادِیْثِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और मुझे ख़्वाबों की ताबीर निकालना सिखा दिया। (پ13، یوسف:101)

3 चुने हुए बन्दे : आप عَلَیْہِ السَّلَام का एक वस्फ़ येह है कि आप عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह पाक के शुक्र गुज़ार मुअ़ज़्ज़ज़ और चुने हुए बन्दे थे चुनान्चे अल्लाह पाक क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِیْنَ(۲۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह हमारे चुने हुए बन्दों में से है। (پ12، یوسف:24)

4 मुक़र्रब बन्दे : आप अल्लाह पाक के नेक, बरगुज़ीदा, प्यारे और मुक़र्रब बन्दे थे, क़ुरआने मजीद में है : ﴿وَ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन से मिला जो तेरे क़ुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं। (پ13، یوسف:101)

5 बादशाहत अ़ता होना : अल्लाह पाक ने आप عَلَیْہِ السَّلَام को इ़ल्मो हिक्मत के साथ बादशाहत और सल्तनत भी अ़ता फ़रमाई जैसा कि अल्लाह पाक क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَ كَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِیُوْسُفَ فِی الْاَرْضِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और यूंही हम ने यूसुफ़ को उस मुल्क पर क़ुदरत बख़्शी। (پ13، یوسف:56)

अल्लाह पाक हमें अम्बियाए किराम علیہمُ السّلام की सीरत का ज़ौक़ो शौक़ से मुत़ालआ़ करने की तौफ़ीक़ और हमें उन के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चुग़ली की मज़म्मत अह़ादीस की रौशनी में
मुह़म्मद उसामा अ़त्तारी
(दर्जए सादिसा जामिअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म)

चुग़ली अल्लाह व रसूल की ना फ़रमानी और नाराज़ी का सबब है। चुग़ली जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुग़ली बन्दों के हुक़ूक़ ज़ाएअ़ करने का सबब है। अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! आज हमारे मुआ़शरे में चुग़ली का मरज़ आ़म है। बद क़िस्मती से बाज़ लोगों में येह मरज़ इतना बढ़ चुका है कि लाख कोशिश के बा वुजूद इस का इ़लाज नहीं हो पाता। आह ! अब हर त़रफ़ नफ़रतों की दीवारें क़ाइम हो चुकी हैं। लिहाज़ा अह़ादीसे मुबारका की रौशनी में चुग़ली की मज़म्मत के बारे में बयान किया जाएगा पढ़िए और इ़ल्मो अ़मल में इज़ाफ़ा कीजिए।

चुग़ली की तारीफ़ :

इमाम नववी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है : किसी की बात नुक़्सान पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना चुग़ली है। (عمدۃ القاری، 2/594، تحت الحدیث:216) चुग़ली की एक तारीफ़ येह भी है कि लोगों के दरमियान फ़साद डालने के लिए उन की बातें एक दूसरे को बताना।

(जहन्नम में ले जाने वाले आमाल, 2/99)

चुग़ली की मज़म्मत के बारे में 6 फ़रामीने मुस्त़फ़ा पढ़िए :

1 चुग़लख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा : चुग़लख़ोर जन्नत में दाख़िल न होगा। (بخاری، 4/115، حدیث:6056)

2 चुग़ली करना ईमान को ख़त्म कर देता है : ग़ीबत और चुग़ली ईमान को इस त़रह़ काट देती हैं जैसे चरवाहा दरख़्त को काट देता है।

(الترغیب والترھیب، 3/332، حدیث: 7352)

3 अल्लाह पाक का ना पसन्दीदा : अल्लाह के बदतरीन बन्दे वोह हैं जो चुग़ली से चलें, दोस्तों के दरमियान जुदाई डालने वाले और पाक लोगों में ऐ़ब ढूंडने वाले। (मिरआतुल मनाजीह, 6/484, 485)

4 बरोज़े क़ियामत कुत्ते की शक्ल में : मुंह पर बुरा भला कहने वालों, पीठ पीछे ऐ़ब जोई करने वालों, चुग़ली खाने वालों और बे ऐ़ब लोगों में ऐ़ब तलाश करने वालों को अल्लाह पाक (क़ियामत के दिन) कुत्तों की शक्ल में जमअ़ फ़रमाएगा।

(जहन्नम में ले जाने वाले आमाल, 2/94)

5 क़ब्र में अ़ज़ाब : चुग़लख़ोर को आख़िरत से पहले उस की क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाएगा। (دیکھئے: بخاری، 1/95، حدیث: 216) रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बार दो क़ब्रों के क़रीब से गुज़रे तो आप ने फ़रमाया : इस वक़्त येह दोनों क़ब्र वाले अ़ज़ाब में मुब्तला हैं, हालांकि जिस वजह से अ़ज़ाब में मुब्तला हैं वोह ब ज़ाहिर कोई ख़ास बहुत बड़ी वजह नहीं है इन में से एक शख़्स तो इस लिए अ़ज़ाब में मुब्तला है कि चुग़लियां किया करता था, जब कि दूसरा शख़्स पेशाब (के छींटों) से बचने का एहतिमाम नहीं किया करता था। (بخاری، 1/96، حدیث: 218)

6 बदतरीन ह़राम चीज़ : क्या मैं तुम्हें येह न बताऊं कि बद तरीन ह़राम क्या है ? येह चुग़ली है जो लोगों की ज़बान पर रवां हो जाती है। (مسلم، ص1077، حدیث:6636)

अल्लाह पाक से दुआ़ है कि हमें चुग़ली खाने और इस जैसी दीगर बात़िनी बीमारियों से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

हरमे मदीना के हुक़ूक़

कलीमुल्लाह चिश्ती अत्तारी
(दर्जए सादिसा जामिअतुल मदीना फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म)

जिस तरह मदीनए मुनव्वरा का मक़ामो मर्तबा बहुत बुलन्दो बाला है इसी तरह हरमे मदीना के बहुत फ़ज़ाइल हैं हरमे मदीना भी शहरे मदीना के अन्दर ही है येह वोह जगह है जिस को नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हरम यानी हुर्मत व इज़्ज़त वाली जगह क़रार दिया है। बुख़ारी शरीफ़ में है : मदीनए मुनव्वरा ईर पहाड़ से सौर पहाड़ तक हरम है। (بخاری،4/323،حدیث:6755) इस के हुक़ूक़ की पासदारी व निगहबानी के लिए बहुत मोहतात रहना पड़ेगा वगर्ना छोटी सी ग़फ़लत के सबब बहुत बड़े ख़सारे का सामना करना पड़ सकता है। आइए हरमे मदीना के हुक़ूक़ में से चन्द का मुतालआ कीजिए :

1 दरख़्त काटने की मुमानअत : हरमे मदीना के हुक़ूक़ में से येह भी है कि इस हुदूद में मौजूद दरख़्तों वग़ैरा को न काटा जाए क्यूंकि येह भी हरम है जिस तरह कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मदीना यहां से वहां तक हरम है लिहाज़ा इस के दरख़्त न काटे जाएं।

2 सब्र करना : मदीनए मुनव्वरा जिस तरह इतनी बरकतों रहमतों वाला मुक़द्दस शहर है इस में इन्सान क़ल्बी सुकून व इत्मीनान महसूस करता है वहीं अगर कोई आज़्माइश व परेशानी नेकियों में इज़ाफ़ा करने के लिए तशरीफ़ ले आए तो इस पर सब्र करने वाले के लिए बहुत बड़ी बिशारत है। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जो कोई मेरा उम्मती मदीने की तक्लीफ़ और सख़्ती पर सब्र करेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा।

(مسلم، ص548، حدیث:3339)

शहे कौनैन ने जब सदक़ा बांटा
ज़माने भर को दम में कर दिया ख़ुश

3 ऐब जोई न करना : मदीनए मुनव्वरा की हर चीज़ नफ़ीस व उम्दा व आला है इस में किसी ऐब व नुक़्स का शुबा तक नहीं, अगर बिलफ़र्ज़ तबई तौर पर कोई चीज़ पसन्द न आए तो इस में ऐब जोई की बजाए अपनी आंखों का धोका व अक़्ल की कमी समझे वगर्ना इस की बड़ी सख़्त सज़ा है। हज़रते इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मदीनए पाक की मुबारक मिट्टी को ख़राब कहने वाले के लिए 30 कोड़े लगाने और क़ैद में डाले जाने का फ़तवा दिया। (الشفاء،2/57)

जिस ख़ाक पे रखते थे क़दम सय्यिदे आलम
उस ख़ाक पे क़ुरबां दिले शैदा है हमारा

4 तक्लीफ़ न पहुंचाना : हरमे मदीना के हुक़ूक़ में से येह भी है कि वहां के रहने वालों से प्यार व महब्बत व हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आया जाए, उन को तक्लीफ़ पहुंचाना तो दूर की बात सिर्फ़ तक्लीफ़ पहुंचाने का इरादा करने वाले के लिए हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : अल्लाह तआला उसे इस तरह पिघला देगा जैसे नमक पानी में घुल जाता है। (مسلم، ص551، حدیث:3359)

5 यसरब कहने की मुमानअत : मदीनए मुनव्वरा को यसरब कहना जाइज़ नहीं क्यूंकि येह लफ़्ज़ इस शहरे मुक़द्दस के शायाने शान नहीं जिस तरह के हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : जिस ने मदीना को यसरब कहा उसे चाहिए कि वोह अल्लाह पाक की बारगाह में इस्तिग़फ़ार करे क्यूंकि मदीना ताबा है, ताबा है।

(مسند احمد،30/483، حدیث:18519۔ بخاری،1/616، حدیث:1867)

इस के इलावा भी हरमे मदीना के बहुत सारे हुक़ूक़ व आदाब हैं मसलन वहां फ़ुज़ूलिय्यात व लग़्विय्यात से बचना, आवाज़ को पस्त रखना, हमेशा ज़बान को दुरूदे पाक से तर रखना, वहां ज़ियादा अर्सा क़ियाम न करना वग़ैरा। इसी तरह जब हरमे मदीना आए तो हो सके तो पैदल, रोते हुए, सर झुकाए, नीची नज़रें किए चलिए।

हरम की ज़मीं और क़दम रख के चलना
अरे सर का मौक़अ़ है ओ जाने वाले

अल्लाह पाक हम सब को बार बार हाज़िरिए मदीना की सआदत अता फ़रमाए और हरमे मदीना के तक़द्दुस व हुक़ूक़ की पासदारी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

मुसाफ़हे की सुन्नत

हमारे प्यारे और आख़िरी नबी हज़रते मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : تَصَافَحُوا यानी आपस में मुसाफ़हा करो।(1)

सलाम व मुलाक़ात के वक़्त दोनों हाथ मिलाने को मुसाफ़हा कहते हैं।

हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात और सीरत से हमें आपस में प्यार व महब्बत से ज़िन्दगी गुज़ारने का दर्स मिलता है, आपस में प्यार व महब्बत की फ़ज़ा क़ाइम करने का एक ज़रीआ़ मुसाफ़हा भी है। मुसाफ़हा करने से रब की रह़मत नाज़िल होती है।(2) बुग़्ज़ो कीना ख़त्म होता है।(3) गुनाहों की मग़्फ़िरत होती है।(4) सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़हा किया करते थे(5) और सब से पहले यमन से आए हुए सह़ाबए किराम ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुसाफ़हा किया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की तारीफ़ फ़रमाई।(6)

प्यारे बच्चो ! आप भी इस सुन्नत पर अ़मल कीजिए और मुलाक़ात के वक़्त "السلام علیکم ورحمة الله وبرکاته" कहने के साथ साथ मुसाफ़हा भी करें, बाज़ बच्चे सिर्फ़ एक हाथ मिलाते हैं या सिर्फ़ उंगलियां ही मिलाते हैं, सुन्नत येह है कि दोनों हाथों से मुसाफ़हा करते हुए हथेलियां आपस में मिल जाएं और हाथों में कोई चीज़ कपड़ा (क़लम, काग़ज़, चाबी) वग़ैरा न हो।(7)

अल्लाह पाक हमें मुसाफ़हे की सुन्नत के साथ साथ दीगर सुन्नतों पर भी अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(1) مؤطا امام مالک، 2/407، حدیث: 1731 (2) دیکھئے: معجم اوسط، 5/379، حدیث:7672 (3) موطا امام مالک، 2/407، حدیث: 1731 (4) دیکھئے: مشکاۃ المصابیح، 2/169، حدیث:4679 (5) دیکھئے: مراٰۃ المناجیح، 6/355 (6) دیکھئے: ابو داؤد، 4/453، حدیث:5213 (7) دیکھئے: ردالمحتار، 9/629۔

हुरूफ़ मिलाइए !

ا	ز	ہ	ہ	ن	ی	ز	و	ر
ع	ف	ہ	ی	ف	ط	ص	م	ل
ظ	ز	د	ی	ا	ا	ع	ب	ع
م	ح	ی	ب	س	ت	ک	ر	ب
ہ	چ	ت	ب	س	ن	ج	ا	ح
ر	ل	س	ت	غ	ف	ن	م	ش
ح	د	ی	ع	ف	د	و	ح	ف
ی	ل	ی	ر	ب	ا	ر	ق	ح
ر	ک	ذ	س	ر	م	ی	ع	ج

इस्लामी साल का पहला महीना मुह़र्रमुल ह़राम है। इस महीने को बहुत सारी निस्बतें ह़ासिल हैं जिन में से एक येह कि इस महीने की 14 तारीख़ को मुफ़्तिए आज़मे हिन्द, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान नूरी रज़वी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का विसाले बा कमाल हुवा है। मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के छोटे बेटे हैं, उन की विलादत 22 ज़ुल ह़िज्जा 1310 हिजरी को बरेली शरीफ़ में हुई। (जहाने मुफ़्तिए आज़म, स. 64) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में आप के मुर्शिदे गिरामी ने बिशारत देते हुए फ़रमाया था : येह बच्चा दीनो मिल्लत की बड़ी ख़िदमत करेगा और मख़्लूक़े ख़ुदा को इस की ज़ात से ख़ूब फ़ैज़ पहुंचेगा। (तजल्लियाते ख़ुलफ़ाए आला ह़ज़रत, स. 117)

प्यारे बच्चो ! आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिलाकर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़े "निस्बत" तलाश कर के बताया गया है। तलाश किए जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं :

1 मुस्त़फ़ा 2 आ़ज़म 3 बरेली 4 नूरी 5 अ़रस।

खजूर के दरख़्त साल भर में फलदार

प्यारे बच्चो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात की वजह से बहुत मरतबा लोगों की मुश्किलात दूर हो जाया करती थीं, आज ऐसे ही मोजिज़े के बारे में सुनेंगे जिस का तअ़ल्लुक़ मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की आज़ादी से है, वैसे तो आप आज़ाद ही थे मगर कुछ लोगों ने ज़बरदस्ती उन्हें ग़ुलाम बना कर यहूदी को बेच दिया था, आप फ़रमाते हैं कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : अपने मालिक से अ़क़्दे किताबत (यानी माल के बदले अपनी आज़ादी का सौदा) कर लो, तो मैं ने मालिक की ज़मीन में खजूर के 300 दरख़्त उगा कर फलदार होने तक देख भाल करने और 40 औक़िया[1] चांदी देने पर आज़ादी का सौदा कर लिया, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबा से फ़रमाया : अपने भाई की मदद करो, तो उन्हों ने अपनी इस्तिता़अ़त के मुता़बिक़ 10,15,20,30 पौदे दे दे कर मेरी मदद की, 300 पौदे जम्अ़ होने पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जाओ ! उन के लिए खुदाई कर के मेरे पास आना, येह पौदे मैं ख़ुद उगाऊंगा, मैं ने कुछ साथियों की मदद से खुदाई की और बारगाहे रिसालत में आ कर बताया तो करीम आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे साथ गए और तमाम पौदे ख़ुद लगाए, बस एक पौदा ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने लगाया था, लिहाज़ा उस एक के सिवा बाक़ी सब उसी साल फलदार दरख़्त बन गए, उसे भी नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उखाड़ कर लगाया तो वोह भी उसी साल फलदार हो गया । अब माल अदा करना बाक़ी था, तो बारगाहे रिसालत में मुर्ग़ी के अन्डे बराबर सोना पेश किया गया तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे बुलवा कर फ़रमाया : येह लो ! और इस से अपने ऊपर वाजिबुल अदा माल अदा कर दो, मैं ने अ़र्ज़ की : येह कहां पूरा होगा । तो फ़रमाया : ले लो ! अल्लाह पाक इसी से तुम्हारी पूरी अदाएगी करवा दे, मैं ने ले कर तोला तो ब ख़ुदा वोह पूरे चालीस औक़िया था, लिहाज़ा मैं अपने मालिकान को अदाएगी कर के आज़ाद हो गया ।

(دیکھئے: مسند احمد، 39/146، حدیث:23737- مستدرک، 2/310، حدیث:2229)

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लगाए हुए खजूर के पौदों का सिर्फ़ एक साल में फलदार दरख़्त बन जाना यक़ीनन अ़ज़ीम मोजिज़ा है ।

यहां चन्द बातें हमें सीखने को मिलती हैं :

- इन्सान को चाहिए कि मुश्किलात का सब्र व इस्तिक़ामत से मुक़ाबला करने के साथ साथ उन से निकलने की सूरत तलाश करे ।
- मुसीबत ज़दा को अच्छा मश्वरा और ह़ौसला देना चाहिए ।
- ख़ुशियों के इलावा अपनों के दुख भी बांटने चाहिएं ।
- असरो रुसूख़ वालों (Influencers) को चाहिए कि लोगों को परेशान ह़ाल की मदद पर आमादा करें ।
- ह़ाकिम व सरदार और बड़ों को छोटे की दिलजोई की ख़ातिर उन के मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में शामिल होना चाहिए ।
- किसी काम का आग़ाज़ करें तो उसे मुकम्मल ज़रूर करें ।
- काम आपस में बांटना आसानी और फ़ाइदे का सबब होता है ।
- किसी काम के आग़ाज़ व इफ़्तिताह़ में बुज़ुर्गों का शामिल होना उन कामों के अन्जाम के लिए बाइ़से बरकत हुवा करता है ।
- अल्लाह पाक और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भरोसा करने वाला ब ज़ाहिर ख़ाली हाथ ही क्यूं न हो मगर उसे बहुत कुछ ह़ासिल हो जाता है ।

(1) चालीस दिरहम को एक औक़िया का नाम दिया जाता था ।

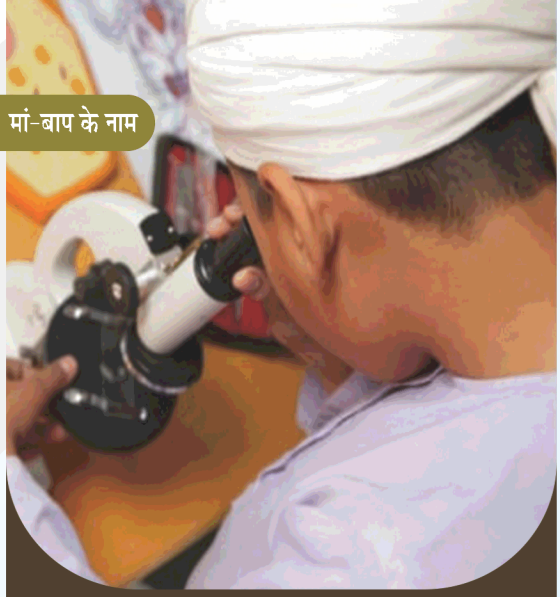

वालिदैन के काम

वालिदैन और बच्चों का एक अ़ज़ीम तअ़ल्लुक़ है । यहां बच्चों के ह़वाले से वालिदैन की जो बुन्यादी ज़िम्मेदारियां हैं वोह बयान की जा रही हैं ताकि वालिदैन को आगाही ह़ासिल हो और ज़िम्मेदारियों का एह़सास भी ।

परवरिश (Nurturing) वालिदैन की अहम ज़िम्मेदारी बच्चों की जिस्मानी और जज़्बाती परवरिश करना है । बच्चों की बुन्यादी ज़रूरिय्यात जैसे ख़ूराक, रिहाइश और प्यार को पूरा करना वग़ैरा भी वालिदैन की बुन्यादी ज़िम्मेदारियों में शामिल हैं ताकि वोह एक मह़फ़ूज़ और मुआ़विन माह़ौल में परवरिश पा कर परवान चढ़ सकें ।

राहनुमाई (Guidance) वालिदैन को चाहिए कि अपने बच्चों की ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ मराह़िल में राहनुमाई, मश्वरे देने, ह़ुदूद तै करने और इक़्दार व अख़्लाक़ की तालीम देने में भी अपना किरदार अदा करते रहें । येह राहनुमाई बच्चों को ग़लत़ से सह़ीह़ सीखने और ज़िम्मेदार बनने में मददगार होगी ।

नज़्मो ज़ब्त़ (Discipline) वालिदैन की एक अहम ज़िम्मेदारी येह भी है कि वोह बच्चों को नज़्मो ज़ब्त़ सिखाएं । उन्हें दूसरों के साथ ख़ुश उस्लूबी से पेश आने और मुआ़शरे में जीने वग़ैरा के उसूल से आगाह करें ।

तालीम (Education) वालिदैन की येह ज़िम्मेदारी भी है कि वोह बच्चों को तालीम ह़ासिल करने के मवाक़ेअ़ फ़राहम करें । उन की फ़िक्री नशो नुमा और मुस्तक़्बिल के तअ़य्युन और तरक़्क़ी की राह पर गामज़न होने के लिए एज्यूकेशन के ह़ुसूल के वसाइल व ज़राएअ़ और माह़ौल फ़राहम करें । बच्चों की स्कूलिंग, होम वर्क में मदद करना, असातिज़ा के साथ बात चीत करना और शोबए तालीम का तअ़य्युन करना वालिदैन की ड्यूटी में शामिल है ।

जज़्बाती मदद (Emotional support) वालिदैन से ज़ियादा बच्चों के जज़्बात कोई भी नहीं जांच सकता । चुनान्चे वालिदैन बच्चों के जज़्बात को समझकर उन्हें अपने ख़ूनी रिश्तों, मज़ह़बी वाबस्तगी और मुआ़शरती तअ़ल्लुक़ दारी के बारे में ज़रूर आगाही दें । बच्चों के एह़सासात और जज़्बात पर भरपूर तवज्जोह रखें ।

ह़ौसला अफ़ज़ाई (Encouragement) वालिदैन की ज़िम्मेदारी है कि अपने बच्चों को अपनी दिलचस्पियां तलाश करने, अपने अहदाफ़ ह़ासिल करने और ख़ुद पर यक़ीन करने की तरग़ीब दिलाएं । ह़ौसला अफ़ज़ाई भी करते रहें कि येह बच्चों की ख़ुद एतेमादी को बढ़ाती है, उन्हें रुकावटों पर क़ाबू पाने और अपनी सलाह़िय्यतों तक पहुंचने के लिए बा इख़्तियार बनाती है ।

मिसालें क़ाइम करना (Setting examples) वालिदैन अपने बच्चों के लिए रोल मॉडल के तौर पर काम करते हैं, लिहाज़ा उन्हें चाहिए कि बच्चों को ज़िन्दगी के नशेबो फ़राज़ सिखाने के लिए अपने किरदार की मिसालें क़ाइम करें ।

येह बातें वालिदैन और बच्चों के तअ़ल्लुक़ से बुन्यादी हैं जिन का जानना हमारे लिए और हमारी नस्लों के लिए बहुत फ़ाइदेमन्द साबित हो सकता है । वालिदैन को चाहिए कि अपनी ज़िम्मेदारी को समझ कर अपनी औलादों की तामीर करें ।

दोस्ती का दिन

स्कूल में गर्मियों की छुट्टियां होने की वजह से समर कैम्प लगे हुए थे, बच्चे उ़मूमन घरेलू कपड़ों में ही आते थे और पढ़ाई के साथ साथ दीगर मुफ़ीद Activities भी जारी रहती थीं इन सब के बा वुजूद आज स्कूल के बच्चों में मामूल से ज़ियादा गहमा गहमी थी। छटी क्लास के इन्चार्ज सर बिलाल रज़ा थे, आज जैसे ही वोह क्लास रूम में दाख़िल हुए तो बच्चे ख़ुश गप्पियों में मगन थे जो सर को आते देख कर फ़ौरन अदब से खड़े हो गए। सर ने मुस्कुराते हुए बच्चों को सलाम किया और बच्चों के जवाब देने के बाद वोह उन के साथ साथ ख़ुद भी दुरूद शरीफ़ पढ़ने लगे।

सर बिलाल एक सीनियर टीचर थे, वैसे मज़मून (Subject) तो उन का इस्लामिय्यात था लेकिन ऐसा लगता था हर मौज़ूअ़ पर दुन्या जहान की किताबें पढ़ रखी हैं, उन की एक बात सभी को बहुत अच्छी लगती थी बल्कि देखा देखी तो अब दूसरे असातिज़ा भी फ़ोलो कर रहे थे, वोह बात येह कि सर बिलाल जिस भी क्लास में पीरियड पढ़ाने जाते तो उस की इब्तिदा दुरूद शरीफ़ से करवाते, सारे बच्चे सर बिलाल के साथ बा अदब खड़े हो कर तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ते उस के बाद पढ़ाई शुरूअ़ होती थी।

बच्चो ! किस बात की ख़ुशियां मनाई जा रही हैं ? दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बाद बच्चे अपनी अपनी जगहों पर बैठ गए तो सर बिलाल ने मुख़्तलिफ़ डेस्कों पर रखे गिफ़्ट बोक्सिज़ की त़रफ़ इशारा करते हुए पूछा।

क्लास मोनीटर मुहम्मद मुआ़विया बोले : सर आज Friendship Day है ना तो हम लोग अपने दोस्तों के लिए गिफ़्टस लाए हैं।

सर आप के भी दोस्त हैं क्या, दोस्ती का दिन नहीं मनाते ? नोमान ने पूछा तो सर बिलाल कहने लगे : क्यूं नहीं बेटा ! मेरे भी दोस्त हैं और हर एक के होने भी चाहिएं क्यूंकि बड़े बुज़ुर्ग कहते हैं कि "तन्हा वोह है जिस का कोई दोस्त नहीं।" लेकिन हमें दोस्त बनाने से पहले येह सीखना चाहिए कि एक मुसलमान होने के नाते हमें कैसे दोस्त बनाने चाहिएं। पहले आप लोग मुझे बताएं कि आप अपने दोस्त में कौन सी ख़ूबियां देखना चाहते हैं ?

क्लास के एक ज़हीन बच्चे उसैद रज़ा ने अपना हाथ खड़ा किया और सर से इजाज़त मिलने पर कहा : सर मैं चाहता हूं मेरा दोस्त मत़लबी न हो।

बेहतरीन ख़ूबी ! सर बिलाल ने अपनी बात शुरूअ़ की : आप को पता है ना मुसलमानों के छटे ख़लीफ़ए राशिद थे ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه आप बड़े ज़हीन और इन्साफ़ करने वाले हुक्मरान थे, आप फ़रमाते हैं : "मत़लब परस्त लोगों को दोस्त न बनाओ क्यूंकि मत़लब पूरा होते ही उन की

महब्बत दम तोड़ जाती है।"[1]

क्लास मोनीटर नोमान इजाज़त मिलने पर बोले : सर मेरा दोस्त झूटा न हो।

सर बिलाल : बच्चो ! हम में से कौन है जिस ने इमाम ज़ैनुल आबिदीन का नाम न सुना होगा, आप ने अपने बेटे को पांच क़िस्म के लोगों से दोस्ती करने से मनअ़ किया था : 1 फ़ासिक़ 2 कन्जूस 3 रिश्तेदारी तोड़ने वाला 4 बे वुक़ूफ़ 5 झूटा । इमाम ज़ैनुल आबिदीन ने झूटे से दोस्ती न करने की वजह ख़ुद ही अपने बेटे को येह बताई कि "ऐसा शख़्स सराब की त़रह़ होता है।" यानी धोका देता है।[2]

अच्छा बच्चो येह तो आप की पसन्द थी लेकिन इस्लाम हमारे लिए कैसे दोस्त पसन्द करता है, आइए मैं आप को बताता हूं : सब से पहले तो दोस्त बनाते हुए ख़याल रखना चाहिए कि किसी ऐसे शख़्स को दोस्त न बनाएं जो अल्लाह व रसूल से दूर कर दे और ईमान का दुश्मन हो वरना ख़ुदा न ख़्वास्ता बरोज़े क़ियामत अफ़्सोस के साथ उंगलियां चबाते हुए कहना पड़ सकता है : "हाए मेरी बरबादी ! ऐ काश कि मैं ने फ़ुलां को दोस्त न बनाया होता ।"[3] और आप को पता है नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कैसे शख़्स को दोस्त बनाने की नसीह़त की है : जो अल्लाह को याद करने में आप का मददगार हो और जब आप अपने रब को भूल जाएं तो वोह आप को याद दिला दे ।[4] लिहाज़ा बच्चो वफ़ादार, मुख़्लिस और नेक लोगों को दोस्त बनाना चाहिए और फिर सर ने मुस्कुराते हुए कहा : सब से अहम बात पहले हमें ख़ुद नेक, वफ़ादार और मुख़्लिस बन जाना चाहिए ताकि हमें न सही किसी और को तो अच्छा दोस्त मिल जाएगा। सर की आख़िरी बात पर सभी बच्चे मुस्कुरा उठे।

---

(1) حلیۃ الاولیاء، 5/377، رقم:7466 (2) البدایہ والنہایہ، 6/232 (3) پ19، الفرقان:28 (4) احیاء العلوم، 1/108۔

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिए कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिए 6 नाम, इन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिए	माना	निस्बत
मुह़म्मद	अ़ब्दुल वाहिद	ज़ातो सिफ़ात में यक्ता का बन्दा	अल्लाह पाक के सिफ़ाती नाम की त़रफ़ लफ़्ज़ "अ़ब्द" की इज़ाफ़त के साथ
मुह़म्मद	जव्वाद	सख़ी	अल्लाह के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुह़म्मद	यूनुस	उन्स वाले	अल्लाह के नबी عَلَيْهِ السَّلَام का बा बरकत नाम

बच्चियों के 3 नाम

हुमैरा	सुर्ख़ रंग की	उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का लक़ब
सीमा	निशान वाली, अ़लामत वाली	सह़ाबिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बा बरकत नाम
मरयम	इबादत गुज़ार ख़ातून	ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम

(जिन के यहां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

बेटियों की तरबिय्यत

बेटियों को सलीक़ा मन्दी सिखाएं

बेटियां अल्लाह पाक की रहमत और मां बाप की इ़ज़्ज़तो हुर्मत की पास्बान होती हैं। मां बाप बेटियों को अ़ज़ीज़ रखते हैं, बहुत नाज़ों से पालते हैं इस एह़सास के साथ उन की परवरिश करते हैं कि बड़े होने के बाद उन बेटियों ने मां, बहू और सास की हैसिय्यत से ज़िम्मेदारी भी संभालनी है अ़क़्लमन्दी का तक़ाज़ा भी येही है कि बेटी की तरबियत इस अन्दाज़ से की जाए कि वोह अच्छी तरबियत और सलीक़ामन्दी के ज़रीए सुसराल में अपना मक़ाम बना सके।

इस तरबियत का आग़ाज़ इब्तिदाई उ़म्र से कर देना चाहिए। कि जिस त़रह़ शाख़ों की तराश ख़राश पौदों को हुस्न अ़त़ा करती है और अगर उन पर तवज्जोह न दी जाए, तो पौदे झाड़ झन्कार में तब्दील हो जाते हैं। अल्लाह तआ़ला ने जिन वालिदैन को अपनी रह़मत से नवाज़ा है, उन पर ज़िम्मेदारी आ़इद होती है कि अपनी बेटी की तरबियत इस नहज पर करें कि आने वाले कल में वोह एक बेहतरीन बहन, बीवी और मां बन सके।

बेटियों को बचपन से ही सफ़ाई सुथराई का आ़दी बनाना और चीज़ों को सलीक़े से उन की जगह पर रखना सिखाना चाहिए। बच्चों की अश्या की तरतीब सिखाइए मिसाल के त़ौर पर हर बच्चे से मुतअ़ल्लिक़ अश्या की जगहें मख़्सूस हों। लड़कों की चीज़ें अलग रखी जाएं और लड़कियों की अलग। उन्हें बताइए कि स्कूल यूनीफ़ॉर्म कहां रखना है, घर के कपड़ों की जगह कौन सी है इसी त़रह़ कभी कभार पहनने वाले या तक़रीबात के कपड़ों को अलग रखवाइए मौसिम की मुनासबत से भी कपड़े तरतीब दिए हों मसलन अगर गर्मियों का मौसम आ रहा है तो उस मौसम के कपड़े ज़ियादा सामने होने चाहिएं जो जूते इस्तिमाल न हो रहे हों उन्हें खुला न रखा जाए बल्कि पोलिश कर के ह़िफ़ाज़त के साथ उन की तै शुदा जगह पर ढक कर रखा जाए।

छोटी उ़म्र से ही बच्चियों को मेहमानों या बाहर के लोगों के सामने उठने बैठने, बोलने का त़रीक़ा सिखाना भी तरबियत का ह़िस्सा बनाइए। किस से हाथ मिलाना है किस से नहीं। इन की उ़म्र के लिह़ाज़ से ह़या के तक़ाज़े उन्हें सिखाते रहिए कि घर के मर्दों के सामने भी सिर झाड़ मुंह पहाड़ हुल्ये में न रहा जाए बल्कि तमीज़ के दाइरे में रहते हुए जो बे तकल्लुफ़ी की जा सकती है उस की ह़ुदूद उन्हें सिखाइए।

घर के काम काज में उन की दिलचस्पी पैदा करें बाज़ माएं अपनी बेटियों से येह सोच कर काम नहीं करवातीं कि उन्हें सुसराल जा कर येही सब करना है लेकिन बाद में एक साथ कई ज़िम्मेदारियां लड़की के लिए परेशानी का बाइस बन सकती हैं। तालीम के साथ साथ बेटियों में सलीक़ा और हुनर मन्दी का शौक़ भी पैदा करना चाहिए।

सदरुश्शरीआ़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : लड़की को भी अ़क़ाइद व ज़रूरी मसाइल सिखाने के बाद किसी औ़रत से सिलाई और नक़्शो निगार वग़ैरा ऐसे काम सिखाएं जिन की औ़रतों को अक्सर ज़रूरत पड़ती है और खाना पकाने और दीगर उमूरे ख़ानादारी (घर के कामों) में उस को सलीक़े होने (यानी तमीज़ सिखाने) की कोशिश करें कि सलीक़े वाली औ़रत जिस ख़ूबी से ज़िन्दगी बसर कर सकती है बद सलीक़ा नहीं कर सकती।

(बहारे शरीअ़त, 2/257)

अगर माएं चाहती हैं कि बेटी दूसरे घर जा कर ख़ुद भी सुख चैन से रहे तो उन्हें घरदारी, खाने पकाने की बेहतर तरबियत के साथ साथ सलीक़ामन्दी की चाश्नी से भी आश्ना करें।

अगर ऐसा हुवा तो यक़ीन जानिए कि आप की औलाद हर जगह अपना मक़ाम बनाने में कामयाब हो जाएगी लेकिन अगर त़र्ज़े अ़मल इस के मुख़ालिफ़ हुवा तो फिर औलाद और वालिदैन दोनों को परेशानी का सामना हो सकता है। बच्चों को मुआ़शरे का अच्छा और नेक मुसलमान बनाने के लिए ख़ुद भी दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल से वाबस्ता रहिए और अपने बच्चों को भी इस माह़ौल से वाबस्ता रखिए।

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 लड़की को कुरआने करीम के साए में रुख़्सत करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि शादियों के मौक़अ़ पर लड़की की रुख़्सती के वक़्त येह सूरत देखने में आती है कि लड़की के सर पर कुरआने पाक उठा कर उसे कुरआन के साए में रुख़्सत किया जाता है, येह अ़मल अज़ रूए शरअ़ दुरुस्त है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

कुरआने पाक बे शुमार फ़वाइदो बरकात को अपने दामन में लिए हुए है । जिस त़रह़ इस का पढ़ना, याद करना, सुनना, इस पर अ़मल करना और इस में ग़ौरो फ़िक्र करना हुसूले ख़ैरो बरकत का सबब है, यूंही कुरआने पाक का औराक़ पर मुश्तमिल नुस्ख़ा भी रह़मतो बरकत का ज़रीआ़ है, लिहाज़ा इस से बरकत ह़ासिल करना जाइज़ व मुस्तह़ब अ़मल है । रुख़्सती के वक़्त दुल्हन के सर पर कुरआने पाक उठा कर रुख़्सत करने से भी येही मक़्सूद होता है कि इस अ़मल से कुरआने पाक की बरकत ह़ासिल हो जाए, लिहाज़ा मज़्कूरा निय्यत से येह अ़मल जाइज़ व बाइ़से सवाब होगा, मगर इस के साथ चन्द उ़मूर ज़ेहन में रखना बहुत ज़रूरी है ।

1 मज़्कूरा सूरत में बा वुज़ू शख़्स कुरआने पाक को पकड़े या फिर बे वुज़ू होने की सूरत में किसी जुदागाना कपड़े या ग़िलाफ़ में पकड़े, क्यूंकि बे वुज़ू शख़्स का कुरआने पाक को छूना, जाइज़ नहीं ।

2 चूंकि मज़्कूरा अ़मल के ज़रीए कुरआने पाक से बरकत ह़ासिल करना मक़्सूद है, लिहाज़ा इस बात का ख़ास ख़याल रखा जाए कि गाने बाजे या आतिश बाज़ी वग़ैरा उ़मूरे मम्नूआ़ की कोई सूरत न हो क्यूंकि एक तो येह कुरआने मजीद की बे अदबी है और दूसरा येह बात हरगिज़ दुरुस्त नहीं कि एक त़रफ़ कुरआने करीम से बरकत ली जा रही हो और दूसरी जानिब कुरआने करीम के अह़काम की ही ना फ़रमानी की जाए । यूं तो कुरआने करीम पास न हो, उस वक़्त भी इन गुनाहों से बचना ज़रूरी है, मगर कुरआन की मौजूदगी में उस की अ़ज़मत व अहमिय्यत के पेशे नज़र ख़ास त़ौर पर इन से बचना ज़रूरी हो जाएगा ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 जुम्आ़ को ख़वातीन पहली अज़ान का जवाब दें या दूसरी ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले में कि जुम्आ़ को जो पहली अज़ान होती है तो ख़वातीन पहली वाली का जवाब देंगी या दूसरी का या दोनों का ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

ख़वातीन के लिए जुम्आ़ की अज़ाने अव्वल और सानी दोनों का जवाब देना मुस्तह़ब है ।

इस की तफ़्सील येह है कि अज़ाने अव्वल के जवाब का ह़ुक्म तो दीगर अज़ानों की त़रह़ है कि इन में बाहम कोई फ़र्क़ नहीं, रहा अज़ाने सानी का जवाब तो वोह सिर्फ़ मुक़्तदियों को मन्अ़ है इस के इलावा को नहीं ह़त्ता कि ख़ुद ख़त़ीब इस का जवाब दे सकता है, और ख़वातीन चूंकि जुम्आ़ के लिए नहीं आतीं बल्कि घरों में होती हैं तो इन के लिए इस अज़ान के जवाब की मुमानअ़त नहीं, बल्कि वोह इस का जवाब दे सकती हैं । अज़ाने सानी के जवाब देने की कराहत मुक़्तदियों के साथ ख़ास है और जो मुक़्तदी नहीं वोह जवाब दे सकता है ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दीनी त़लबा की हौ़सला शिकनी मत कीजिए !

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

इ़ल्मे दीन से मह़ब्बत रखने वाले और दावते इस्लामी से वाबस्ता होने वाले अपनी औलाद को दीनी तालीम दिलवाने की कोशिश और हौ़सला अफ़्ज़ाई करते हैं लेकिन मुआ़शरे के आ़म अफ़राद का बच्चों को दीनी तालीम दिलवाने का ज़ेहन बहुत कम होता है बल्कि अगर बच्चा दीनी माह़ोल मिलने के सबब दीनी तालीम के शौक़ में दर्से निज़ामी करना चाहे तो उसे बसा औक़ात इस त़रह़ के त़ाने मिलते हैं कि "क्या मौलवी बन कर मस्जिद की रोटियां तोड़ेगा ? आ़लिम बन कर खाएगा क्या ? M.A. कर या डॉक्टर या इन्जिनियर वग़ैरा बन ताकि अच्छा रोज़गार मिले।" येह बात सिर्फ़ त़ानों की ह़द तक नहीं रहती बल्कि बाज़ औक़ात दीनी तालीम से रोकने के लिए बा क़ाइदा ह़र्बे इख़्तियार किए जाते हैं मसलन अगर बेटा दर्से निज़ामी में दाख़िला ले लेता है तो अब उस से कमा कर लाने का मुत़ालबा किया जाता है ह़ालांकि घर में मआ़शी तंगी का सामना भी नहीं होता जबकि दूसरी त़रफ़ दुन्यवी तालीम दिलवाने के लिए पहले स्कूल में दस साल और फिर कॉलेज और यूनिवर्सिटी में कई कई साल जेब से पैसे दे कर पढ़ाते हैं। इस तालीमी अ़र्से में वालिदैन हर त़रह़ की सहूलत दे कर औलाद को तालीम के लिए बिलकुल फ़ारिग़ कर देते हैं। अगर अपना ज़ाती कारोबार हो तो उस में भी दख़्ल अन्दाज़ी से मन्अ़ करते हैं ताकि पढ़ाई में कोई ह़रज न हो ? यूं मुआ़शरे में दुन्यवी तालीम ह़ासिल करने वालों की ख़ूब हौ़सला अफ़्ज़ाई की जाती है। मुख़्तलिफ़ इदारों की त़रफ़ से उन त़लबा को स्कोलर शिप और नोकरियां दी जाती है। येही वजह है कि गली गली स्कूल खुले हुए हैं लेकिन दीनी जामिआ़त व मदारिस इस के मुक़ाबले में बहुत थोड़े हैं। वालिदैन से मेरी दर्द भरी गुज़ारिश है कि दुन्या ही सब कुछ नहीं, अस्ल आख़िरत है और आख़िरत में डॉक्टरियट या इन्जिनियरिंग किया हुवा बेटा काम नहीं आएगा बल्कि ह़ाफ़िज़े क़ुरआन या आ़लिमे दीन बेटा शफ़ाअ़त करेगा जैसा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के दिन आ़लिम व आ़बिद (यानी इ़बादत गुज़ार) को उठाया जाएगा। आ़बिद से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ जबकि आ़लिम से कहा जाएगा कि जब तक लोगों की शफ़ाअ़त न कर लो, ठहरे रहो। (شعب الایمان،2/268،حدیث:1717) येह कहना कि मौलवी बन कर खाएगा क्या ? येह मह़ज़ शैत़ानी वस्वसा है। अल्लाह पाक ने सब का रिज़्क़ अपने ज़िम्मए करम पर लिया हुवा है। और बेशक दीनी तालीम ह़ासिल करने वाले दुन्यवी तालीम वालों के मुक़ाबले में ज़ियादा पुर सुकून ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

लिहाज़ा अपनी आख़िरत को पेशे नज़र रखते हुए सारे ही बच्चों को आ़लिमे दीन और ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बनाने की कोशिश करनी चाहिए और अगर ऐसा मुमकिन न हो तो कम अज़ कम एक बच्चे को तो आ़लिमे दीन बनाने की ज़रूर कोशिश फ़रमाइए। अल्लाह पाक ने चाहा तो आ़लिम बनने वाला घर बल्कि सारे ख़ानदान वालों की बख़्शिश का ज़रीआ़ बन सकता है।

मक्तबतुल मदीना की किताबें घर बैठे ह़ासिल करने के लिए इस नम्बर 9978626025 पर Call SMS WhatsApp करें

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए़ माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाह़ी (Reformatory), फ़लाह़ी (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है

PRINTER, PUBLISHER, EDITOR AND OWNER

HAMJANI SHABBIRBHAI RAJAKBHAI - BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD - 380028. (GUJARAT)

PLACE OF PRINTING : MODERN ART PRINTERS - OPP : PATEL TEA STALL, DABGARWAD NAKA, DARIYAPUR, AHMEDABAD - 380001.

PLACE OF PUBLICATION : BUTVALA'S CHAWL, NR. CENTRAL WARE HOUSE, DANILIMDA, AHMEDABAD-380028. (GUJARAT) INDIA.